अंक 8 : अक्टूबर,2023
चौ-मासिक, बेंगलूरु

Azim Premji University

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी

लर्निंग कर्व

अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय का प्रकाशन

कहानी सुनाना शैक्षणिक दृष्टिकोण के रूप में

सम्पादन समिति

प्रेमा रघुनाथ, मुख्य सम्पादक
अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय,
सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे विलेज, बिक्कनाहल्ली मेन रोड,
सरजापुरा, बेंगलूरु, कर्नाटक - 562 125

prema.raghunath@azimpremjifoundation.org

शेफ़ाली त्रिपाठी मेहता, सह-सम्पादक
अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय,
सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे विलेज, बिक्कनाहल्ली मेन रोड,
सरजापुरा, बेंगलूरु, कर्नाटक - 562 125
shefali.mehta@azimpremjifoundation.org

चन्द्रिका मुरलीधर
अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय,
सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे विलेज, बिक्कनाहल्ली मेन रोड,
सरजापुरा, बेंगलूरु, कर्नाटक - 562 125

chandrika@azimpremjifoundation.org

निमरत खण्डपुर
अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय,
सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे विलेज, बिक्कनाहल्ली मेन रोड,
सरजापुरा, बेंगलूरु, कर्नाटक - 562 125
nimrat.kaur@azimpremjifoundation.org

सम्पादकीय कार्यालय
सम्पादक, अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी लर्निंग कर्व
अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय,
सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे विलेज, बिक्कनाहल्ली मेन रोड,
सरजापुरा, बेंगलूरु, कर्नाटक - 562 125
Phone : 080-6614 4900
Fax : 080-6614 4900
Email: publications@apu.edu.in
Website: www.azimpremjiuniversity.edu.in

शोभा लोकनाथन कवूरी
अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय,
सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे विलेज, बिक्कनाहल्ली मेन रोड,
सरजापुरा, बेंगलूरु, कर्नाटक - 562 125
shobh.kavoori@azimpremjifoundation.org

सलाहकार
हृदय कान्त दीवान, सचिन मुले
एस. गिरिधर, सुधीश वेंकटेश, उमाशंकर पेरिओडी

प्रकाशन समन्वयक
शान्ता के.
शहनाज़ बेगम

हिन्दी अंक सम्पादक
राजेश उत्साही

हिन्दी अनुवाद
एकलव्य फ़ाउंडेशन
समन्वय : प्रतिका गुप्ता

आवरण चित्र
HITEC टीम, एकलव्य, होशंगाबाद

डिज़ाइन
Banyan Tree
98458 64765

हिन्दी अंक लेआउट एवं मुद्रक
आदर्श प्रा.लि. भोपाल
+91-755-2555442

कृपया ध्यान दें :

- ***इस अंक में प्रकाशित लेख मूलत: अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी लर्निंग कर्व (अँग्रेज़ी) अंक 16 अगस्त, 2023 के लेखों के हिन्दी अनुवाद हैं। मूल अँग्रेज़ी अंक को*** *https://azimpremjiuniversity.edu.in/learning-curve* ***से डाउनलोड किया जा सकता है।***
- ***यह हिन्दी अंक या इसके अलग-अलग लेख*** *https://anuvadasampada.azimpremjiuniversity.edu.in/* ***पर उपलब्ध हैं।***
- ***लेखों में व्यक्त विचार और दृष्टिकोण लेखकों के अपने हैं। अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन या अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।***

'' अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी लर्निंग कर्व, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय का प्रकाशन है। इसका उद्देश्य शिक्षकों, शिक्षक-अध्यापकों, स्कूल प्रमुख, शिक्षा अधिकारियों, अभिभावकों और गैर-सरकारी संगठनों तक ऐसे प्रासंगिक और विषयगत मुद्दों में पहुँच बनाना है जो उनके रोजमर्रा के काम से सम्बन्धित हैं। लर्निंग कर्व शैक्षिक जगत के विभिन्न दृष्टिकोणों, अभिव्यक्तियों, परिप्रेक्ष्यों, नई जानकारियों और नवाचार की कहानियाँ प्रस्तुत करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। इसका मूल विचार 'शैक्षणिक' और 'अभ्यासकर्ता' के मध्य सन्तुलन हेतु उन्मुख पत्रिका के रूप में स्थापित होना है।''

सम्पादक की ओर से

हर किसी को एक अच्छी कहानी पसन्द होती है।

हम सभी बचपन में (ज़्यादातर) अपने दादा-दादी/ नाना-नानी से कहानियाँ सुनने के निर्मल आनन्द से वाक़िफ़ हैं। तो, कहानियों में ऐसा क्या है जो हर पीढ़ी को इतना सम्मोहित करता है? हम कुछ कहानियाँ बार-बार सुनना चाहते हैं और रोमांचित, उत्साहित, उदास, ख़ुश होते हैं। हम इस पर भी विचार करना चाहते हैं कि क्या हो सकता था, हमने अन्त कैसे बदल दिया होता या पात्रों ने क्या किया या कहा और क्या हम उनसे सहमत थे या नहीं।

बच्चे, विशेष रूप से, कहानियाँ उन्हीं कारणों से पसन्द करते हैं जिन कारणों से वयस्क करते हैं, लेकिन कहानी सुनाने में, बच्चों से जुड़ी हर चीज़ की तरह, बड़ी प्रतिबद्धता, जुड़ाव और सहभागिता होती है। जब बच्चे किसी कहानी को सुनते हैं, तो वे पूरी तल्लीनता से सुनते हैं और कभी-कभी अगर कहानी सुनाने वाला कोई विवरण छोड़ देता है या बदल देता है तो वे इसे पकड़ लेते हैं! और अगर वही कहानी दोहराई जाती है, तो 'लेकिन पिछली बार तो आपने कहा था...' जैसी टिप्पणियाँ सामने आती हैं।

इस स्थिति में, कहानी सुनाना आज स्कूलों में, प्री-प्राइमरी कक्षाओं में, सबसे पहले, छोटे बच्चों के लिए दुनिया को व्यवस्थित करने के साधन के रूप में एक बहुत लोकप्रिय माध्यम बन गया है। उदाहरण के लिए, प्यासे कौवे की कहानी लीजिए। कौवे दुनिया के हर हिस्से में एक ऐसा परिचित दृश्य हैं जिसके वर्णन की आवश्यकता नहीं है। तो कहानी सुनाने वाला सीधे कहानी में उतर सकता है। पहले तो बच्चों को आश्चर्य होता है कि कौआ किसी भी कहानी का मुख्य पात्र कैसे हो सकता है। लेकिन एक प्यासा कौआ? कोई नहीं जानता था कि पक्षियों को प्यास लगती है। इस रोमांचक तथ्य पर बहुत सारी टिप्पणियाँ सामने आती हैं - वे बहुत उड़ते हैं; उन्हें भी हमारी तरह प्यास लगती होगी। यह कौआ सोच भी सकता है - पानी का स्तर कम होने के कारण, यदि भारी वस्तुओं को व्यवस्थित रूप से पात्र में डाला जाए तो पानी का स्तर बढ़ाया जा सकता है: कौआ कंकड़ ढूँढ़ता है और उन्हें एक-एक करके घड़े में गिराता है। पूरी प्रक्रिया में बहुत सारे छोटे-छोटे सबक़ हैं, लेकिन शायद सबसे महत्त्वपूर्ण है कि धैर्य का फल मिलता है और यह भी कि सभी जीवित प्राणी हमारे जैसे होते हैं, हमें अपने संसाधन साझा करना होंगे और (शायद बाद में) हमें अपना ग्रह भी उनके साथ साझा करना होगा। एक शिक्षक/ कहानी सुनाने वाला चर्चा और भागीदारी के माध्यम से इन सब बातों को बाहर ला सकता है।

यह हमें हमारे विषय (शैक्षणिक दृष्टिकोण के रूप में कहानी सुनाना) पर लाता है। इस विषय को इसलिए चुना गया क्योंकि कहानियाँ और कहानी सुनाना इतने मूल्यवान उपकरण हैं कि इन्हें कक्षा से बाहर नहीं रखा जा सकता। इनके माध्यम से इतना कुछ सिखाया और सीखा जाता है और एक तरह के अनुभवों की इतनी अधिक व्याख्याएँ होती हैं कि यह अन्य विषयों को पढ़ाने के साथ-साथ सुनने और सोच-विचार करने के कौशलों को सिखाने के सबसे बहुमुखी माध्यमों में से एक है जो कि ऐसी प्रतिभाएँ हैं जो आजीवन सीखने के लिए आवश्यक होती हैं।

इस अंक में हमारे पास ऐसे लेख हैं जो दिखाते हैं कि कैसे कहानी सुनाने का उपयोग गणित, भौतिकी, सामाजिक अध्ययन जैसे विविध विषयों में और शहरी या ग्रामीण हर जगह के स्कूलों में समावेशन के लिए बड़ी सफलता के साथ किया जा सकता है। तीन लेख हमें दिखाते हैं कि कैसे एक कहानी को सीखने के साधन के रूप में इस्तेमाल किया जा

सकता है, अन्य लेख बताते हैं कि कैसे एक चर्चा का उपयोग कुशलतापूर्वक कुछ महत्त्वपूर्ण समझ प्राप्त करने के लिए किया जा सकता है, उदाहरण के लिए, गणित की समझ - परनानी की उम्र का पता लगाने की कोशिश करना इसका एक उदाहरण है। भारतीय भाषाओं में कहानियों का ख़ज़ाना उपलब्ध है, जो अपना उपयोग किए जाने के लिए हमारी प्रतीक्षा कर रहा है।

यह सब आदान-प्रदान के एक ऐसे माध्यम में योगदान करता है जो आयु समूहों और पृष्ठभूमियों से परे है और कहानियों की जादुई दुनिया में समान आधार पाता है। हमें आशा है कि आप इस अंक का आनन्द लेंगे और इसे अपनी कक्षा में उपयोगी पाएँगे।

हमारे पाठकों के लिए एक अन्तिम बात, जो सम्भवतः यह देख पाएँगे कि अंक की शक्ल में बदलाव आया है। यह निर्णय बहुत सोच-विचार के बाद लिया गया है। हालाँकि, हमारी विषयवस्तु की गुणवत्ता वैसी ही है और सहभागिता के प्रति हमारी प्रतिबद्धता भी। हमेशा की तरह, हम नीचे दी गई ईमेल आईडी पर आपके फ़ीडबैक का स्वागत करते हैं।

प्रेमा रघुनाथ

प्रधान सम्पादक

prema.raghunath@azimpremjifoundation.org

अनुवाद : सुबोध जोशी **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी
कॉपी एडिटर : अनुज उपाध्याय

इस अंक में

कहानियाँ कैसे बच्चों का लालन-पालन करती हैं 01
वैलेंटीना त्रिवेदी

कहानियों के माध्यम से सार्थक बातचीत 05
ध्रुव देसाई

कला के माध्यम से कहानी कहना 10
अभिलाषा अवस्थी

शिक्षण की एक विधि के रूप में कहानी सुनाना 15
गायत्री

कहानियाँ सुनाने के माध्यम से मूल्यों की तालीम : मेरे अनुभव 18
इमान शर्मा

कक्षा में कहानी सुनाने से क्या होता है? 21
ईशा बडकस

जब गणित की कक्षा में कहानियाँ प्रवेश करती हैं 25
माला कुमार

कक्षा में कहानी सुनाने की गतिविधियाँ 28
नबनिता देशमुख

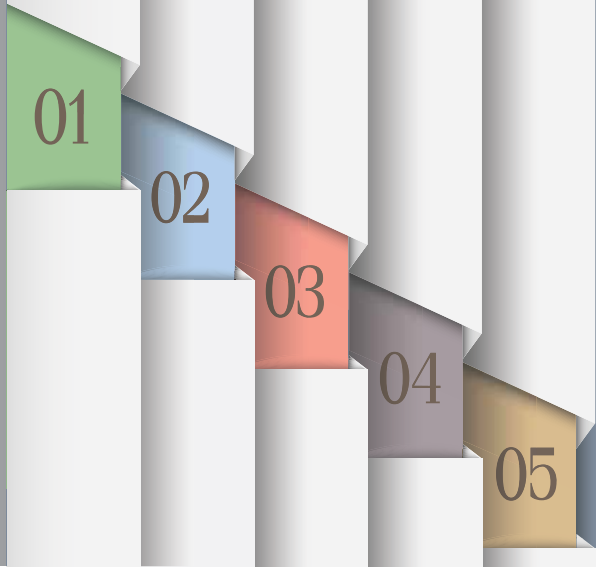

इस अंक में

आवाज़ें

धानी के तीन दोस्त : कक्षा में कहानी 32
अनुजा हल्दर

लाइटनिंग (बड़ी किताब) : कक्षा में कहानी 35
कमलेश चन्द्र जोशी

पाठ्यचर्या की विषय-वस्तु को कहानियों से जोड़ना : मेरे अनुभव 38
मधुमिता आर.

कहानियों द्वारा सीखना 41
पद्मा बी. एम.

कहानियाँ सम्बन्ध बुनती हैं : मेरे अनुभव 45
रजनी द्विवेदी

कहानी सुनाने के माध्यम से गणितीय अवधारणाओं का शिक्षण 48
रंगनाथ

बालटी के अन्दर समन्दर : कक्षा में कहानी 52
श्वेता विश्वकर्मा

विज्ञान की कक्षा में लोकप्रिय कहानियाँ 55
वेंकट नाग विनय सूरम

हुनरमन्द कहानी सुनाने वाले कैसे बनें 58
राजेश उत्साही

भाषा सीखने में कहानियों का प्रभाव 61
शरून सनी

कथावना : कहानियों और कहानी सुनाने के लिए अवसर तैयार करना 65
सोनिका पाराशर

कहानियों के ज़रिए विज्ञान को मानवीय बनाना 70
वीना प्रसाद

कहानियाँ कैसे बच्चों का लालन-पालन करती हैं

वैलेंटीना त्रिवेदी

हमारी तेज़ी-से बदलती और अप्रत्याशित दुनिया में यह बेहद ज़रूरी है कि एक ख़ुशहाल और सफल जीवन जीने के लिए हमारे पास सही साधन हों। इस बात से कई लोगों को ताज्जुब हो सकता है कि ऐसे ही एक सबसे बुनियादी साधन को महज़ कहानियों से जुड़कर हासिल किया जा सकता है। सभी संस्कृतियों में, कहानियाँ सुनाना जीवन जीने का एक ऐसा तरीक़ा रहा है जो न सिर्फ़ ज्ञान का, बल्कि बुद्धिमता के हस्तान्तरण का भी सबसे सामान्य रास्ता है। बदक़िस्मती से, अकादमिक पाठ्यक्रम की विषयवस्तु के बढ़ते बोझ ने इसे धीरे-धीरे अधिगम को सुगम बनाने के सबसे बुनियादी साधन की हैसियत से बेदख़ल कर दिया। जैसे-जैसे जटिल पाठ्यचर्याओं ने स्कूलों को अधिक शिक्षण केन्द्रित बनाया, वैसे-वैसे कहानियों से अलगाव के चलते अधिगम में पड़ी दरार चौड़ी होती चली गई। हाल ही में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कहानी सुनाने को एक साधन के रूप में इस्तेमाल करने के ज़िक्र ने इस पर फिर से ध्यान केन्द्रित किया है। यह नीति कहती है कि अधिगम 'समग्र, एकीकृत, आनन्ददायी और रुचिकर होना चाहिए...शिक्षा का उद्देश्य केवल संज्ञानात्मक समझ का विकास न होकर चरित्र निर्माण और इक्कीसवीं शताब्दी के मुख्य कौशलों से लैस समग्र और सम्पूर्ण व्यक्तियों का निर्माण करना भी है।'

मुश्किल लगता है? वास्तव में है नहीं, यदि आप कहानियों के साथ सतत जुड़ाव बनाए रखते हैं तो। ऐसा करने के अल्प, मध्यम और लम्बे समय के फ़ायदे हैं। दिलचस्प है कि अल्पावधि के फ़ायदे मध्यम और दीर्घावधि के फ़ायदों के मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं!

क़िस्सागोई से पनपता अपनापन

जब कहानियों की बात की जा रही हो तो हम लोककथाओं की बड़ी अहम प्रासंगिकता को नज़रअन्दाज़ नहीं कर सकते। लोगों ने कहानियों की अहमियत को समझा और इस तरह पीढ़ी-दर-पीढ़ी लोककथाओं, मिथकों और किंवदन्तियों के ज़रिए बुद्धिमता का हस्तान्तरण हुआ। इनसे अपनेपन के भाव के साथ ही समावेश, साझेपन और अन्य संस्कृतियों के अन्तर और समानताएँ दोनों ही को समझने के भाव भी मन में बैठ सके।

बच्चों की उन कहानियों से प्रभावित होने की सम्भावना अधिक होती है जिनके परिवेश से या तो वे परिचित होते हैं या फिर नज़दीकी महसूस करते हैं। लोककथाएँ उनकी ज़मीन, उनके लोगों, रिवाज़ों, पद्धतियों, विश्वासों और अनुभूतियों की कथाएँ सुनाती हैं। अपनी जगह की लोककथाओं को सुनकर उस जगह से अपना रिश्ता मज़बूत होता है और इस तरह अपनी पहचान बुलन्द होती है। इससे एक डोर बँधती है, जिससे व्यक्ति चाहे कितनी भी ऊँची उड़ान भरे वह उसे कभी भी एक कटी पतंग की तरह हवाओं के भरोसे छोड़ नहीं देती। अन्य जगहों की लोककथाओं को सुनना या पढ़ना एक अन्य संस्कृति की खिड़की खोलना है। उस जगह के रिवाज़ों और विश्वासों को प्रदर्शित करने के साथ ही वे एक बुनियादी सबक़ भी सिखाती हैं : कि दुनिया भर के लोग अलग-अलग हैं। एक बच्ची यह मानना सीखती है कि एक प्रजाति होने के नाते विविधता, हमारी पहचान का एक हिस्सा है। न सिर्फ़ इसे साथ रखना बल्कि इस विविधता की क़द्र करना और इसका आनन्द लेना एक ऐसा गुण है जो कहानियों को पढ़कर या सुनकर सहज ही अर्जित होता है। ऐसा करने पर कहानी पढ़ने या सुनने वाली 'सहिष्णुता' (एक ऐसा शब्द जो अक्सर 'अन्तर' के साथ इस्तेमाल किया जाता है) को लाँघ देती है।

बुद्धिमता और व्यावहारिक समझ की कहानियाँ

भारत में, हम लोककथाओं के एक विशाल महासागर से समृद्ध हैं जहाँ पंछी, जानवर, पेड़, पर्वत, राजा, फ़क़ीर, औरतें और आदमी आज़माई और परखी हुई ज्ञान की बातें बड़े ही दिलचस्प तरीक़ों से परोसते हैं। एक छोटी और सरल लोककथा में निहित असीम बुद्धिमता की एक मिसाल अगले पेज पर (मूर्ख राजा) पेश है, जो लोककथाओं की शाश्वत प्रासंगिकता को भी चित्रित करती है।

इस कहानी के ज़रिए छुए गए कुछ प्रसंग ये रहे :

- आज़ादी की अहमियत
- गम्भीर ख़तरे के सामने भी चतुराई और त्वरित-होशियारी - अपनी बुद्धि न खोना
- यह तथ्य कि बुद्धिमता का आकार, बल या दौलत से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है

मूर्ख राजा

राजा को अपने राजबाग़ में टहलते हुए एक बहुत ख़ूबसूरत चिड़िया दिखती है। वह उसे पकड़ लेता है। चिड़िया राजा को ज्ञान की तीन बहुमूल्य बातें बताने का वादा कर अपनी आज़ादी का सौदा करती है। जब राजा सौदा मंज़ूर कर लेता है, तो चिड़िया उसे ये तीन बातें बताती है :

1. जो हो चुका, उस पर पछताना मत।
2. जो तुम पा नहीं सकते, उसकी कामना छोड़ दो।
3. जो नामुमकिन है, उस पर विश्वास मत करना।

राजा को बातें मूल्यवान लगती हैं, तो वह चिड़िया को छोड़ देता है। चिड़िया राजा की पहुँच से दूर एक डाल पर जा बैठती है और हँसने लगती है।

"मेरी आज़ादी का सौदा तो सस्ते में निपट गया," वह कहती है, "क्योंकि मेरे पेट में तुम्हारी मुट्ठी जितना बड़ा एक हीरा है।"

राजा तुरन्त चिड़िया की ओर झपटता है पर उसे पकड़ने में असफल रहता है। फिर वह चिड़िया को एक शाही ज़िन्दगी देने के वादों से रिझाने की कोशिश करता है।

चिड़िया राजा को घृणा भरी नज़रों से देखती है और कहती है, "ऐ मूर्ख राजा! तुम अभी से ज्ञान की वे तीन बातें भूल गए जो मैंने तुम्हें बताई थीं! मुझे खोने के बाद तुम पछता रहे हो। तुम मुझे पाने की कामना कर रहे हो जबकि मैं तुम्हारी पहुँच से दूर हूँ। और तुमने भला इस पर कैसे विश्वास कर लिया कि मुझ जैसी नन्हीं चिड़िया ने तुम्हारी मुट्ठी के बराबर एक हीरा गटक लिया होगा और उसके बाद भी वह ज़िन्दा रही होगी?!" इतना कहकर, चिड़िया उड़ गई।

- एक अस्तित्वहीन हीरे का उल्लेख यह सोचने पर मजबूर करता है कि राजा को क्या अधिक समृद्ध करता - एक बड़ा हीरा या ज्ञान की बातें आत्मसात करना।

इसमें और भी कई पहलू हैं जो मन में आते हैं - जानवरों के प्रति क्रूरता, प्रकृति की क़दर और सत्ता के समीकरण। एक कहानी से जुड़ने के अनुभव से कोई व्यक्ति कई तरह की सीख ले सकता है। और यह तो बस एक नन्ही चिड़िया की एक छोटी-सी कहानी थी! क्या आप किसी अन्य स्रोत के बारे में सोच सकते हैं जो इतने छोटे अंश में इतनी अहम सीख रखता हो?

बच्चे कहानियों में पात्रों की अच्छाई, विनोद, बुद्धिमत्ता, साहस और सुन्दरता जैसे गुणों से टकराना और उन्हें सराहना अपने इर्द-गिर्द की दुनिया में उन्हें पहचानने से काफ़ी पहले शुरू कर देते हैं। तो, कहानियाँ एक बच्चे को उसके शुरुआती जीवन से ही मूल्यों से परिचित करवाती हैं और एक मज़बूत नींव रखती हैं। पिछले कुछ सालों से कोविड-19 से जूझते हुए हमने फिर से उठ खड़े होने की अहमियत सीखी। यह कोई ऐसा गुण नहीं है जिसे किसी पाठ्यपुस्तक द्वारा सिखाया जा सके। लेकिन उन कहानियों से जुड़कर, जिनमें पात्र मुसीबत में भी बार-बार खड़े होना जानते हैं, ऐसे गुण सहजता से विकसित किए जा सकते हैं।

सुनना सीखना

एक कहानी है जिसमें एक बच्ची स्कूल शुरू होने का बेसब्री से इन्तज़ार करती है। जब वह दिन आता है, वह अपने नए-नवेले बस्ते और टिफ़िन के डिब्बे को उठाकर बड़े उत्साह के साथ स्कूल-बस में चढ़ जाती है। लेकिन, वह स्कूल से उदास होकर लौटती है और अपनी माँ से कहती है, "मुझे नहीं लगता आपको मुझे स्कूल भेजना चाहिए।" चिन्तित माँ उससे पूछती है, "क्यों?" बच्ची भर आई आँखें उठाकर कहती है, "मैं पढ़-लिख नहीं सकती और वे मुझे बोलने नहीं देते!"

उसका यह सादा-सा जवाब इस पर गहरी टिप्पणी करता है कि कक्षा में हम बच्चों को क्या करने की अनुमति देते हैं और क्या करने की अनुमति नहीं देते हैं। हम एलएसआरडब्ल्यू (लिसनिंग, स्पीकिंग, रीडिंग, राइटिंग; या सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना) की बात करते हैं, लेकिन अक्सर बड़ी आसानी से डब्ल्यू तक पहुँचने की हमारी जल्दबाज़ी में हम एल और एस को भूल जाया करते हैं। कक्षा में बातचीत करने को बेलगाम बर्ताव माना जाता है, इसलिए हम बच्चों को चुपचाप बैठा देते हैं। बच्चों को 'ध्यान दो!' और 'चुप करके बैठो और सुनो!' का उपदेश देने वाले शिक्षक बिरले ही ख़ुद अच्छे सुनने वाले होते हैं। बच्चे किस बारे में बात करना चाहते हैं यह तो हम सुनना ही नहीं चाहते और तब भी हम अपेक्षा करते हैं कि वे हमें सुनें। लेकिन अगर हम बच्चों को यह सिखाएँगे ही नहीं कि सुनना क्या होता है, तो हम उनसे इसे व्यवहार में लाने की अपेक्षा कैसे कर सकते हैं?

सुनना सिखाने का एक बहुत कारगर तरीक़ा है कक्षा में क़िस्सागोई का होना। कहानियाँ सुनने से एक स्वाभाविक और सहज तरीक़े से सुनने का कौशल विकसित होता है। अन्य कौशलों के अलावा, यह एकाग्रता, अर्थबोध और अभिव्यक्ति को बेहतर करता है और सभी विषयों में शिक्षार्थियों के प्रदर्शन में सीधा और सकारात्मक असर पड़ता है। सुनना एक बढ़िया ज़रिया भी है बराबरी स्थापित करने का। वह बच्चा भी, जो अकादमिक रूप से ठीक प्रदर्शन नहीं कर पा रहा है, ख़ुद को कमतर समझे बग़ैर कहानी सुन सकता है। यह वैज्ञानिक तौर पर साबित हो चुका है कि कहानी सुनाने के ठीक बाद जो सिखाया जाए वो बेहतर याद रहता है। यहाँ तक कि कक्षा की शुरुआत में सुनाई गई एक दो-मिनट की कहानी भी बच्चों का ध्यान केन्द्रित करती है और आगे की पढ़ाई में उनकी एकाग्रता बढ़ाती है। कक्षा-3 की एक शिक्षक, जो ऐसा किया करती हैं, ने साझा किया कि एक नई कक्षा के साथ ऐसा करने के दूसरे हफ़्ते से ही उनके कक्षा में पहुँचने तक बच्चों ने व्यवस्थित बैठकर उनका उत्सुकता से इन्तज़ार करना शुरू कर दिया था!

जैसे-जैसे सुनने का कौशल तेज़ होता जाता है, दूसरे फ़ायदे भी उभरने लगते हैं। व्यक्ति दूसरों को बोलने देने में, लिखे हुए निहितार्थ निकालने में और अन्य नज़रियों की क़द्र करने में क़ाबिल होता है। इससे समानुभूति जैसे महीन गुणों को विकसित करने में मदद मिलती है, जो अन्यथा नहीं सिखाए जा सकते। कक्षा में कहानी सुनाने और सुनाई गई कहानियों के इर्द-गिर्द बातचीत शुरू करने से वे सामाजिक कौशल विकसित होते हैं जो लम्बे समय में बेहतर निजी और पेशेवर सम्बन्ध बनाते हैं। मैं सचमुच विश्वास करती हूँ कि न सुनना दुनिया के सभी प्रमुख मसलों की जड़ है : अलग-अलग समुदायों, धर्मों और देशों के लोगों का एक-दूसरे को न सुनना टकरावों का सबसे बुनियादी कारण है, जिसका परिणाम चल रहे संघर्ष होते हैं। चूँकि हम, एक प्रजाति के तौर पर, हमारे ख़ूबसूरत ग्रह को नहीं सुन रहे हम जलवायु संकट के बीच हैं।

दिमाग़ को क्या होता है जब हम कहानी सुनते हैं

क्यों किसी कहानी के प्रारूप का, जहाँ एक के बाद एक घटनाएँ उजागर होती हैं, सीखने पर इतना गहरा असर होता है? जब हम किसी शिक्षक के लेक्चर या बुलेट पॉइंट्स से लैस पॉवर-पॉइंट प्रेज़ेंटेशन को सुनते हैं, तब हमारे मस्तिष्क में केवल भाषायी प्रोसेस करने वाले क्षेत्र सक्रिय होते हैं, जहाँ हम शब्दों को अर्थों में तब्दील करते हैं; और कुछ नहीं होता।

लेकिन जब हमें कोई कहानी सुनाई जाती है, चीज़ें नाटकीय रूप से बदल जाती हैं। हमारे मस्तिष्क में न सिर्फ़ भाषा प्रोसेस करने वाले क्षेत्र बल्कि हमारे मस्तिष्क के इसी तरह के अन्य हिस्से भी सक्रिय हो जाते हैं जिनका इस्तेमाल हम कहानी की घटनाओं का अनुभव लेने के लिए करते हैं। यदि हमें कोई बताता है कि फ़लाँ खाना कितना स्वादिष्ट था, हमारा सेंसरी कॉर्टेक्स जाग उठता है। अगर यह गति के बारे में हो, तो हमारा मोटर कॉर्टेक्स सक्रिय हो उठता है। हममें से अधिकांश ने वह समय अनुभव किया होगा जब हमारी कोई दोस्त पहाड़ों में उसकी छुट्टियों के बारे में हमें बता रही थी और हमें पहाड़ों में बिताई अपनी छुट्टियों की याद आ गई।

प्रिंसटन के मनोविज्ञान और तंत्रिका विज्ञान के प्रोफ़ेसर यूरी हैस्सन कहते हैं, "कहानी सुनाने वाले और सुनने वाले व्यक्तियों के मस्तिष्क का आपस में तालमेल बन (सिंक्रोनाइज़ हो) सकता है।" इसके दो ज़ाहिर फ़ायदे हैं। पहला, किसी कहानी को सुनना दिमाग़ के कई इलाक़ों को उत्तेजित करता है जो कि बस चुपचाप बैठे रहकर सुनने के निष्क्रिय अनुभव से कहीं ज़्यादा समृद्ध है। दूसरा, कहानी सुनाने वाले और सुनने वाले के बीच एक रिश्ता बनाती है, जो कहानी ख़त्म होने के बाद भी क़ायम रहता है। शिक्षक-शिक्षार्थी के रिश्ते में शामिल करने के लिए क्या ख़ूब पहलू है!

आसानी से प्रभावित होने वाले युवा मन को कहानियाँ जो एक और अद्भुत सौग़ात देती हैं वह है कि वे चिन्तन को न्यौता देती हैं। चिन्तन, जो जवाबों के सही-ग़लत होने के बोझ से आज़ाद है, जो बड़ों की अपेक्षाओं या गढ़े गए नियमों से सुरक्षित है। यह मन को आज़ादी से घूमने-फिरने देता है और इस घूमने-फिरने से अपने ख़ुद के सीखने का मंच तैयार करता है। जब बच्चे कहानियों से नियमित रूप से जुड़ते हैं, तब अधिक जटिल संज्ञानात्मक प्रक्रियाएँ शुरू हो जाती हैं और वे अपने शिक्षण की कमान अपने हाथों में ले लेते हैं। इससे शिक्षण प्रक्रिया अब वह गतिविधि नहीं रह जाती जो केवल कक्षा-कक्ष के भीतर पाठ्यपुस्तक और नोटबुक जैसे पारम्परिक साधनों से और परीक्षा उत्तीर्ण करने के मक़सद से की जाती थी। कक्षा-कक्ष का विस्तार होता है ताकि उनकी पूरी दुनिया उसमें समा सके और सीखने के दायरे खुलते हैं ताकि उनकी दुनिया के अनुभवों को शामिल किया जा सके। वे निरन्तर सीखने के एक रास्ते पर चल पड़ते हैं - सही मायने में ताउम्र के शिक्षार्थी के रूप में, इन्सानों के तौर पर अपने कौशलों और अनुभूतियों को निखारते और तेज़ करते हुए। इससे बड़ा तोहफ़ा एक शिक्षक और क्या दे सकती है!

कहानियाँ कहाँ ढूँढ़ें

शिक्षक अक्सर मुझसे पूछा करते हैं कि वे कहानियाँ कहाँ ढूँढ़ सकते हैं।

दरअसल हम कहानियों से घिरे हुए हैं। और-तो-और, आपको हमेशा कोई लम्बी कहानी सुनाने की ज़रूरत नहीं। आप उन्हें ख़ुद गढ़ सकते हैं और ये किसी के भी बारे में हो सकती है : जब आप कक्षा की तरफ़ आ रहे थे तो किसी कंकड़ ने आपसे क्या कहा या दो पक्षियों या गिलहरियों के बीच की बातचीत या क्यों किसी पत्ते ने पेड़ से गिरने की ठानी। कहानियाँ गढ़ने से आपकी रचनात्मकता बनी रहेगी और बच्चे आपसे कुछ मज़ेदार और पाठ्यक्रम की विषयवस्तु से बाहर का कुछ सुनाने के कारण स्नेह करेंगे। हर किसी को कहानी पसन्द होती है और जिज्ञासु, सचेत व उत्सुक रहना किसी अर्थपूर्ण शिक्षण के लिए एक अच्छी मनोवस्था है।

शिक्षकों को उनके क्षेत्र-विशेष से कहानियाँ साझा करनी चाहिए। ऐसी और कहानियों के लिए वे शिक्षार्थियों से कह सकते हैं कि वे अपने पालकों से उनके क्षेत्र-विशेष की कहानियाँ सुनाने के लिए कहें। परिवारों में कहानी सुनाने के रिवाज़ों को पहचाना जाना चाहिए और प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, इससे पहले कि वे पूरी तरह ख़त्म हो जाएँ। अच्छे साहित्य से रूबरू होने की कमी से पड़ी दरार बदक़िस्मती से 'ख़बरी क़िस्सों' से भरी जा रही है जिसकी बमबारी टीवी और फ़ोन के ज़रिए हम पर लगातार हो रही है।

भारत और दुनिया के अलग-अलग इलाक़ों की लोककथाएँ बच्चों द्वारा और बच्चों के लिए ज़रूर पढ़ी जानी चाहिए। कुछ बहुत अच्छे स्रोतों में शुमार हैं कई भारतीय भाषाओं में मौजूद नेशनल बुक ट्रस्ट की किताबें, ख़ासतौर से, एके रामानुजन की फोकटेल्स फ़्रॉम इंडिया; प्रथम बुक्स की वेबसाइट storyweaver.org.in का 337 भाषाओं में बच्चों के लिए पचास हज़ार से अधिक कहानियों का एक ऑनलाइन संकलन, जो कि पढ़ने के चार अलग-अलग स्तरों के लिए एक श्रेणीबद्ध संकलन है; और एकलव्य प्रकाशन की किताबें जो कि बच्चों के साथ पढ़ने और मज़े के लिए सुखद हैं।

और अन्त में

कहानियाँ आपके समक्ष सम्भावनाएँ और वैकल्पिक ब्रह्माण्ड प्रस्तुत करती हैं। ये आपको छलती हैं, आपके सामने मायाजाल रचती हैं, आपको उन लोगों के प्रति सहानुभूति से भर देती हैं जो आगे बढ़कर कुछ अनपेक्षित कर बैठते हैं, ऐसी सम्भावनाएँ पेश करती हैं जो आपने सोची भी न हों और प्रस्तुत करती हैं ऐसे अन्त जिसके मंसूबे भी आपने न बनाए हों। एक स्तर पर, इससे आपको ज़िन्दगी के तरह-तरह के और अनपेक्षित नतीजों से अधिक प्रभावी ढंग से निपटने में मदद मिलती है। एक अन्य स्तर पर, इससे आपको उन सम्भावनाओं को देखने में भी मदद मिलती है जो स्पष्ट न भी हों। और इस प्रवृत्ति को विकसित करने की सबसे ख़ूबसूरत बात यह है कि आप लोगों में भी सम्भावनाएँ देख पाते हैं। ख़ासतौर पर एक शिक्षक के नाते यह एक अहम गुण है - कि अपने विद्यार्थी को सिर्फ़ वैसे न देखना जैसे वे अभी हैं, बल्कि उनकी छुपी हुई सम्भावनाओं को भी देख पाना; वे सम्भावनाएँ, जिन्हें मौक़ा मिलेगा फलने-फूलने का यदि आप उन्हें पहचानेंगें। कहानियों के साथ जुड़ाव बनाने पर नज़रियों के झरोखे खुलते हैं। यह जुड़ाव हमें हमारी संकीर्ण मानसिकता से बाहर लाकर हमारी नज़र, हमारा दृष्टिकोण और हमारी भावना का विस्तार करता है।

हर कहानी का अन्त कई अन्य कहानियों की शुरुआत होता है। हरेक अन्त आपको न्यौता देता है जिज्ञासु बने रहने का और अन्य कहानियों की कल्पना करने का, जो उस बिन्दु से शुरू हो सकती हों। "उस बूढ़े आदमी का क्या हुआ?" "क्या वह राहगीर किसी नए सफ़र पर निकल पड़ा?" "क्या वह ड्रैगन अब भी उड़ रहा है?" सवालों और कल्पित नतीजों, दोनों ही की सम्भावनाएँ अनन्त हैं।

वैलेंटीना त्रिवेदी एक लेखिका, अदाकार और शिक्षक हैं। उनका रचनात्मक कार्य कई माध्यमों में समाया है : कला प्रदर्शन, कथानक लेखन, शॉर्ट फ़िल्मों का निर्देशन, सम्पादन, अनुवाद, कहानियों का अनुकूलन और कहानियाँ सुनाना। वे बच्चों और अधिगम को लेकर जुनूनी हैं। वे सीखने की प्रक्रिया को एक बच्चे के दृष्टिकोण से देखने में विशेषज्ञता रखती हैं। उन्हें अपने नज़रिए साझा करने के लिए कई शैक्षणिक गोष्ठियों में आमंत्रित किया गया है। एक दास्तानगो के रूप में, गायकी उनके प्रदर्शन का एक अनोखा पहलू है। वे औपचारिक व अनौपचारिक, दोनों ही क्षेत्रों में काम कर चुकी हैं। उनसे *storyweaverval@gmail.com* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : अतुल वाधवानी **पुनरीक्षण :** प्रतिका गुप्ता **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

कहानियों के माध्यम से सार्थक बातचीत

ध्रुव देसाई

शिक्षकों और आमतौर पर शायद वयस्कों के बीच एक धारणा है कि बच्चे 'मासूम' होते हैं और दुनिया की कुछ कठोर वास्तविकताओं से उनकी 'रक्षा' की जानी चाहिए। इनमें दुःख, कुछ खोना और चिन्ता जैसी गहरी व्यक्तिगत भावनाएँ व जाति, वर्ग, जेंडर या नस्ल जैसे कुछ संरचनात्मक मुद्दे भी शामिल हो सकते हैं।

पिछले 10-12 वर्षों में विभिन्न स्थानों पर एक शिक्षक के रूप में, मैंने जाति और जेंडर जैसे 'समस्याजनक' मुद्दों पर शिक्षकों के दो प्रकार के व्यवहार देखे हैं। पहला है सामान्य प्रकार की, अत्यधिक कट्टर प्रतिक्रिया जो अब भी भारतीय समाज के अधिकांश हिस्सों में मानक है - 'लड़कियों को गणित पढ़ने की क्या आवश्यकता है' जैसी टिप्पणियों से लेकर साझे नल से पानी पीने के लिए 'निचली' मानी जाने वाली किसी जाति के बच्चे को पीटने जैसे व्यवहार तक। दूसरा है एक प्रकार की अनदेखा (elevated avoidance) करने की प्रतिक्रिया जहाँ शिक्षकों को लगता है कि कक्षाओं से पूर्वाग्रह समाप्त करने का तरीक़ा है यह दिखावा करना कि असमानताएँ मौजूद ही नहीं हैं। उदाहरण के तौर पर, यह एक कथन हो सकता है, जैसे, 'यहाँ जेंडर समानता है; हम जेंडर असमानता के बारे में बात नहीं करते क्योंकि ऐसा करने से विद्यार्थी इस विचार से परिचित हो जाएँगे - यहाँ हर कोई एक-दूसरे के प्रति मित्रवत है।' यह शायद एक नेक इरादे वाला प्रयास है, लेकिन यह उस भेदभाव, पूर्वाग्रह और कट्टरता के रोज़मर्रा के अनुभव की वास्तविकता को नहीं दर्शाता है जिसका सामना अल्पसंख्यकों और कमज़ोर समुदायों द्वारा किया जाता है। एक सांस्कृतिक पुनरुत्पादन भी होता है जो तब होता है जब हम मौजूदा स्थिति को बदलने की दिशा में सक्रिय रूप से काम नहीं करते हैं; ऐसा कहने से मेरा यह आशय है कि मौजूदा संरचनाएँ और रूप बने रहते हैं और ख़ुद की पुनर्रचना करते रहते हैं। जब हम वर्तमान पीढ़ियों में पाई जाने वाली जातिवादी धारणाओं पर खुले तौर पर ध्यान नहीं देते हैं, तो इस बात की बहुत अधिक सम्भावना रहती है कि अगली पीढ़ी वही रूप दोहराएगी और वही धारणाएँ रखेगी।

ऐसे स्थानों पर शिक्षकों के रूप में, हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम एक ऐसी प्रक्रिया के पहले क़दम के रूप में, अक्सर न दिखाई देने वाले इन अनुभवों को प्रकाश में लाएँ, जो इन अनुभवों को पैदा करने वाली असमानताओं पर ध्यान देने की दिशा में कार्य करती है। और अन्ततः (एक आदर्श दुनिया में) यह प्रक्रिया सवाल करना सीखने और फिर उन पूर्वाग्रहों को मिटाने की ओर ले जाती है जिनसे ये व्यवहार उत्पन्न होते हैं।

इसे हल करने का एक प्रयास

मुझे पूर्वाग्रह को समझने के क्षेत्र में किए गए कार्यों को देखने और स्कूलों व अन्य संस्थागत परिवेशों में पूर्वाग्रह कम करने के लिए किए गए प्रयासों का अध्ययन करने का मौक़ा मिला और मैंने इसमें कई महीने बिताए। विभिन्न सामाजिक मनोवैज्ञानिकों और समाजशास्त्रियों के कार्यों से, मैं गॉर्डन ऑलपोर्ट के कार्य पर लौटता रहा। उनके शोध से संकेत मिलता है कि कुछ स्थितियों में विभिन्न समूहों के सदस्यों के बीच सम्पर्क से समूहों के एक-दूसरे के प्रति पूर्वाग्रह को कम करने में कुछ मदद मिल सकती है। यह विभिन्न रूपों में हो सकता है, जैसे समावेशी कक्षाएँ, कार्यशालाएँ या नाट्य प्रस्तुतियाँ। हालाँकि, शिक्षकों के रूप में, कुछ व्यावहारिक कारक हैं जिन पर हमें विचार करने की आवश्यकता है।

एक तो, हम विशिष्ट परिवेशों में काम करते हैं; हमारी कक्षाओं में विभिन्न समूहों के सदस्यों के बीच 'सम्पर्क' के लिए दबाव डालना असम्भव होता है यदि वे समूह पहले से ही निकटतम क्षेत्र में मौजूद नहीं हैं। मैं वर्तमान में एक बहुत विशिष्ट आबादी वाले एक छोटे से ग्रामीण स्कूल में काम करता हूँ - वहाँ धार्मिक और भाषायी एकरूपता है, लेकिन जाति और जेंडर के सन्दर्भ में विविधता है। इस स्थिति में, उदाहरण के लिए, मैं मुस्लिम, हिन्दू और ईसाई विद्यार्थियों के बीच बातचीत नहीं करवा सकता क्योंकि कक्षा में केवल हिन्दू विद्यार्थी हैं।

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, इसके विकल्प मौजूद हैं - कार्यशालाएँ, स्कूल के बाद के सत्र आदि। हालाँकि, अधिक पाठ्येतर कार्य करने के लिए कभी-कभार ही समय उपलब्ध होता है, विशेष रूप से उन माता-पिता के दबाव के कारण, जिनकी अपने बच्चों के लिए शैक्षणिक आकांक्षाएँ होती हैं और एक शैक्षणिक और प्रशासनिक व्यवस्था के कारण जो परीक्षा के प्रदर्शन को प्राथमिकता देती हैं। अधिकांश स्कूलों में संसाधन भी सीमित होते हैं, जिसका अर्थ है कि कई विकल्प अधिकांश शिक्षकों की पहुँच से बाहर होते हैं।

इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए, मैंने 'विस्तारित सम्पर्क' की दिशा में काम करने का विकल्प चुना, यानी, मैं मीडिया के माध्यम से सम्पर्क जोड़ने की कोशिश करता हूँ - ऐसी कहानियों के माध्यम से अन्य संस्कृतियों और समूहों के लोगों से सम्पर्क जोड़ना, जिनमें विद्यार्थी ख़ुद को डुबो सकते हैं। मैंने सचित्र पुस्तकों और बाल साहित्य के साथ काम किया। हालाँकि यह एक ऐसा संसाधन है जिस पर कुछ ख़र्च करने की आवश्यकता हो सकती है, लेकिन तुलनात्मक ख़र्च लैपटॉप और टैबलेट या प्रोजेक्टर की तुलना में बहुत कम होता है। साथ ही, यह एक ऐसा संसाधन है जो कभी समाप्त नहीं होता या उसके उन्नयन या रखरखाव की आवश्यकता नहीं होती है। इसके अतिरिक्त, सचित्र पुस्तकें और बाल साहित्य (और उनका उपयोग करने वाली कोई गतिविधि), सामान्य तौर पर, भाषा शिक्षण के 'पाठ्यचर्या सम्बन्धी' लक्ष्यों में भी योगदान करते हैं।

कुछ अनुभव

पिछले साल, मैंने कक्षा-3, 4 और 5 के साथ सप्ताह में दो या तीन पीरियड का उपयोग विद्यार्थियों को विभिन्न सचित्र पुस्तकें ज़ोर से पढ़ने और उनका उपयोग जाति, जेंडर, धर्म, कुछ खोने जैसे मुद्दों के बारे में बातचीत शुरू करने के लिए किया है। यह साल बेहद फ़ायदेमन्द रहा है और इसके परिणामस्वरूप कुछ सार्थक संवाद सम्भव हुए हैं और कई महत्त्वपूर्ण सवाल उठे हैं। लेकिन इस अनुभव के कुछ मुख्य अंशों पर चर्चा करने से पहले, मैं इस तरह के प्रोजेक्ट के लिए कहानियों और पुस्तकों का उपयोग करने के कुछ अनूठे लाभों पर ध्यान केन्द्रित करना चाहूँगा।

जब छोटे विद्यार्थियों की एकाग्रता अवधि की बात आती है तो सचित्र पुस्तकें एक विशिष्ट आवश्यकता पूरी करती हैं। वे एक निश्चित ध्यान और एकाग्रता की माँग करती हैं (स्क्रीन पर कुछ देखने से अलग) जहाँ कुछ काम श्रोता/पाठक को करना होता है। ध्यान और सीखने का यह कौशल स्वयं सीखने के कौशल की बुनियाद तैयार करने के लिए एक मूलभूत घटक है जो अब भी कक्षाओं और हमारी शैक्षिक प्रणाली में प्रासंगिक है। हालाँकि, सचित्र पुस्तकें पाठ्यपुस्तकों की तुलना में कम समय में ऐसा करती हैं, क्योंकि आयु-उपयुक्त भाषा के साथ, छवियों वाली सचित्र पुस्तकें पाठक का ध्यान खींचने के साथ-साथ कहानी सुनाने में भी योगदान देती हैं। पाठ और छवि का संयोजन पाठक को दृश्य संकेत और सन्दर्भ उपलब्ध कराता है, लेकिन फिर भी कल्पना के लिए गुंजाइश छोड़ता है। यह पाठक को केवल निष्क्रिय रूप से कहानी ग्रहण करने की बजाय उसमें डूब जाने के लिए प्रोत्साहित करता है।

सचित्र पुस्तकों की एक शृंखला का उपयोग करके, मैं जेंडर या जाति जैसे मुद्दों से लगातार जुड़ने में सक्षम था, जिनके लिए बहुत अधिक तालमेल और प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है और वह भी बच्चों को ऊब महसूस कराए बिना।

इसके अलावा, एक कहानी की किताब पढ़ने से हमें कुछ बिन्दुओं पर ठहरने का मौक़ा मिलता है, जिससे किताब का या किताब में दी गई छवियों का ज़िक्र करते समय भी चर्चा जारी रहती है। हम कहानी के भीतर आगे-पीछे जा सकते हैं और कहानी के प्रवाह को तोड़े बिना उन चीज़ों का आसानी से उल्लेख कर सकते हैं जो पहले घटित हो चुकी हैं, जो शायद मीडिया के अन्य रूपों के मामले में हमेशा सम्भव नहीं होता है।

हमारी कक्षा से उदाहरण

मेरा नाम गुलाब है नामक एक कहानी है, जिसमें लड़कों का एक समूह कहानी के मुख्य पात्र (गुलाब) को उसके पिता के पेशे (एक सफ़ाईकर्मी) के कारण चिढ़ाता है। कक्षा-5 में इस कहानी को पढ़ते हुए बातचीत में पता चला कि यहाँ भी एक विद्यार्थी दूसरे को उसके उपनाम (उसकी जाति का सूचक) को तोड़-मरोड़ कर उसे चिढ़ाता है। कहानी सुनने पर कुछ लड़कों ने टिप्पणी की कि यह कक्षा के विद्यार्थी को चिढ़ाए जाने के समान ही था।

इस उदाहरण में, जो लड़का चिढ़ा रहा था उसका कोई विशेष दुर्भावनापूर्ण इरादा नहीं था, उसके लिए यह बस मज़ाक का एक और रूप था जो वे सभी नियमित रूप से करते रहते थे। हालाँकि, पीड़ित विद्यार्थी इसे दिल पर ले रहा था लेकिन कुछ बोलने के लिए स्वयं को पर्याप्त सशक्त महसूस नहीं कर रहा था।

ये मुद्दे (जाति और जेंडर-आधारित असमानताएँ) सभी विद्यार्थियों के जीवन की जीवन्त वास्तविकताएँ हैं। कुछ मामलों में और कुछ विद्यार्थियों के लिए, वे इस वास्तविकता से बेहद परिचित होते हैं। यहाँ तक कि जहाँ वे सचेत रूप से इन मुद्दों से अवगत नहीं होते हैं, वहाँ भी ये उनके जीवन में प्रभाव रखते हैं। कक्षा में यह बातचीत करने से न केवल मैं जाति के बारे में बात करने में सक्षम हुआ, बल्कि मैं कक्षा की उस गतिशीलता को समझने में भी सक्षम हुआ जिसके बारे में मुझे जानकारी नहीं थी। इससे मैं कुछ ऐसे क़दम उठा सका जिससे छेड़छाड़ के शिकार बच्चे को अधिक सहज महसूस हुआ। यह एक ऐसा कारक है जिससे उसके आत्मविश्वास के स्तर में भी और बाद में, कक्षा में उसके प्रदर्शन में भी उल्लेखनीय रूप से बदलाव आया।

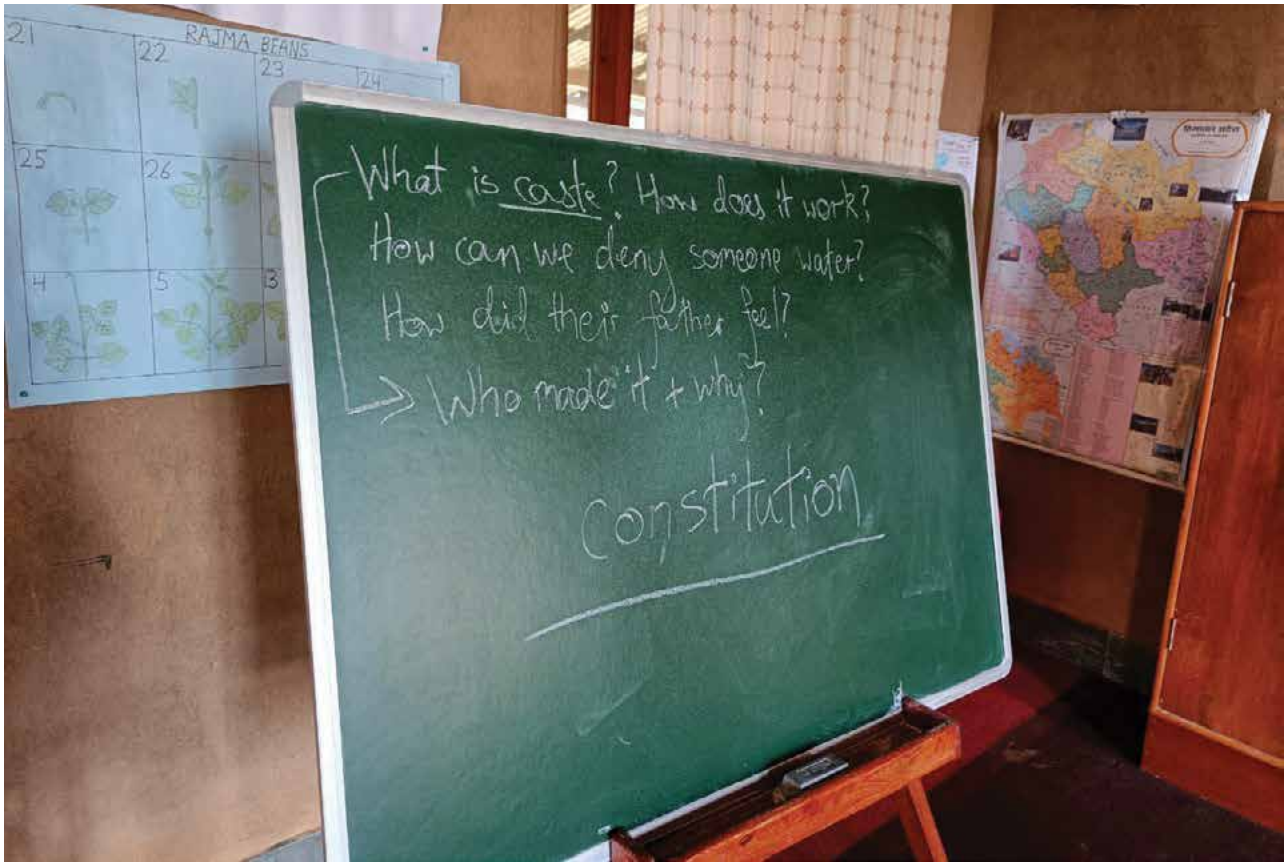

चित्र-1 : *कक्षा के दौरान उभरे कुछ प्रश्न और अन्तर्दृष्टियाँ।*

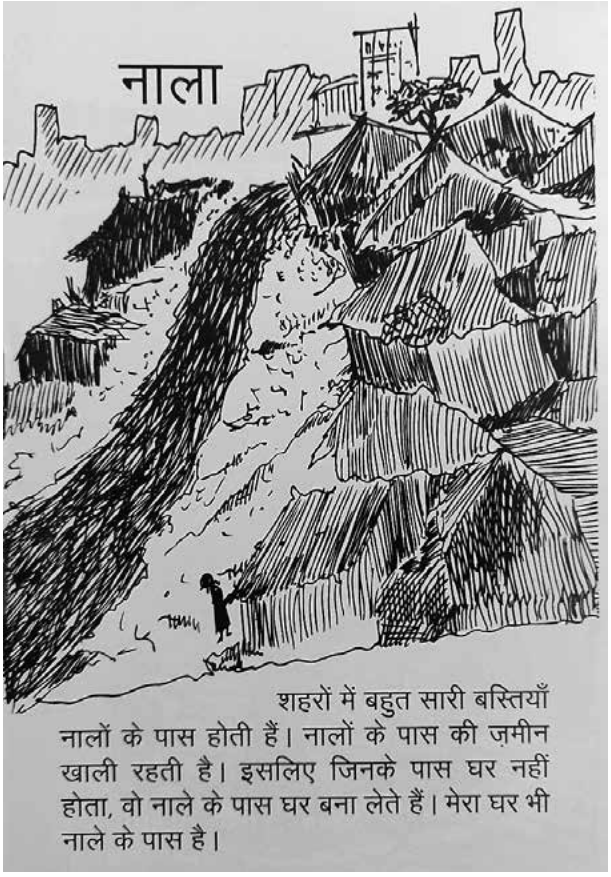

चित्र-2 : *नाला, मुस्कान, पढ़ो रखो शृंखला।*

कहानी सुनाने से प्राप्त अन्तर्दृष्टि

हम कहानी सुनाने के द्वारा अपने विद्यार्थियों के जीवन के बारे में बहुत कुछ सीखते हैं - कहानियाँ प्रासंगिक होती हैं और हमारे द्वारा पारम्परिक रूप से उपयोग की जाने वाली पाठ्यपुस्तकों की तुलना में हमारे आन्तरिक परिदृश्य को बहुत अधिक उभारती हैं। एक अन्य उदाहरण लीजिए, हम *आई विल सेव माई लैंड* नामक एक कहानी पढ़ रहे थे, जिसकी मुख्य पात्र एक युवा लड़की है। वह अपने पिता और दादी के साथ बातचीत करती है, लेकिन उसकी माँ का कोई उल्लेख नहीं है। कई विद्यार्थियों ने इसके बारे में पूछा - माँ कहाँ होगी आदि। मैंने उनके अनुमानों को प्रोत्साहित किया लेकिन इस मामले में कोई निश्चित बात नहीं की।

जब हमने कहानी पढ़ना समाप्त किया, जो मेरे लिए, जेंडर, जाति और भूमि के बारे में एक कहानी थी, कक्षा में से एक विद्यार्थी ने आँसू भरी आँखों के साथ मुझसे कहा कि 'माँ बुरी इन्सान है जो अपने बच्चे को छोड़कर दूर चली गई।' चूँकि हमने कभी यह निष्कर्ष नहीं निकाला था कि पात्र की माँ के साथ क्या हुआ था, मैं अपने विद्यार्थी की उग्रता से आश्चर्यचकित था। कक्षा के बाद, मैंने उस विद्यार्थी से बात की और पता चला कि उसकी माँ पिछले कुछ महीनों से एक अन्य ज़िले में काम कर रही थी और बच्चे घर पर बहुत खोए-खोए और परित्यक्त महसूस कर रहे थे। यह कुछ ऐसा था जिसके बारे में हम शिक्षक, न तो जानते थे, न ही हमने सुना था और न ही हमने इसके बारे में सोचा था कि इसका बच्चों पर क्या प्रभाव पड़ सकता है।

बच्चा जो दर्द महसूस कर रहा था वह विभिन्न रूपों में प्रकट हो रहा था, जैसे कि खेल के मैदान पर कुछ हिंसक आवेग जिन पर हम तब तक पूरी तरह से ग़लत तरीक़ों से ध्यान दे रहे थे। ऐसा नहीं है कि इस रहस्योद्घाटन से तुरन्त बच्चे के लिए कोई सफल समाधान निकला, लेकिन इससे हमें बच्चे की बेहतर ढंग से सहायता करने में मदद मिली।

इस तथ्य से भी इन्कार नहीं किया जा सकता है कि संवेदनशीलता के साथ चुनी गई कहानियाँ बच्चों को नए अनुभवों के सम्पर्क में आने के अवसर उपलब्ध कराती हैं जिससे बच्चों का दिमाग़ खुलता है। उदाहरण के लिए, *नाला* नामक लघु कहानी (एक भारतीय शहर की बस्ती के एक बच्चे द्वारा लिखित) पढ़ते समय हमें एक खुले भूमिगत नाले के बगल में रहने और यहाँ तक कि इसकी सीमाओं को शौचालय के रूप में उपयोग करने का अनुभव समझ आया। कक्षा में सभी विद्यार्थियों ने घृणा व्यक्त की (हालाँकि कहानी में प्रयुक्त भाषा से उनका भरपूर मनोरंजन भी हुआ)। लेकिन कहानी से प्रेरित होकर हम दो अनजाने अनुभवों के बारे में गहन चर्चा करने में सक्षम हुए - रहने के लिए घर न होना और उपयोग के लिए शौचालय न होना। हमने इस बारे में बात करते हुए काफ़ी समय बिताया कि कैसे कुछ लोगों को इन बेहद ख़तरनाक और अस्वास्थ्यकर परिस्थितियों में रहना पड़ता है। *मेरा नाम गुलाब* है कहानी के मामले में, अधिकारियों की सहायता के अभाव में उनका काम और भी ख़तरनाक हो जाता है। हम इस सवाल पर भी पहुँचे कि हमारे इलाक़ों में और हमारे घरों में इस तरह का काम कौन करता है। हालाँकि निश्चित रूप से यह कहानी का मुख्य विषय नहीं था, फिर भी इससे हमारे गाँव की बनावट, भूगोल और सामाजिक संरचनाओं के बारे में दिलचस्प बातचीत शुरू हुई।

जादुई मच्छी, एक हल्की-फुल्की कहानी है जिससे कुछ अद्भुत, शैक्षणिक रूप से समृद्ध बातचीत उभरकर सामने आई। यह कहानी चुनने का उद्देश्य कुछ ऐसी भारी कहानियों और मुद्दों के बीच एक विराम प्रदान करना था जिनके बारे में हम पढ़ रहे थे। इस कहानी में, एक बूढ़ी औरत और उसकी बेटियाँ अपनी धरती पर ख़ुशियाँ लौटाने की कोशिश में लग जाती हैं। इस हल्की-फुल्की फंतासी को पढ़ते हुए कक्षा की एक लड़की बोल उठी, "आमतौर पर लड़कियाँ इतनी दूर अकेले यात्रा नहीं कर सकतीं, ये लड़कियाँ यह सब कैसे कर पाती हैं?" इससे एक दिलचस्प चर्चा छिड़ गई, और बाद में लड़कियों और लड़कों द्वारा घर पर किए जाने वाले काम की मात्रा के बारे में थोड़ी अधिक संगठित बहस में बदल गई। इसके कुछ मुख्य अंश थे : हमारे ज़िले में भूमि से सम्बन्धित कानूनों के बारे में सीखना; कक्षा में कुछ लड़कियों का ऐसे काम करने या वह होने की इच्छा व्यक्त करना जो उन्हें लगता है कि आमतौर पर उनके लिए 'वर्जित' हैं; कक्षा में कुछ लड़कों का घर के सभी सदस्यों द्वारा किए जाने वाले कार्यों की सूची बनाना और अनिच्छा से स्वीकार करना कि उनकी माताएँ और बहनें कहीं अधिक मेहनत करती हैं।

क्या कारगर होता है और क्या नहीं

पिछले वर्ष के दौरान, मैंने पाया है कि कुछ ऐसी प्रक्रियाएँ हैं जिन्हें हम अपनी योजना और कक्षाओं में लागू कर सकते हैं, जिनसे कक्षा में बातचीत के दौरान समृद्ध चर्चाएँ और खुलापन सम्भव होता है।

मैंने कहानियों से अपने निजी जुड़ाव के कारण संघर्ष किया है - कुछ ऐसी किताबें और कहानियाँ हैं जिन्होंने मुझे बहुत प्रभावित किया है और किसी विशेष कहानी के अपने विद्यार्थियों पर पड़ने वाले प्रभाव को लेकर मैं अत्यधिक उम्मीद के साथ कक्षा में जाता हूँ। अक्सर, उस कहानी पर विद्यार्थियों से वह प्रतिक्रिया प्राप्त नहीं होती जो मैं 'चाहता' हूँ और इससे समूह के साथ निष्पक्ष रूप से जुड़ने की मेरी क्षमता प्रभावित होती है। एक निश्चित दूरी बनाए रखना और विद्यार्थियों को बोरियत

या नापसन्दगी व्यक्त करने की अनुमति देना, दीर्घकालिक रूप से, रचनात्मक संवादों का एक प्रमुख घटक होता है। इसका मतलब यह नहीं है कि उन मामलों में कोई आदान-प्रदान नहीं होता है। बातचीत इस बारे में हो सकती है कि उन्हें क्या पसन्द है या क्या नापसन्द। शिक्षक के रूप में मुझे भी यह व्यक्त करने के लिए स्वतंत्र महसूस करना चाहिए कि मुझे क्या पसन्द है और क्यों, लेकिन अपने विद्यार्थियों को किसी बात पर राज़ी करने की कोशिश किए बिना। क्योंकि, विद्यार्थियों और शिक्षकों के बीच शक्ति का असन्तुलन होता है। ऐसा करने से बच्चों के समूह का कम-से-कम एक वर्ग मुझे वही बताएगा जो मैं सुनना चाहता हूँ और उसकी प्रतिक्रियाओं में कम ईमानदारी होगी।

इस शिक्षण-विधि को आज़माते समय ध्यान में रखने योग्य मुख्य कारकों में से एक है कहानियों/ कहानी की किताबों का चयन। भाषा उम्र और स्तर के अनुरूप होनी चाहिए, ख़ासकर तब जबकि बच्चे स्वयं कहानी पढ़ रहे हों। यदि कहानी को उन्हें पढ़कर सुनाया जा रहा है तो स्तर ऊँचा हो सकता है क्योंकि स्पष्टीकरण दिए जा सकते हैं लेकिन बहुत अधिक जटिलता और ग़ैर-जरूरी चीज़ें समझाने के लिए बहुत अधिक रुकावटें लाने से कहानी सुनने के अनुभव का प्रभाव हल्का पड़ जाता है। इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि कहानी की सामग्री और सन्दर्भ प्रासंगिक होने चाहिए।

हमें ऐसी कहानियाँ खोजने की ज़रूरत है जो पाठक के स्वयं के जीवन और अनुभव का दर्पण होने और नए संसारों में खुलने वाली एक खिड़की होने के बीच में कहीं हों। मुस्कान और तूलिका बुक्स जैसे प्रकाशकों के पास ऐसी कई किताबें उपलब्ध हैं जो विभिन्न भारतीय सन्दर्भों में रची हुई हैं और विदेशी प्रकाशनों की तुलना में अधिक प्रासंगिक हैं। जब सही कहानी उपलब्ध न हो तब भी यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम अपने विद्यार्थियों को पाठ के साथ और उसके विपरीत, दोनों तरह से पढ़ना सिखाएँ।

शिक्षक को हल्की-फुल्की कहानियों को भारी कहानियों (जीवन, जाति जैसे जटिल मुद्दों पर आधारित) के साथ एकीकृत करने का प्रयास करने की आवश्यकता है, जो आलोचनात्मकता और प्रश्न पूछने के साथ ही संवाद और सोच-विचार करने की भावना को भी जीवित रख सके।

References

I Will Save My Land, written by Rinchin, illustrated by Sagar Kolwankar, published by Tulika Books

Mera Naam Gulab Hai [My Name is Gulab], by Sagar Kolwankar, published by Tulika Books

Naala, written by Shivani, illustrated by Kanak Shashi published by Muskaan Publications

Jadui Macchi, written by Chandrakala Jagat, illustrated by Shakuntala Kushram, published by Tulika Books

Publishers of Indian Children's Literature

Adivaani, Duckbill Books, Eklavya Publications, Ektara, Kalpavriksh Children's Books, Karadi Tales, Katha, Muskaan Publication, Navayana Publishing, Pickle Yolk Books, Pratham Books, Tara Books, Tulika Books, Young Zubaan

ध्रुव देसाई पिछले कुछ वर्षों से देश के विभिन्न हिस्सों में विभिन्न प्रकार के स्कूलों में पढ़ा रहे हैं। वे वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय स्थित इंटरेस्ट ग्रुप फ़ॉर डायलॉग, फ्रेटरनिटी एंड जस्टिस से जुड़े हुए हैं। वे स्वयं के साथ-साथ अपने विद्यार्थियों के लिए सचित्र-पुस्तकों और खेलकूद में रुचि रखते हैं। उनसे *dhruva.desai13@apu.edu.in* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : सुबोध जोशी **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

कला के माध्यम से कहानी कहना

अभिलाषा अवस्थी

कहानियों में बच्चों को मज़ा आता है और उनके ज़रिए वे पात्रों की दुनिया में सहजता से प्रवेश कर जाते हैं। जब कहानी कहने के लिए कला को चुना जाता है तो वह इस प्रक्रिया को गहरा कर सकती है और बच्चों के मन पर ऐसी छाप छोड़ सकती है कि वे एक लम्बे समय तक उस कहानी के साथ रह सकते हैं क्योंकि कला के माध्यम से किया गया संवाद भावपूर्ण और संवेदनात्मक होता है। कला के माध्यम से कहानियाँ सुनाने की इस प्रक्रिया में बच्चों को शामिल करने के अनेक तरीक़े हैं।

जब एक बच्चा कहानी सुनाने के लिए कला का प्रयोग करता है

चित्र-1 में बच्ची अपनी ड्रॉइंग के माध्यम से एक कहानी कहना चाहती है। यह 'पाँच मुँह वाली' (छात्रा के द्वारा ही दिया गया नाम) पेंसिल उसकी ड्रॉइंग में दिख रही है। उसका कहना था कि चूँकि उसकी यह पेंसिल 'पेड़' थी, सो अगर उसकी एक नोक टूट भी जाती, तो उसके स्थान पर दूसरी उग आती - यह भाषा द्वारा सम्भव हुआ। इस कलाकृति के इर्द-गिर्द लिखी गई कहानी अब लड़की की दुनिया की गहरी समझ हासिल करने का एक द्वार खोलती है। उसकी यह कहानी पेंसिल के साथ उसके अनुभव से बनी है और जिसे वह अपनी कल्पना के सहारे एक अलग मोड़ देती है। यही नहीं, इस कलाकृति में प्रयुक्त विभिन्न रंग इस कल्पना को यूँ सँजोते हैं कि उसकी भावनाएँ और उसकी रंगत काग़ज़ पर उतर आते हैं और यह रेखांकन उसकी कल्पना का एक अधिक मूर्त उत्पाद बन जाता है।

जब शिक्षिका बच्चों को कहानी बनाने में मदद करने के लिए कला का उपयोग करती है

अपनी कहानियों को कला के माध्यम से व्यक्त करते वक़्त बच्चे कहानी को परिभाषित करने के लिए शब्दों, वाक्यांशों और अवधारणाओं के बारे में सोचना शुरू

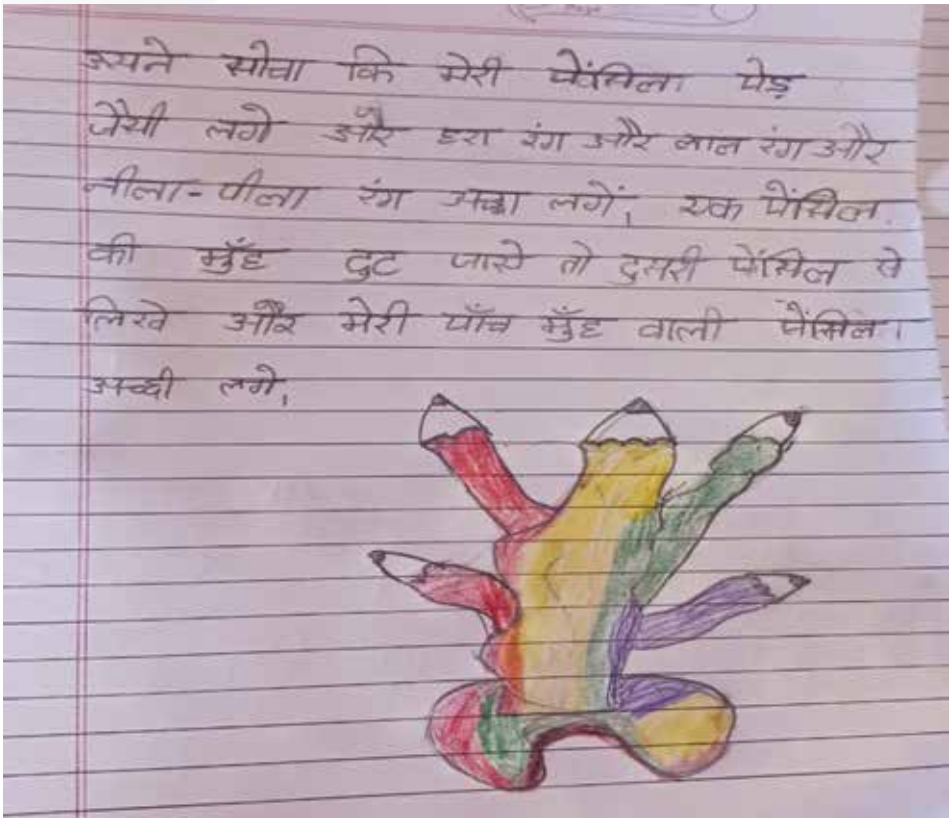

चित्र-1 : *एक छात्रा की कल्पना में एक अनोखी पेंसिल।*

कर देते हैं। इसमें एक मौजूदा कलाकृति के द्वारा कक्षा में कहानी सुनाता शिक्षक भी अपना योगदान दे सकता है। कोई कलाकृति दिखाते समय शिक्षिका बच्चों से इस बारे में बात करने के लिए कह सकती है कि वे क्या देखते हैं या अनुभव करते हैं, जैसे कि यहाँ क्या हो रहा है? लोग क्या कर रहे हैं? वे कैसा महसूस कर रहे हैं? क्या रंग कुछ बोल रहे हैं?

ऐसे सवाल पूछे जाने पर बच्चे विभिन्न सम्भावनाओं के बारे में सोचने लगते हैं। वे जो कहानी बुनते हैं उसमें तर्क की गुंजाइश होती है और यह तर्क इन्हीं निर्देशात्मक प्रश्नों से आता है जो मनोदशा, तारतम्य, घटनाक्रम आदि की ओर इंगित करते हैं।

इसके अलावा, इस कला की विविध व्याख्याएँ हो सकती हैं। कोई भी सही या ग़लत नहीं होता; उत्तर सम्भावनाओं की एक विस्तृत रंगोली में समाए होते हैं, विभिन्न औचित्यों के अनुकूल होते हैं। अपना दृष्टिकोण देते हुए शिक्षक भी इस प्रक्रिया में भागीदार बनते हैं। **चित्र-2**, **3** और **4** कक्षा में दिखाई गई हवाई जहाज़ वाली पेंटिंग पर विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाएँ हैं। उस पेंटिंग में एक बड़ा पेड़, कई लोग, जानवर और पक्षी भी थे।

कहानियों से हमें चीज़ों को विभिन्न कोणों से देखने में मदद मिलती है। जब हम किसी कहानी को प्रस्तुत करने के लिए किसी कलाकृति का उपयोग करते हैं और कहानी में दृष्टिकोण पेश किए जाते हैं, तो हमारी कल्पना का उपयोग करने के

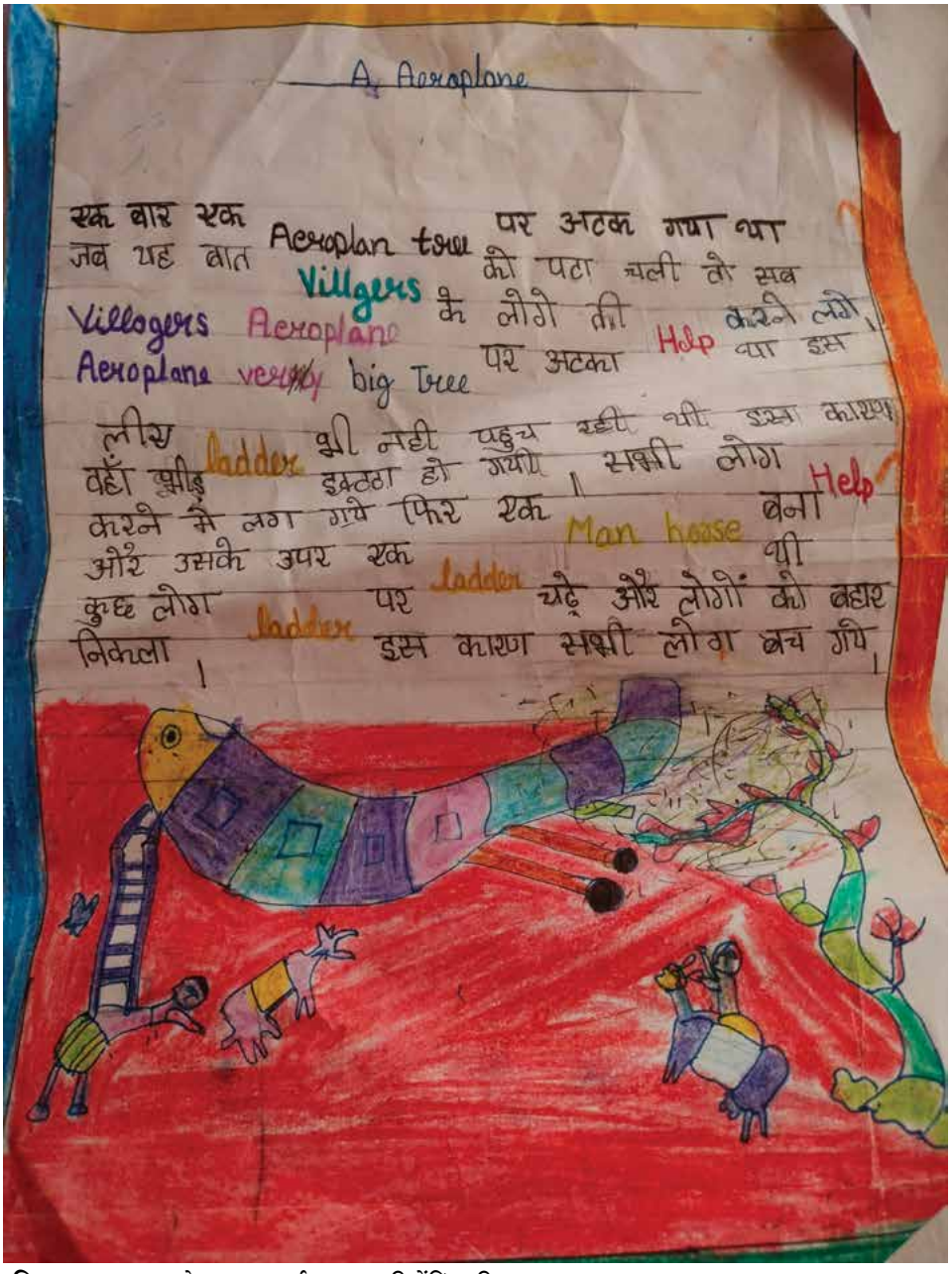

चित्र-2 : *एक छात्र के द्वारा 'हवाई जहाज़' की पेंटिंग की व्याख्या।*

कई तरीक़े सामने आ सकते हैं। **चित्र-1** में, हम देखते हैं कि बच्चे ने एक पेड़ के रूप में ख़ुद की कल्पना करके एक अलग ही दृष्टिकोण अपनाया है। ऐसी नुमाइन्दगी कहानी को और ज़्यादा निजी बनाती है। **चित्र-2** में, जब हवाई जहाज़ पेड़ पर होता है तो बच्चा पेड़ की भावनाओं का वर्णन करता है। यहाँ, व्याख्याओं की ऋणी होने के नाते कलाकृति ऐसी सम्भावना को जन्म देती है जिसमें बहुगुना दृष्टिकोणों के ज़रिए इसका अन्वेषण करते हुए रचनात्मक रूप से सोचने के अनेक रास्ते खुलते जाते हैं।

बच्चों के ये ब्योरे जताते हैं कि वे अपनी कहानी में तर्क गढ़ रहे हैं। **चित्र-2**, कलाकृति में दिखाई देने वाले उस मानव-घोड़े के महत्त्व को उजागर करता है जिसने सबको बचाया। **चित्र-3** में दिखाई गई कहानी, कहानी में एक और पात्र (नायक) जोड़ती है, जिससे कहानी का नज़रिया पूरी तरह से बदल जाता है। **चित्र-3** में दर्ज अवलोकन का एक अन्य तत्व चित्र के चारों ओर पसरे उन छोटे तत्वों पर एकाग्र होता है जो कहानी का मिज़ाज बदल सकते हैं। कुत्ते और गाय के छोटे-छोटे ब्योरों से कहानी में रहस्य का तत्व आता है। यह सूक्ष्मतम विवरण के आस-पास सम्भावना की एक महीन रेखा का चित्रांकन करते बच्चे की एक मिसाल के बतौर कार्य करता है। जब सभी पात्रों का अध्ययन समान गहनता से किया जाता है, तो यह कहानी के संशोधन के अलग-अलग रास्ते खोल सकता है और कहानी की अन्य सम्भावनाएँ तलाशने का आग्रह कर सकता है।

जब बच्चे कहानी में सांस्कृतिक ज्ञान की परत चढ़ाने के लिए कला का उपयोग करते हैं

बच्चों को बाघ की पेंटिंग दिखाई गई (पश्चिम बंगाल का एक पट्टचित्र) जिसमें दिखाया गया है कि बाघ के दो शरीर और एक सिर है। **चित्र-5** में, एक बच्चे ने चित्र की विवेचना की है और फिर इस पर एक कहानी बुनते हुए, बाघ का मानवीकरण किया गया और उसकी उलझन को सामने लाया गया है जब उसे पता चलता है कि वह तो अपनी परछाईं से ही लड़ रहा है। कुछ बच्चों ने जब चित्र को देखा तो उन्हें लगा कि बाघ का चेहरा सूरजमुखी के बिन्दुओं से बना है या उसकी जीभ, छिपकली की जीभ सरीखी है। दरअसल, ये उनके अपने सांस्कृतिक परिवेश के निहितार्थ हैं।

बच्चे का चित्र (**चित्र-5**) बड़े बाघ की छवि से हटकर बकरियों पर एकाग्र होता है। यह कलाकृति में दिखाई देने वाले पात्र के चारित्रिक महत्त्व को बदल देता है और बच्चा यहाँ अपनी दृष्टि ले आता है। बकरियों को खा जाने की बाघ की प्रवृत्ति को नाटकीय ढंग से उजागर किया गया है। कहानी का शीर्षक बच्चे द्वारा कहानी में इन पात्रों को दिए गए महत्त्व को दर्शाता है। इसीलिए, कहानी बनाने के लिए कला पिछले सांस्कृतिक ज्ञान को याद करने और उसे लागू करने की सम्भावना प्रदान करती है।

कहानी कहने के फ़ायदे

- जब कला को एक माध्यम के बतौर प्रयोग में लाया जाता है, तो अपनी कहानियाँ बुनने के लिए बच्चों को तार्किक

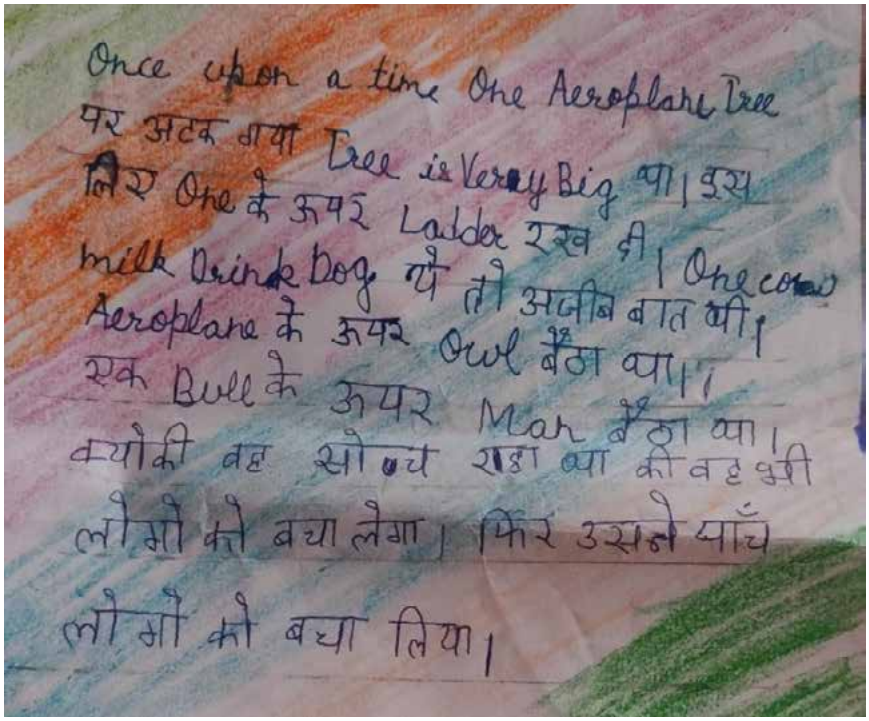

चित्र-3 : *'हवाई जहाज़' पेंटिंग पर एक अन्य छात्र द्वारा बनाई गई एक कहानी।*

सोच पर दृढ़ भरोसा करना पड़ता है। नतीजतन, इससे अनुक्रम का अनुशासन बढ़ता है जो कि एक वांछित सीख है। कला बच्चों को पात्रों या परिदृश्य को देखने में अधिक कल्पनाशील बना सकती है क्योंकि उस कृति में प्रचुर सम्भावनाएँ निहित होती हैं। इससे बच्चों में रुचि जगने के साथ-साथ कहानी याद रखने में भी उन्हें मदद मिलती है।

- जब कोई बच्चा किसी कलाकृति के माध्यम से अपनी कहानी व्यक्त करता है तो उसे एक परिप्रेक्ष्य देने की कोशिश में, भाषा का प्रयोग पूरक बन जाता है। यह उसे सार्थक और दिलचस्प भी बनाता है।

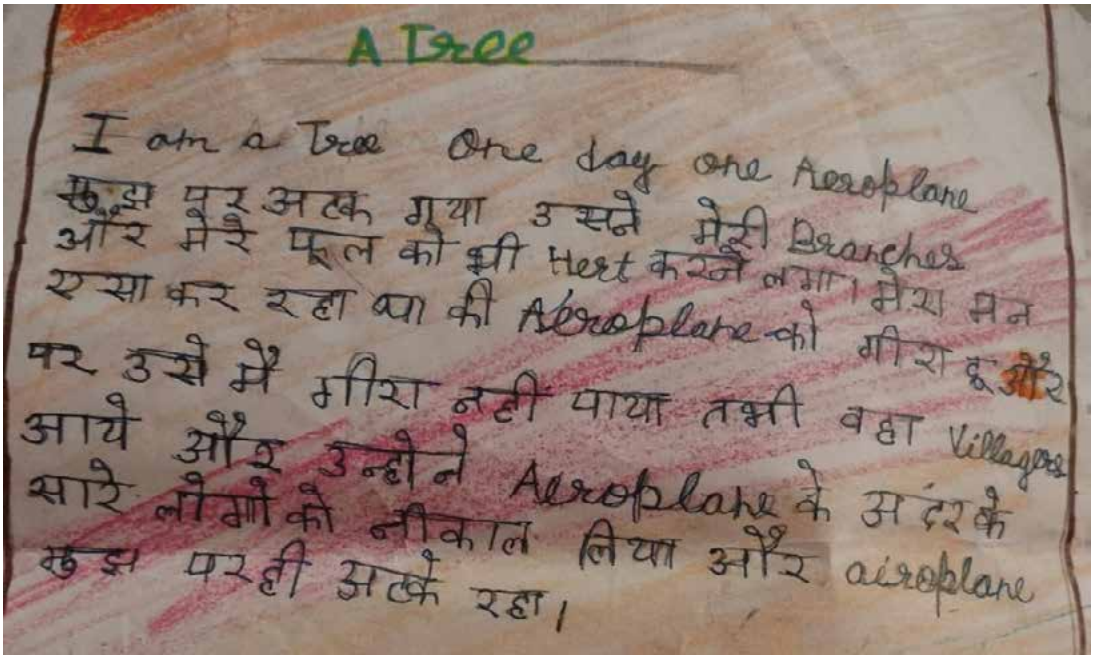

चित्र-4 : *'हवाई जहाज़' पेंटिंग पर एक छात्र की कल्पना की एक और मिसाल।*

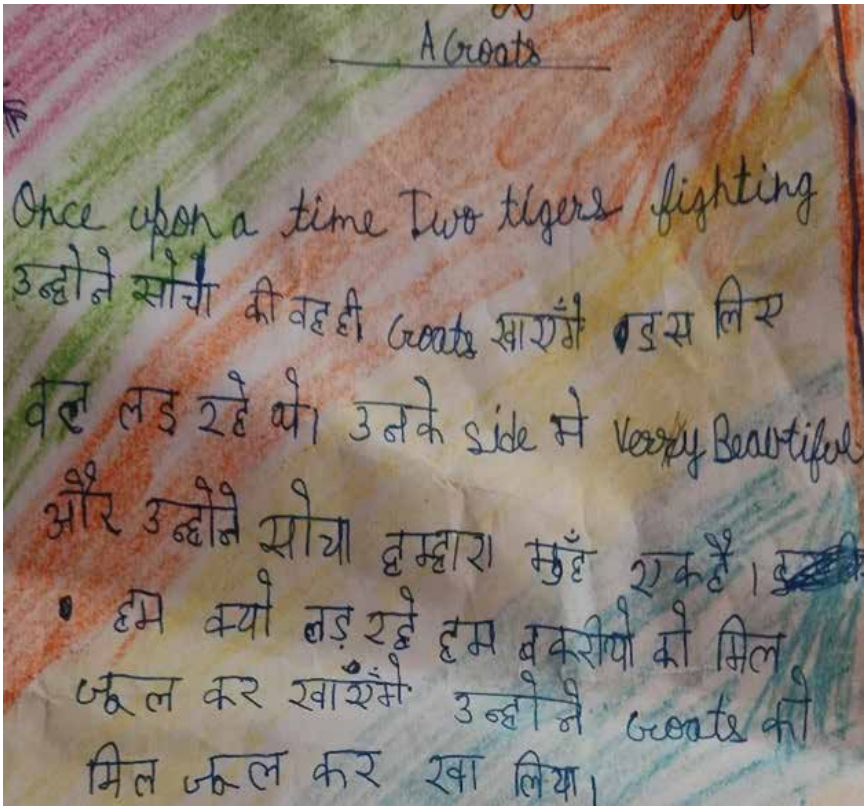

चित्र-5 : *कक्षा में दिखाई गई 'बाघ' पेंटिंग पर एक छात्र की कहानी।*

- कहानी के मिज़ाज, लहजे, कथाक्रम और परिवेश के निर्माण के दौरान उनके द्वारा कलाकृति के इंगितों - रंग, तकनीक, अभिव्यक्ति के उपयोग से उनका पूर्वानुमान कौशल और ज़्यादा निखर आता है।

कक्षा में कलाकृति का प्रयोग

कक्षा में कलाकृति का उपयोग करते समय शिक्षक इन उद्देश्यों को ध्यान में रख सकते हैं :

क. किसी कलाकृति का उपयोग करते समय, बच्चे कहानी के विभिन्न तत्वों (तर्क, ढाँचे, जीवन-मूल्यों, नज़रियों, पात्रों और कथानक) का विकास कर सकते हैं।

ख. किसी कलाकृति की व्याख्या से भाषा की ज़रूरत पैदा हो सकती है।

किसी कलाकृति के माध्यम से कहानी पढ़ाने से अटकलों की व्यापक सम्भावनाएँ खुलती हैं। जब बच्चे किसी पेंटिंग को देखते हैं, तो वे कलाकृति में दिखाई देने वाले विभिन्न तत्वों की पड़ताल करते हुए तर्क का निर्माण कर सकते हैं। कुछ सम्भावनाएँ प्रस्तुत की जा सकती हैं और उनकी तार्किक व्याख्याओं पर चर्चा की जा सकती है। कक्षा द्वारा किसी भी कलाकृति की कहानी का अध्ययन शुरू करते वक़्त उसकी सम्भावनाएँ अनन्त होती हैं।

अगला क़दम यह हो सकता है कि बच्चे कलाकृति से प्रेरित होकर अपनी ही एक कहानी विकसित करें। उन्हें इस कहानी के लिए शब्दावली, यानी नामों, रंगों इत्यादि की आवश्यकता होती है। भाषा सीखने के उद्देश्य से, इसमें वाक्य विन्यास शामिल किए जा सकते हैं, उदाहरण के लिए, 'वहाँ एक _____ था'।

अगले चरण में आगे बढ़ते हुए, उन्हें निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देकर कलाकृति पर कहानी लिखने की एक रूपरेखा दी जा सकती है :

क. कहानी का मिज़ाज क्या है?

ख. घटनाक्रम क्या है?

ग. कितने पात्र हैं? उनके नाम क्या हैं? उनकी विशेषताएँ क्या हैं?

घ. कहानी कहाँ घटित हो रही है?

ड. क्या कहानी में कोई संघर्ष भी है? इसका समाधान कैसे किया जाता है?

फिर, कहानी के बारे में लिखने के बाद उनसे इसे चित्र के रूप में प्रस्तुत करने के लिए कहा जा सकता है। उनके द्वारा चुने गए कलात्मक विकल्प उन तत्वों को परिभाषित करेंगे जिन्हें वे सामने लाना चाहते हैं। उदाहरण के लिए, यदि वे एक ग़ुस्सैल कछुआ दिखाते हैं, तो वे उसके हाव-भाव उसी हिसाब से दर्शाएँगे भी। ठीक इसी तरह, उनके द्वारा चुने रंग भी उस रंगत को बढ़ाएँगे जिसका ज़िक्र उन्होंने अपनी कहानी में किया होगा।

निष्कर्ष

कुल मिलाकर, जब हम कहानी कहने के लिए कला का उपयोग करते हैं, तो यह बच्चों के दिमाग़ पर एक मज़बूत छाप छोड़ती है, ख़ासकर उन सीखने वालों के दिमाग़ पर जो मौखिक कहानी के चित्रांकन के साथ बेहतर सीखते हैं। कला का उपयोग न केवल सम्भावनाओं की एक विशाल खिड़की खोलता है बल्कि कल्पनाओं को प्रखर व पुष्ट करने के लिहाज़ से अपरम्परागत तर्क की जगह भी बनाता है। चूँकि कला एक संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है, सो बच्चे बहुलवाद के बारे में सीखते हैं और कलाकृति पर अपनी-अपनी सांस्कृतिक व्याख्याएँ लागू करते हैं।

आभार

लेखिका, शासकीय प्राथमिक शाला, सैंधर की हेमा पाण्डे और शासकीय प्राथमिक शाला, बिरौरा की पूनम शाह के प्रति अपना आभार व्यक्त करती हैं, जिन्होंने इस लेख के लिए अपने विद्यार्थियों की रचनाएँ साझा कीं।

अभिलाषा अवस्थी अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन की रिसोर्स पर्सन हैं। उन्हें ड्रॉइंग करना, पढ़ना और यात्रा करना अच्छा लगता है। उनसे *abhilasha.awasthi@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : मनोहर नोतानी **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडीटिंग :** अनुज उपाध्याय

शिक्षण की एक विधि के रूप में कहानी सुनाना

गायत्री

एकलव्य फ़ाउंडेशन के मोहल्ला लर्निंग ऐक्टिविटी सेंटर (MLAC) और सरकारी स्कूलों के साथ काम करते हुए हमें इस बारे में कुछ अन्तर्दृष्टि मिली है कि बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं और हम गीतों, कहानियों, लोककथाओं, कविताओं आदि के ज़रिए भाषा सीखने में कैसे उनकी मदद कर सकते हैं। यहाँ, मैं अपने कुछ अनुभव साझा कर रही हूँ कि कैसे कहानियाँ प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों को सीखने के कई अपेक्षित परिणामों को हासिल करने में मदद करती हैं जैसे ध्यान से सुनना, बिना हिचकिचाहट के बोलना, किसी चित्र की तरफ़ ध्यान से देखना व उसकी व्याख्या करना, अपने जीवन और परिवेश पर आधारित अपने अनुभवों को साझा करते हुए उनका वर्णन करना और उसे साझा करना, सवाल करना, तर्क करना और तुलना करना। कहानी सुनाना भाषागत कौशलों के विकास में मदद करता है और यह स्कूली वातावरण तथा पाठ्यचर्या के साथ एक आसान कड़ी होता है।

कहानी सुनाना और भाषा

जब मैं कहानी कहने के लिए कोई क़िताब उठाती हूँ तो सबसे पहले बच्चों को चित्र दिखाती हूँ। क़िताब का शीर्षक सुनकर और चित्र देखकर उनके चेहरे पर जो ख़ुशी झलकती है वह अमूल्य होती है। कहानी सुनाना समावेशी होना चाहिए। प्रत्येक बच्चे की बात सुनी जानी चाहिए और इसमें उनकी हिस्सेदारी को सुनिश्चित करना चाहिए, अन्यथा उनका उत्साह जल्दी ही ठण्डा पड़ जाएगा।

> किसी कहानी पर चर्चा करने से बच्चों को भाषा के इस्तेमाल का ग़ज़ब का अवसर मिलता है। बच्चों को चित्र दिखाना, उनके बारे में बात करना, सवाल पूछना और उनके उन अनुभवों को सुनना जो कहानी से मेल खाते हों, यह सब भाषा के विकास में निर्णायक तत्व होते हैं। यह भी देखा गया है कि जब कक्षा में सभी बच्चे साथ में बात करते हैं तो अपने आपको अभिव्यक्त करने में हिचकिचाने वाले बच्चे भी बात करने में सहज महसूस करते हैं।

बच्चों के लिए लोककथाएँ ख़ासतौर पर उपयुक्त होती हैं क्योंकि वे रोज़मर्रा के जीवन, ज़रूरतों, प्रकृति व संघर्षों का प्रतिनिधित्व करती हैं और बच्चे उन्हें अपने इर्द-गिर्द के माहौल से जोड़ सकते हैं। होशंगाबाद के एक प्राथमिक स्कूल में कक्षा-1 से 3 तक के बच्चों को ख़ूबसूरत चित्रों वाली एक लोककथा *शलजम* (Turnip, Eklavya) सुनाई गई। मैंने बच्चों को चित्र दिखाए और उनसे पूछा कि उन्होंने क्या-क्या देखा। उन्होंने उत्तर दिया - पेड़, पौधे, सड़कें, घर, खेत, नदियाँ, झोपड़ियाँ, पहाड़, इन्सान, जानवर, फूल आदि। उन्होंने फूलों के नाम भी बताए - गेंदा और शेवन्ती। जब सभी बच्चे बोल रहे थे तब कक्षा-1 के एक बच्चे ने तीन चिड़ियों की ओर इशारा किया जिन पर किसी अन्य की नज़र नहीं गई थी।

एक कहानी का परिचय देना

कोई कहानी सुनाने से पहले उससे सम्बन्धित सभी मुद्दों की चर्चा करना मुझे उपयोगी लगता है क्योंकि इस तरह से हम बच्चों को कहानी सुनाते हुए उनके आस-पास की तमाम चीज़ों से परिचित करा सकते हैं। इसके साथ ही बच्चों के अनुभवों को भी कक्षा में शामिल किया जा सकता है और आगे जो काम दिए जाने हैं (चर्चाओं व गतिविधियों सहित) उसे उनके द्वारा सुझाए गए विचारों पर केन्द्रित किया जा सकता है।

जब मैंने यह पूछा कि क्या किसी ने शलजम देखा है और यह कैसा दिखता है तो बहुत-से बच्चों ने अपना हाथ उठाया। कुछ बच्चों को लगा कि यह प्याज़ की तरह दिखता है। कुछ ने कहा कि यह मूली या गाजर की तरह होता है। कुछ ने इसे पत्ता गोभी जैसा बताया और एक बच्चे ने तो इसे बैंगन जैसे बैंगनी रंग का बताया। इससे एक और सवाल खड़ा हुआ। क्या किसी ने शलजम को उगते हुए देखा है? दो या तीन हाथ ऊपर उठे। कक्षा-3 के आर्यन ने कहा, "ज़मीन के अन्दर होता है।" मैंने पूछा, "ज़मीन के अन्दर और क्या पैदा होता है?" "गाजर, मूली, मूँगफली और एक ऐसी चीज़.....जो खून की तरह लाल रंग की होती है...हाँ...चुकन्दर, आलू, प्याज़, लहसुन", बच्चे एक साथ चिल्लाए।

"मुझे बताओ कि क्या तुमने पहले कभी शलजम खाए हैं और कैसे खाए हैं? कच्चे या पकाकर?" और मुझे पता चला कि बहुत कम बच्चों ने शलजम खाया था।

एक बच्चे के अनुसार इसे काटकर रोटी के साथ खाते हैं। एक दूसरे बच्चे ने इसे कच्चे सलाद की तरह खाया था। तीसरे बच्चे ने बताया कि उसने इसे रसेदार सब्ज़ी के रूप में खाया

था। एक अन्य बच्चे ने बताया कि उसकी माँ ने शलजम और मटर का अचार बनाया था और उन्होंने उसे दाल-चावल के साथ खाया था। इससे एक चर्चा शुरू हो गई। मेरा अन्तिम सवाल था, "ठीक है, मुझे बताओ कि तुमने कौन-कौन सा अचार खाया है?"

बच्चे आम, नींबू, आँवला, मिर्च, कटहल, मछली और हल्दी के अचार के बारे में बात करने लगे। चर्चा को बढ़ाते हुए मैंने जोड़ा कि मैंने लहसुन, अदरक, मशरूम, लाल मिर्ची, करौंदे का अचार और गाजर, गोभी, शलजम तथा मटर का मिक्स अचार खाया है। बच्चे करौंदा से परिचित नहीं थे, इसलिए मैंने गूगल किया और करौंदे का पेड़ और उसका फल उन्हें दिखाया।

अभी तक हम कहानी के पास भी नहीं पहुँचे थे। समूची चर्चा अभी शलजम पर ही टिकी थी। मैंने बच्चों को एक-एक करके कहानी के सारे चित्र दिखाए और उनसे कहानी का अनुमान लगाने को कहा। बच्चों ने हर एक चित्र और उगती हुई दिखाई गई सब्ज़ियों पर ख़ूब बातें कीं। उन्होंने हर एक चित्र को ध्यान से देखा - एक दूध वाला, नल खोलती एक लड़की, खेत में पानी डालते दादाजी, एक ठेले पर सब्ज़ी इकट्ठा करती दादी आदि।

पन्ने पलटते हुए हम कहानी के उस हिस्से में पहुँचते हैं जहाँ दादा, दादी को पुकारते हैं क्योंकि वे एक शलजम को ख़ुद खोदकर नहीं निकाल पा रहे थे। चूँकि दादी भी उसे नहीं निकाल पाईं तो उन्होंने लड़की को आवाज़ दी। जब मैंने पूछा, क्या शलजम अब बाहर आ जाएगा तो सभी बच्चों के जवाब हाँ में थे क्योंकि उन्होंने कहा, कि लड़की अपने दादा-दादी से ज़्यादा ताक़तवर है। एक बच्ची ने मुझसे कहा कि उसके घर में भी उसके पापा उन चीज़ों को खिसका लेते हैं जिन्हें उसके दादाजी नहीं हटा पाते। हालाँकि, जब बच्चों ने अगले पेज पर चित्र देखा तो उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि शलजम तो अभी भी बाहर नहीं आया था। उन्होंने कहा कि चूँकि यह बहुत मज़बूती से धँसा हुआ है, इसलिए इसे निकालने के लिए शायद बहुत अधिक ताक़त की ज़रूरत है। उन्होंने देखा कि खच्चर, मुर्गी और चूजे इस दृश्य पर हँस रहे थे। फिर, लड़की ने खच्चर को बुलाया और उसने शलजम बाहर निकालने में मदद करने के लिए लड़की की चुटिया पकड़ ली। एक-एक करके खेत के सारे जानवर शलजम को बाहर निकालने के काम में जुट जाते हैं। वे एक-दूसरे को कसकर पकड़े रहे, जब तक कि शलजम बाहर नहीं निकल गया।

सभी बच्चे ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे क्योंकि उन्होंने चित्र में देखा कि शलजम के बाहर आते ही सभी एक-दूसरे पर गिर पड़े।

मैंने उनसे पूछा कि कैसे एक छोटा-सा चूहा शलजम को खींचकर बाहर निकाल सकता है जबकि इतने सारे लोग मिलकर ऐसा नहीं कर पा रहे थे। एक बच्चे को लगा कि चूहे ने जड़ को कुतर दिया था, इसीलिए वह अन्ततः बाहर आ सका या शायद उसकी मदद उसके किसी दोस्त ने की होगी।

सुनाने के बिना भी केवल चित्रों को देखते हुए हमारी कहानी यहीं पर समाप्त हो गई। हालाँकि मैंने कहानी के पात्रों (शलजम, बूढ़ा आदमी, बूढ़ी महिला, लड़की, खच्चर, कुत्ता, बिल्ली और चूहा) के रूप में कुछ बच्चों को तैयार करके इसे फिर से प्रस्तुत किया। बच्चे अपनी आँखों के सामने कहानी को घटित होते देखकर बहुत ख़ुश हुए। कहानी के अनुसार सब एक-दूसरे के ऊपर गिर गए और जानबूझकर हाथापाई करने लगे।

सोच-विचार में सहायता के लिए सवालों का इस्तेमाल

मैंने विद्यार्थियों से पूछा कि क्या कहानी की घटनाओं या उसके अन्त के बारे में उनके पास कोई सवाल या चिन्ताएँ हैं? इससे यह जानने में मदद मिलती है कि कहानी सुनने के बाद उनके विचार क्या बनते हैं।

मेरा मानना है कि कहानियों पर इस तरह की बातचीत जहाँ भाषा के विभिन्न आयामों को खोलती है वहीं एक ही समय में हमें कई तरह के विषयों को छूने का अवसर भी प्रदान करती है। कहानी को लेकर बच्चों की पसन्दगी और नापसन्दगी के बारे में उनसे बात करना उनकी भागीदारी को बढ़ाता है, जैसे कहानी का कौन-सा हिस्सा उन्हें पसन्द नहीं आया या किस चीज़ को बेहतर बनाया जा सकता है। इसका प्रभाव स्पष्ट तौर पर महसूस किया जा सकता है। जैसा कि यहाँ देखा गया, बच्चों ने स्वतःस्फूर्त तरीक़े से क़रीब-क़रीब हर चित्र पर कम-से-कम एक लाइन सोचने और उसे अभिव्यक्त करने का प्रयास किया।

कहानी की किताबों का सबसे अच्छी तरह से उपयोग

हमारा यह अनुभव रहा है कि शिक्षकों के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह निर्णय करने की होती है कि कहानी की किताबों का कब और कैसा इस्तेमाल करना है क्योंकि उनके ऊपर पाठ्यक्रम को पूरा करने का लगातार दबाव बना रहता है। शिक्षकों का सुझाव था कि हम उनके स्कूल आएँ और कहानी की किताबों के साथ गतिविधि करें और उन्हें ऐसे सुझाव दें जिनका वे अनुसरण कर सकें। हमने इन स्कूलों के लिए पढ़ने के मेले आयोजित किए। पढ़ने के इन मेलों में कहानी सुनाने, दिए गए शब्दों और चित्रों को किताबों में खोजने, क़िताब के बारे में कोई संकेत (उसका रंग, चित्र, नाम) देते हुए जल्दी

से उस क़िताब को ढूँढ़कर लाने जैसी गतिविधियाँ शामिल थीं ताकि बच्चों को सीखने के उनके अपेक्षित परिणामों तक पहुँचने में मदद मिल सके।

इस पूरी प्रक्रिया का लक्ष्य भाषा सीखने में कहानी सुनाने के महत्त्व को दर्शाना था। साथ ही इन गतिविधियों में शिक्षकों की भागीदारी को सुनिश्चित करना था ताकि हाव-भाव, बातचीत व समझ के ज़रिए कहानी कहने में होने वाली उनकी हिचक को तोड़ा जा सके। इसका परिणाम यह हुआ कि जब मैं अगली बार उस स्कूल में गई तो बच्चों ने मुझसे कहा कि उन्होंने वे सारी किताबें पढ़ ली हैं जो मैंने उन्हें दी थीं। कुछ कहानियाँ उनके शिक्षकों ने उन्हें सुनाईं, जबकि कुछ उन्होंने ख़ुद ही अपने ख़ाली समय में पढ़ लीं। उन्होंने हमसे और किताबें देने का अनुरोध किया। बच्चों को अब कहानी की किताबों से प्यार हो गया है!

बच्चों के हित को दिमाग़ में रखते हुए हम कहानी सुनाने के ज़रिए बच्चों के सम्प्रेषण कौशलों को सजीव व मज़बूत बनाने के लिए कई रोचक तरीक़े खोज सकते हैं। कहानी में आगे क्या होने वाला है इसका अनुमान लगाते हुए बच्चे लगातार भाषा के नियमों से परिचित होते जाते हैं। प्राथमिक स्कूल के शुरुआती वर्षों में बच्चों को पढ़ना सीखने में सहायता करने के लिए कहानी सुनाना एक बहुत ही लाभदायी और आकर्षक गतिविधि हो सकती है।

चित्र-1 : *किताब का लुत्फ उठाना सीखते हुए बच्चे।*

गायत्री होशंगाबाद में एकलव्य फ़ाउंडेशन की चिल्ड्रन्स लाइब्रेरी में कई सालों तक काम कर चुकी हैं। वे वर्तमान में होशंगाबाद ब्लाक में जश्ने तालीम प्रोजेक्ट के तहत सरकारी स्कूलों में शिक्षण-शिक्षार्जन प्रक्रिया पर बच्चों, शिक्षकों और समुदाय के साथ काम कर रही हैं। उन्हें बच्चों के साथ समय गुज़ारना और उनके साथ हुए अपने अनुभवों को लिखना पसन्द है। उनसे *gayatri@eklavya.in* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : अमिता शीरीं **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

कहानियाँ सुनाने के माध्यम से मूल्यों की तालीम | मेरे अनुभव

इमान शर्मा

क्या आपको याद है कि बचपन में कहानियाँ सुनना हमें कितना पसन्द था? परिवार में हमारा पसन्दीदा व्यक्ति वह हुआ करता था जो हमें मज़ेदार कहानियाँ सुनाता था। हमारे पसन्दीदा शिक्षक वे थे जो हमें ऐसी कहानियाँ सुनाते थे जो हमारी पाठ्यपुस्तकों के पन्नों के बाहर होती थीं। बचपन में हम भले ही कितने भी चंचल क्यों न रहे हों, कहानियों को सुनने और एक अलग दुनिया में भटकने के लिए हम घण्टों बैठ सकते थे। ऐसा लगता था जैसे कहानियाँ हमें सम्भावनाओं की नई दुनिया में ले जाएँगी।

कहानी सुनाने का मक़सद क्या था? हमारी व्यापक रुचियों और निरन्तर खोजी मन को बाँधे रखने के अलावा घर के बड़े लोग हमें कुछ मूल्य भी देना चाहते थे। इस वजह से उनकी अधिकांश कहानियों में नैतिक सबक़ होते थे, जो अक्सर कहानी के अन्त में स्पष्ट रूप से कहे जाते थे।

इन दिनों सीखने की प्रक्रिया में कहानियों ने महत्त्वपूर्ण स्थान हासिल कर लिया है। कहानी सुनाना न केवल भाषाओं बल्कि सभी विषयों को पढ़ाने के लिए एक प्रभावकारी शैक्षणिक तकनीक के रूप में स्वीकार किया जाने लगा है, विशेषकर स्कूल के शुरुआती वर्षों में। कहानियों के माध्यम से बच्चे सुनना, समझना, कल्पना करना, अलग-अलग दृष्टिकोण समझना और इतिहास, संस्कृतियों व अवधारणाओं का विश्लेषण व मूल्यांकन करना सीखते हैं। वे अभिव्यक्ति, सामंजस्य, प्रस्तुति, स्वर, आवाज़ का उतार-चढ़ाव, वाक्य संरचना, वाक्यांश, मुहावरे, बोलचाल की शैली और दूसरे कई भाषायी कौशल विकसित करते हैं।

कहानी सुनाने का एक और निर्विवाद पहलू यह भी है कि यह छोटे बच्चों में मूल्यों को विकसित करने का एक रचनात्मक तरीक़ा है। एक कहानी सुनते समय बच्चे अपने विवेक और अनुभव का उपयोग करके किसी स्थिति और/ या किसी क़िरदार का आकलन करते हैं और अपने मूल्यों को व इस समझ को विकसित करते हैं कि क्या अच्छा है और क्या बुरा; क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। जिज्ञासु श्रोताओं के रूप में, वे विभिन्न स्थितियों पर अपने दृष्टिकोण विकसित करते हैं। वे कहानियों के क़िरदारों के साथ संसार भर में और अलग-अलग समय में भ्रमण करते हैं, उन्हें अपने जीवन एवं अनुभव की वास्तविकता से जोड़ते हैं। यहाँ तक कि बहुत छोटे बच्चे भी कहानियों, क़िरदारों और उनकी दुनिया से जुड़ाव बना सकते हैं, जैसा कि हम सब भी अपने बचपन में किया करते थे।

मेरे अनुभव और सीख

मैं स्कूलों में बच्चों को कहानियों के माध्यम से अपना विषय, अँग्रेज़ी भाषा पढ़ाती थी, अब मुझे समझ में आता है कि मैं किस तरह उनके साथ और अधिक व्यक्तिगत स्तर पर जुड़ पाती थी। कहानी सुनाने के ज़रिए मैं उन बच्चों से भी बात कर सकी जो शर्मीले और अन्तर्मुखी थे। इससे उनको इतनी सहजता महसूस होती थी कि वे अपनी बात खुलकर रख सकें बिना यह चिन्ता किए कि उनके बारे में क्या राय बनाई जाएगी। जब भी मैं उनसे सवाल पूछती थी कि अगर वे कहानी में एक ख़ास क़िरदार होते तो क्या करते और क्यों, तब वे ऐसे विचार साझा करते थे जो मुझे विस्मित कर देते थे। इन विचारों ने मुझे उनके जीवन, उनकी पहचान, उनके मन और उनके परिवार और घरों में झाँकने का मौक़ा दिया।

मूल्यों को अपनाना

कई बार मैं जानबूझकर कोई नकारात्मक तर्क देती थी। लेकिन बच्चे मेरे बारे में कोई राय बनाने की बजाय क्या सही है और क्या ग़लत है वाले सवालों के सबसे तर्कसंगत जवाब देते थे और बताते थे कि उन्हें ऐसा क्यों लगा। इसने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया कि क्या कहानी सुनाना एक वास्तविक स्थिति को जीने जैसा नहीं है, इतना कि व्यक्ति को यह साफ़ दिखने लगे कि क्या सही है और क्या नहीं? और क्या बच्चों को इस बात का एहसास कराने के लिए इससे बेहतर कोई तरीक़ा है, जिससे कहानियों की 'नैतिक शिक्षा' के जवाबों को यांत्रिक रूप से रटने की बजाय वे बुनियादी मूल्यों को स्वाभाविक रूप से विकसित कर सकें? कहानियों के माध्यम से जीवन के बारे में सीखने से बच्चे बेहतर विकल्प चुन पाएँगे जो उनके जीवन को प्रभावित करते हैं।

भलाई का मूल्यबोध

कहानी कहने के सत्र के बाद बच्चों से पूछे जाने वाले सवालों

में मेरा प्रिय सवाल होता है, "तुम्हारा पसन्दीदा क़िरदार कौन-सा है?" बच्चे हमेशा सबसे अच्छा चुनाव करते हैं। वे किसी क़िरदार और परिस्थिति का विश्लेषण करने में माहिर होते हैं। मैंने ऐसा कभी नहीं देखा कि किसी बच्चे ने कोई नकारात्मक क़िरदार पसन्द किया हो। हमेशा भला क़िरदार ही सबकी पसन्द होता है। इससे मुझे पता चला कि बच्चों का झुकाव स्वाभाविक रूप से भलाई की ओर होता है और उनमें इसे परखने की क्षमता होती है। हम शिक्षक के रूप में केवल उनका मार्गदर्शन कर सकते हैं। बच्चे चाहे कितने ही शरारती क्यों न हों, वे हमेशा भले क़िरदार को ही चुनते हैं, जो यह बार-बार साबित करता है कि बच्चे अच्छाई के मूल्यों को समझते हैं।

दूसरों के बारे में राय न बनाना

एक बार मैं लगभग 8-10 बच्चों की कक्षा में एक ऐसी लड़की के बारे में कहानी सुना रही थी जिसे मछली खाना पसन्द था। कक्षा के ज़्यादातर बच्चे शाकाहारी थे, मुझे नहीं पता था कि वे कैसी प्रतिक्रिया देंगे। बच्चे थोड़े बड़े भी थे, 9-10 साल के। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि केवल दो या तीन बच्चों ने ही वैसी प्रतिक्रिया दी जैसी मुझे अपेक्षा थी। बाक़ी बच्चे लड़की के मछली खाने की बात से सहज थे। उनमें से कुछ ने तो यह भी बताया कि वे भी मांसाहारी हैं और मछली, चिकन और अण्डे खाना उन्हें पसन्द है। जहाँ तक मुझे ठीक से याद है, उनके शब्द थे, "आप जो भी खाना चाहते हैं खा सकते हैं। खाने की पसन्द के आधार पर हम यह नहीं कह सकते हैं कि कोई व्यक्ति अच्छा है या बुरा।" बच्चे इतने समझदार हो सकते हैं यह देखकर मैं हैरान थी। मैंने उन्हें बताया कि मैं भी मांसाहारी हूँ। कहानी और चर्चा के अन्त में, सभी बच्चे इस बात पर सहमत थे कि खान-पान की आदतें किसी व्यक्ति को परिभाषित नहीं करती हैं। इस प्रकार, उस दिन कहानी सुनाने से इन बच्चों को सहिष्णुता और स्वीकार्यता के एक निश्चित स्तर तक पहुँचने में मदद मिली। मैंने सीखा कि कहानियाँ बच्चों को हमारे सामाजिक मानदण्डों से परे जाकर सोचने में मदद करने के लिए बेहतरीन माध्यम हो सकती हैं और वे हमें किसी दूसरे के नज़रिए से दुनिया को देखने का मौक़ा देती हैं।

छोटे बच्चों को कहानी सुनाने की सबसे मज़ेदार बात मेरे लिए यह थी कि वे कहानी, कथानक या पात्रों के बारे में अपनी ख़ुद की समझ तक कैसे पहुँचते थे। वे अपने मूल्यों का निर्माण ख़ुद करते थे। वे अपने विचारों से उलझन भी महसूस करते थे और इन उलझनों के वक़्त, सही जवाब ज़्यादातर उनके साथियों के पास होते थे न कि मेरे पास।

निष्कर्ष

कहानी सुनाने के विभिन्न तरीक़ों और सामग्रियों के इस्तेमाल से कहानी सुनाना और भी अधिक दिलचस्प बनाया जा सकता है, जैसे कि कठपुतलियाँ, कहानी कार्ड, किताबें (बड़ी किताबें, सचित्र किताबें आदि), बड़ी तस्वीरें, भूमिका निर्वाह, बच्चों द्वारा बनाए गए रेखाचित्र, वीडियो आदि। अनुभव जितना समृद्ध होगा, प्रभाव उतना ही गहरा होगा। जब बच्चे कहानियाँ सुनाते हैं, तो उनकी झिझक दूर होती है, उनमें बोलने और अपने विचारों को व्यक्त करने का आत्मविश्वास भी बढ़ जाता है। इस तरह, कहानियों के ज़रिए बच्चों को सोचने और अपने आपको अभिव्यक्त करने का तरीक़ा मिल जाता है और उन्हें चुनाव करने का भी मौक़ा मिलता है (कहानी के अन्त को बदलकर, पसन्दीदा क़िरदार या हिस्से का चयन करके)। इससे वे अच्छे श्रोता और सृजनात्मक संवाद करने वाले भी बनते हैं। ये सारे हुनर 21वीं सदी में जीवन के लिए ज़रूरी हैं। और जैसा कि मैंने अपने अनुभवों के माध्यम से देखा है, कहानियाँ

चित्र-1 : *कहानी सुनाने के लिए बच्चे छड़ी वाली कठपुतलियों का उपयोग करते हुए, चित्तौड़गढ़,राजस्थान में।*

बच्चों में बुनियादी मूल्य विकसित करने के लिए एक नैसर्गिक साधन का काम करती हैं।

बुनियादी चरण के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एनसीएफ़-एफ़एस) 2022 में पाँच विकासात्मक क्षेत्रों का उल्लेख किया गया है : (i) शारीरिक विकास (ii) सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक विकास (iii) संज्ञानात्मक विकास (iv) भाषा और साक्षरता विकास (v) सौन्दर्य और सांस्कृतिक विकास। विकास के इन सभी क्षेत्रों को कहानी सुनाने के माध्यम से काफ़ी लाभ मिल सकता है। एनसीएफ़-एफ़एस 'नैतिकता, मूल्यों और स्वभाव' के बारे में भी बात करता है और जैसा कि पहले कहा गया है, कहानी सुनाना इन्हें नैसर्गिक रूप से विकसित करने का एक प्रभावी साधन है। यह स्पष्ट है कि कहानियों के आधार पर बच्चों के लिए सीखने का एक सर्वांगीण अनुभव तैयार किया जा सकता है और अब वह समय आ गया है कि बतौर शिक्षक हम अपनी कक्षाओं में कहानी सुनाने की गतिविधि का और अधिक प्रयोग करें।

References

Dash, D. (2015). Effectiveness of Storytelling Approach in Inculcating Values Identified by NCERT among the 6th Grade Learners of Odisha State. *Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies, 51(3)*, 2583-2590

Gunawardena, M. & Brown, B. (2021). Fostering Values Through Authentic Storytelling. *Australian Journal of Teacher Education, 46 (6)*

Koivulu, M., Turja, L. & Laakso, M.-L. (2020). Using the Storytelling Method to Hear Children's Perspectives and Promote Their Social-Emotional Competence. *Journal of Early Intervention, 42(2)*, 163-181

National Curriculum Framework for Foundational Stage (2022)

Taylor, E., Taylor, P. C. & Hill, J. (2018). *Ethical Dilemma Story Pedagogy – A Constructivist Approach to Values Learning and Ethical Understanding*. Paper presented at Proceedings of the Science and Mathematics International Conference (SMIC)

इमान शर्मा अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ़ कंटीन्यूइंग एजुकेशन और यूनिवर्सिटी रिसोर्स सेंटर में फैकल्टी हैं। वे गुवाहाटी, असम में रहती हैं। उनके कार्य क्षेत्र में अँग्रेज़ी, प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) और बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (एफएलएन) शामिल हैं। उन्होंने कॉटन कॉलेज से अँग्रेज़ी ऑनर्स में स्नातक और तेज़पुर विश्वविद्यालय से भाषा विज्ञान और लुप्तप्राय भाषाओं में स्नातकोत्तर किया है। उनसे *iman.sharma@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : विजय सेन **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

इन आरम्भिक चरणों के दौरान अध्यापकों के लिए यह सुनिश्चित करना बहुत महत्त्वपूर्ण होता है कि बच्चे जिन चीज़ों से परिचित हैं उन्हें सुनें, देखें और पढ़ें। एक उदाहरण के तौर पर, कक्षा में जो कुछ कहानी के रूप में पढ़ा जा रहा हो, उसे उन बातों को भी सहारा देना चाहिए जिन पर सर्कल टाइम या छोटे-छोटे समूह संवादों के दौरान चर्चा हो रही हो।

- शरून सनी, भाषा सीखने में कहानियों का प्रभाव, पेज 61

कक्षा में कहानी सुनाने से क्या होता है?

ईशा बडकस

मैं एक व्यापक लैंगिकता शिक्षा (Comprehensive Sexuality Education/ सीएसई) की रूपरेखा विकसित कर रही हूँ जो इस बात की वकालत करती है कि सीएसई को शिक्षा के प्रारम्भिक वर्षों से ही औपचारिक पाठ्यक्रम का एक सक्रिय हिस्सा होना चाहिए। अक्षरनन्दन स्कूल, पुणे में महीने में एक बार कक्षा-5 से 10 तक के विद्यार्थियों के साथ मेरा जुड़ाव होता है। बड़े विद्यार्थियों के साथ, मैं अक्सर ज़्यादा सीधे तरीक़े से बातचीत शुरू करने का प्रयास करती हूँ। लेकिन कक्षा-5 के विद्यार्थियों के साथ बातचीत की योजना अलग ढंग से बनाने की ज़रूरत होती है। मैंने यहाँ कक्षा-5 के विद्यार्थियों के साथ 'कहानी कहने' को एक साधन के रूप में प्रयोग करने के अपने सीमित अनुभव को समेकित करने का प्रयास किया है; संक्षेप में, इस लेख में मैं कहानियों के साथ अपने ट्रायल-एंड-एरर प्रयोगों को साझा करूँगी।

कक्षा के वार्तालाप : मेरे अनुभव

कठिन विषयों पर बातचीत शुरू करना

कभी-कभी, किसी विषय पर बातचीत शुरू करना मुश्किल हो जाता है क्योंकि ऐसा लगता है कि शुरुआत करने के लिए कोई उपयुक्त बिन्दु नहीं हैं। ऐसी स्थितियों में, कहानियाँ, कविताएँ और फ़िल्में बातचीत को गति देने के लिए स्वाभाविक रूप से काफ़ी उपयोगी होते हैं। मेरे अनुभव में, *सिर का सालन, क्यूँ-क्यूँ लड़की, प्यारी मैडम, बरास्ता तरबूज़* जैसी कहानियाँ लोगों के दैनिक अनुभवों को शब्दों में पिरोकर जाति, वर्ग, धर्म, लिंग जैसे कई जटिल सामाजिक मुद्दों पर प्रकाश डालती हैं। सचित्र पुस्तकें जटिल सामाजिक रिश्तों पर संवाद शुरू करने में मदद कर सकती हैं और किसी की भावनाओं पर स्वाभाविक तरीक़े से चिन्तन को प्रोत्साहित कर सकती हैं। ऐसी कहानियाँ शहरी कक्षाओं में विशेष महत्त्व रखती हैं जहाँ अधिकांश विद्यार्थी सामाजिक-आर्थिक रूप से सक्षम परिवारों से आते हैं।

सुनने की जगह बनाना

जिस तरह सवाल बातचीत शुरू करने में मदद करते हैं, व्यक्तिगत अनुभव बाँटने से विद्यार्थियों को एक-दूसरे से सम्बन्ध बनाने या समानुभूति महसूस करने का मौक़ा मिलता है। कहानियों के विभिन्न पात्र कभी-कभी विद्यार्थियों को अपने जीवन संघर्षों को कहानी के एक पात्र के साथ जोड़ने का मौक़ा देते हैं या कभी-कभी वे लोगों की विभिन्न सामाजिक वास्तविकताओं के बारे में सीखते हैं। कहानियों में दर्शाई गई अलग-अलग ज़िन्दगियों और अलग-अलग विचारों से विद्यार्थियों में अधिक समावेशी, स्वीकार्य रवैया उत्पन्न हो सकता है।

रचनात्मकता, जिज्ञासा और चिन्तन के लिए जगह बनाना

कहानियों के माध्यम से विभिन्न तरह की गतिविधियाँ और अभ्यास विकसित किए जा सकते हैं। नीचे उल्लिखित कुछ गतिविधियों को अधिकांश कहानियों के साथ विद्यार्थियों के या सन्दर्भों के अनुरूप परिवर्तित करके आज़माया जा सकता है। रंगमंच गतिविधियाँ, जैसे रोल-प्ले (भूमिका निर्वाह), एक ऐसा वातावरण बना सकती हैं जहाँ विद्यार्थी किसी और के जैसे बन सकते हैं। किसी और की तरह होना कैसा लगता है इसका अनुभव स्वयं को बेहतर ढंग से समझने की प्रक्रिया को सक्षम बनाता है। ये गतिविधियाँ भाषा सीखने, शब्दावली निर्माण और अभिव्यक्ति के विभिन्न तरीक़े आज़माने में मदद करती हैं।

अकादमिक चर्चाओं के लिए ज़मीन तैयार करना

कहानियाँ कक्षा के भीतर पाठ्यचर्या सम्बन्धी अनेक सम्बन्ध ला सकती हैं। उदाहरण के लिए, *क्यूँ-क्यूँ लड़की* कहानी पढ़ते समय सामाजिक न्याय, लिंग, जाति जैसे कई विषय सामने आए जिनका सीधा सम्बन्ध सामाजिक विज्ञान से है। इस तरह के सम्बन्ध सामाजिक विज्ञान कक्षाओं में काम आ सकते हैं क्योंकि कहानी की किताबों में से उपयुक्त सन्दर्भों के सहारे बातचीत की जा सकती है। समाज में दमनकारी संरचनाओं पर सवाल उठाने वाली कथाएँ रूढ़ियों और पाबन्दियों को चुनौती देने के अवसर प्रदान करती हैं, जिससे कक्षाओं में चिन्तनशील शैक्षणिक जुड़ाव पैदा होता है।

सुगमकर्ता की भूमिका

मैंने कहानी सुनाने के सत्र के लिए एक व्यापक पाठ योजना बनाने की हमेशा कोशिश की है लेकिन मुझे एहसास हुआ है कि ऐसे सत्र तब अधिक सार्थक होते हैं जब वे सहज और मुक्त-प्रवाह वाले होते हैं। जब मैं कोई कहानी पढ़ती हूँ तो मैं आमतौर पर बहुत सारे प्रश्न पूछती हूँ जो प्रक्रिया को अधिक

सहभागी बनाता है। एक सुगमकर्ता के लिए आवश्यक है कि वह चर्चा पर मन्थन करे, उसे समेकित करे और आगे बढ़ते हुए प्रासंगिक बिन्दुओं और प्रश्नों को उजागर करे। शिक्षक और शिक्षाविद, कहानियों के माध्यम से जितने सम्भव हों उतने विषय-सम्बन्धित सन्दर्भ लाने का प्रयास कर सकते हैं ताकि विद्यार्थी आसानी से अनुभवों को आपस में जोड़ सकें।

इस खण्ड में, मैं पाँचवीं कक्षा के विद्यार्थियों के साथ महाश्वेता देवी की कहानी *क्यूँ-क्यूँ लड़की* पढ़ने के अपने अनुभव के बारे में बात करने जा रही हूँ। यह कहानी एक 10 वर्षीय आदिवासी लड़की मोयना के बारे में है, जो जिज्ञासु है और उसके आस-पास होने वाली हर चीज़ पर 'क्यूँ' सवाल पूछती है। मोयना के प्रश्न हमें प्रकृति के चमत्कारों के बारे में सोचने पर भी मजबूर करते हैं, साथ ही हमें सामाजिक अन्याय पर सवाल उठाने पर मजबूर करते हैं। कहानी की शुरुआत मोयना के एक बड़े साँप के पीछे दौड़ने और उसे पकड़ने की कोशिश से होती है, क्योंकि उसके परिवार में साँपों को खाया जाता है। इस बिन्दु पर, विद्यार्थी विभिन्न प्रकार के मांसों पर चर्चा कर रहे थे जो मनुष्य खाते हैं। कुछ विद्यार्थियों को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि साँपों को भी खाया जाता है।

मोयना घर के और अन्य कामों के बारे में बात करती है जो उसे हर रोज़ करने होते हैं। चूँकि मोयना और कक्षा-5 के विद्यार्थी लगभग एक ही उम्र के थे, इसलिए उनके लिए यह समझना आश्चर्यजनक था कि मोयना का जीवन उनसे बहुत अलग था। विद्यार्थियों में से एक ने कहा कि मोयना और जामलो (कहानी *जामलो चलती गई* की नायिका) दोनों का जीवन उनकी तुलना में अधिक चुनौतीपूर्ण था और बचपन के उनके अनुभव एक-दूसरे से बिल्कुल अलग थे। मोयना और जामलो, दोनों पर विभिन्न तरीक़ों से अपने परिवारों का सहयोग करने की ज़िम्मेदारियाँ हैं, जिनमें वित्तीय सहायता भी एक है। संक्षेप में, कई चीज़ें और सुविधाएँ जो मेरे विद्यार्थियों के लिए आसानी से उपलब्ध हैं और जो उन्हें लगता है कि हर बच्चे के लिए उपलब्ध होती हैं, मोयना और जामलो जैसे बच्चों के लिए रोज़मर्रा का संघर्ष है।

कहानी में मोयना की जनजाति (शबर) का उल्लेख है और बताया गया है कि शबर समुदाय के पास भूमि और संसाधन नहीं हैं। हालाँकि समुदाय के सदस्यों को इस बारे में कोई शिकायत नहीं है, लेकिन यह मोयना ही है जिसके सवाल, संसाधनों के असमान विभाजन की पड़ताल करते हुए, दिन-ब-दिन अधिक गहरे होते जा रहे हैं। हमारे जैसे शहरी कक्षा में हाशिए पर रहने वाले समुदायों के संघर्षों को सामने लाना महत्त्वपूर्ण है ताकि विद्यार्थियों को उनके विशेषाधिकार प्राप्त जीवन के बारे में जागरूक किया जा सके और यह एहसास दिलाया जा सके कि इस लाभप्रद परिस्थिति के साथ कोई क्या कर सकता है।

एक और चर्चा तब शुरू हुई जब मोयना सोचने लगी कि उन्हें उन ज़मींदारों द्वारा दिया गया बासी ख़ाना क्यों खाना पड़ता है जहाँ वह काम करती है। यहाँ विद्यार्थियों ने अपने घरों के अनुभव साझा करना शुरू किए जहाँ भी बचा हुआ ख़ाना घरेलू सहायिका को दे दिया जाता है। कुछ विद्यार्थियों ने महसूस किया कि लोगों को अतिरिक्त/ बचा हुआ भोजन देना उचित ही है क्योंकि अगर इसे नहीं दिया गया तो यह वैसे भी बर्बाद हो जाता है। दूसरी ओर, कुछ विद्यार्थियों को खेद हुआ क्योंकि वे समझ गए थे कि बासी भोजन प्राप्त करना अच्छा नहीं लगता होगा, भले ही यह नेक इरादे से दिया गया हो।

कुछ विद्यार्थियों ने इस सत्र से कुछ समय पहले आदिवासी पाड़ा (आदिवासी बस्ती) का दौरा किया था, इसलिए वे तुरन्त मोयना के गाँव के विवरण की कल्पना कर सकते थे। विद्यार्थियों ने सरकारी स्कूल का समय गाँव के विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त नहीं होने पर सवाल उठाया और यह विचार व्यक्त किया कि चूँकि स्कूल विद्यार्थियों के लिए है, इसलिए इसका समय बच्चों की दिनचर्या को देखते हुए रखा जाना चाहिए। हालाँकि मोयना ख़ुद से और अपने आस-पास के लोगों से ये महत्त्वपूर्ण सवाल पूछ रही थी। यह भी महत्त्वपूर्ण है कि हम भी पाठक के रूप में, मोयना जैसे बच्चों के लिए शिक्षा और अन्य बुनियादी ज़रूरतों तक पहुँच में असमानता पर सवाल उठाएँ।

फिर, हमने सामूहिक रूप से इस बारे में सोचा : क्या हम अपने आस-पास होने वाली चीज़ों और व्यवहारों के बारे में भी 'क्यों' पूछते हैं? या क्या हम इन्हें वैसे ही स्वीकार कर लेते हैं जैसे ये हैं? चर्चा के बाद, एक गतिविधि की गई जिसमें विद्यार्थियों को अपनी आँखें बन्द करने और उस समय उभरे दो प्रश्नों के बारे में सोचने के लिए कहा गया - वे प्रश्न जिनके बारे में हो सकता है वे कुछ समय से सोच रहे हों। कुछ प्रतिक्रियाएँ इस प्रकार थीं :

ख़ुद पर और शरीर पर सवाल उठाना	• जब मैंने बाल कटवाए तो सभी ने मुझसे कहा कि मैं बुरी दिख रही हूँ; कि मैं उनकी दोस्त नहीं हूँ। क्या बाल कटवाने का मेरा निर्णय ग़लत था? • क्या केवल महिलाएँ ही बच्चे पैदा कर सकती हैं? • कभी-कभी, मेरे आस-पास के विद्यार्थी बहुत मतलबी होते हैं। क्या ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं इस स्कूल में नई हूँ?

समाज और जेंडर भूमिकाओं पर सवाल उठाना	• क्या इसलिए कि मैं एक लड़का हूँ, मुझे घर पर ख़ाना बनाने की इजाज़त नहीं है? • साँवले/ काले रंग वाले लोगों को हीन या निम्न क्यों माना जाता है? • लोग दूसरों को गाली क्यों देते हैं? • जब वे अपशब्दों का प्रयोग करते हैं तो उनका क्या मतलब होता है? ये शब्द किसने बनाए? • शिशुओं की त्वचा का रंग कौन तय करता है? • अगर दो लोग एक-दूसरे से प्यार करते हैं, तो दूसरे लोगों को इसकी परवाह क्यों होनी चाहिए? • क्या किसी लड़की और लड़के को एक साथ देखने पर उन्हें ताने कसना क्यों ज़रूरी है? • क्या वे सिर्फ़ दोस्त नहीं हो सकते? • ऐसा क्यों है कि घर पर केवल मेरे दादाजी ही पूजा करते हैं? • किसी आदिवासी पाड़े में केवल एक ही स्कूल क्यों होता है?
कल्पना-जिज्ञासा	• क्या भूत-प्रेत अपने घर बनाते हैं? • क्या हर समय अपने माता-पिता की आज्ञा मानना ज़रूरी है? • कुछ लोगों को लाइलाज बीमारियाँ हो जाती हैं। ऐसी बीमारियाँ क्यों होती हैं? • क्या कल्पना में मौजूद चीज़ें वास्तविकता में आकार ले सकती हैं? • इतिहास में वास्तव में क्या हुआ था? • कक्षा में हमारे पेन कौन चुराता है?
भावनाएँ	• मैं क्यों नहीं जान सकता कि दूसरे लोग इस दुनिया को कैसे देखते हैं? • क्या चिल्लाने का मतलब अनिवार्य रूप से किसी को डाँटना या ग़ुस्सा होना होता है?

कहानी सुनाने वाली गतिविधियाँ

ऐसी विभिन्न गतिविधियाँ हैं जिन्हें शिक्षण-अधिगम सामग्री (टीएलएम) के रूप में कहानी की किताबों के साथ कक्षा में आज़माया जा सकता है। यहाँ पाँच ऐसी समूह गतिविधियाँ दी गई हैं जो सहयोग, रचनात्मकता और सवाल उठाने की सम्भावनाएँ उभार सकती हैं।

कथानक बदलना

इस गतिविधि में, प्रत्येक समूह को एक ही कहानी के एक अलग पात्र के दृष्टिकोण से पूरी कहानी को फिर से लिखने का प्रयास करने के लिए कहा जाता है। ऐसे अभ्यासों के माध्यम से दिलचस्प मोड़ विकसित होते हैं, जैसे कि प्रतिभागी अपने आप को किसी नए पात्र की जगह पर रखते हुए अलग-अलग दृष्टिकोणों से अन्य पात्रों के साथ स्थितियों और संवादों की कल्पना करने की कोशिश करते हैं।

अन्त का अनुमान लगाएँ/ अन्त बदलें

इस गतिविधि को संचालित करने के दो तरीक़े हैं : या तो सुगमकर्ता कहानी पढ़ सकती है और उसके चरम बिन्दु पर रुककर विद्यार्थियों को समूहों में सम्भावित अन्त पर चर्चा करने के लिए आमंत्रित कर सकती है या वह पूरी कहानी पढ़कर विद्यार्थियों को कहानी में बदलाव करने के लिए आमंत्रित कर सकती है, अगर वे ऐसा करना चाहें तो।

एक पात्र जोड़ें और कहानी फिर से लिखें

इस गतिविधि में, विद्यार्थियों को कहानी में एक बिल्कुल नया पात्र जोड़ने और अन्य पात्रों के साथ इस नए पात्र की यात्रा लिखने के लिए आमंत्रित किया जाता है।

अभिनय करें!

रंगमंच की गतिविधियाँ सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा (socio-emotional learning/ एसईएल) के पहलू में बहुत मदद करती हैं। जब विद्यार्थी कहानी में पात्रों को निभाते हैं, तो वे उनके जीवन से पहचान बनाना शुरू कर देते हैं। इसके अलावा, सहभागी रंगमंच की शुरुआत की जा सकती है जिसमें विद्यार्थी कहानी का अभिनय करते हैं और एक विशेष क्षण पर रुकते हैं जहाँ दर्शकों को मंच पर पात्रों को बदलने और दृश्य में सहज प्रतिक्रिया देने के लिए कहा जाता है जैसे कि वे उस पात्र को निभा रहे हों। यह किसी भी स्थिति को देखने के विभिन्न दृष्टिकोण सामने लाता है।

कहानी का आवरण पृष्ठ डिज़ाइन करना और शीर्षक तय करना

सुगमकर्ता कहानी की पुस्तक के आवरण पृष्ठ पर कवर चढ़ाकर पूरी कहानी को पढ़ती है। कहानी सुनाने और चर्चा समाप्त हो जाने के बाद, विद्यार्थी जोड़े में बैठते हैं और चर्चा के आधार पर कहानी के लिए एक आवरण पृष्ठ की कल्पना करते हैं और कहानी के लिए उपयुक्त शीर्षक के बारे में सोचते हैं।

जैसा कि स्पष्ट है, कहानी की किताबें बहुत अच्छे टीएलएम हैं। कक्षा में कहानी पढ़ना निश्चित रूप से एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है लेकिन विभिन्न रूपों में उनके साथ जुड़ने से अलग-अलग रास्ते खुलते हैं। जब मैं बड़ी हो रही थी तो मैंने बहुत सारी कहानियों की किताबें पढ़ीं। हालाँकि हमारे पास सप्ताह में दो बार पुस्तकालय का पीरियड उपलब्ध था, लेकिन पुस्तक चर्चा पाठ्यक्रम में शामिल नहीं थी। यह अलगाव समस्याग्रस्त है क्योंकि यह कहानी की किताबों के विषय और कथानक के साथ पाठ्यचर्या के विषयों के घनिष्ठ सम्बन्ध को रोकता है। मुझे लगता है कि कहानियों में अपार सम्भावनाएँ हैं जिन्हें तलाशते हुए हमें, सुगमकर्ताओं के रूप में, ईमानदार बातचीत, विचारों का आदान-प्रदान और, सबसे महत्त्वपूर्ण बात, सुनने की क्षमता विकसित करने का प्रयास करना चाहिए।

ईशा बडकस पिछले चार वर्षों से एकलव्य के साथ काम कर रही हैं। उन्होंने अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु से शिक्षा में स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूरी की। उनकी रुचि संवाद के लिए जगह बनाकर लैंगिकता और यौनिकता की पड़ताल करने में है। उनसे *ishabadkas@eklavya.in* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : अनु गुप्ता **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

जब गणित की कक्षा में कहानियाँ प्रवेश करती हैं

माला कुमार

प्यासे कौवे की कहानी हम सबको पता है। मगर यह कहानी एक ऐसे कौवे की है जो चीज़ों को अलग ढंग से करना चाहता था। तो जब इस 'प्यासे कौवे' को पानी पीने के लिए घड़े में कंकड़ डालकर पानी को ऊपर लाने की ज़रूरत पड़ी तो वह एक गाना गाने लगा :

यहाँ लाइन लगाओ, फिर कौआ-1 जाओ मेरे बाएँ।

कौआ-2 बोलो 'हाँ' और जाओ मेरे दाएँ।

दाएँ-बाएँ, दाएँ-बाएँ।

सब एक-एक कंकड़ उठाओ और घड़े में डालो धाएँ!

इस तरह चतुर कौवे ने अपनी प्यास बुझाने के लिए सारे कौवों से सहयोग हासिल कर लिया। कहानी सुनाने वाले की रचनात्मकता के आधार पर इस गीत को बदला भी जा सकता है, समूह गान की तरह गाया जा सकता है ताकि बच्चे इसमें शामिल गणित की चर्चाओं में उतरने से पहले कुछ पल मनोरंजन कर लें।

कहानी सुनाने वाले अपनी विधा की सीमाओं को फैलाने की कोशिश करते हैं। वे कहानियों का आकर्षण बढ़ाने के लिए या उन्हें ख़ास श्रोताओं के लिए और ज़्यादा प्रासंगिक बनाने के लिए या फिर उन्हें किसी ख़ास उद्देश्य की पूर्ति के लिए इस्तेमाल करने के लिए स्थापित कहानियों में फेरबदल भी कर लेते हैं। प्री-स्कूल कक्षाओं के ज़्यादातर बच्चों को बड़ों द्वारा अपनी कहानियों में किया गया फेरबदल अच्छा नहीं लगता। हो सकता है कि वे प्यासे कौवे की कहानी में किए गए संशोधनों को शुरू में ही ख़ारिज कर दें। यह भी हो सकता है कि कोई बच्चा ज़ोर से कह उठे, "नहीं नहीं, प्यासा कौवा तो अकेला था!" किसी कहानी का परिचित होना उसे बच्चों के लिए प्रिय बनाता है। मगर शुक्र मनाइए कि बच्चे बदलाव को पसन्द करते हैं, कई बार तो चाहते हैं कि कहानी में कुछ नई बात जोड़ी जाए। किसी मोड़ पर बच्चे कहानी से अपने परिचय की जगह नवीनता को तरजीह देने के लिए राज़ी रहते हैं। अगर कहानी सुनाने वाला बच्चों को किसी नई कहानी की रचना में शामिल कर ले, उनके सुझावों को आमंत्रित करे तो यह बदलाव बहुत स्वाभाविक रूप से होता है। अच्छा सोचो कि कौवा बहुत आलसी रहा होता तो? क्या वह कोई और तरीक़ा अपना सकता था? क्या वह अपनी चोंच से घड़े में सुराख कर सकता था? कोई बच्चा कह सकता है कि शायद कठफोड़वा होता तो ऐसा कर लेता।

कहानियों की मदद से गणित पढ़ाना

कहानी सुनाना बच्चों के सम्प्रेषण समझने की क्षमताएँ निर्मित करने के लिए बहुत मददगार साबित होता है। भाषा की कक्षा में अध्यापक बच्चों को प्रोत्साहित कर सकते हैं कि वे किसी कहानी में आए सारे विशेषणों के विलोम शब्दों का इस्तेमाल करके एक बिल्कुल नई कहानी बनाएँ। विज्ञान की कक्षा में बच्चे यह देखने की कोशिश कर सकते हैं कि बाल्टी के पानी में कंकड़ डालते रहने से पानी वाकई ऊपर आता है या नहीं। और गणित की कक्षा में और बहुत कुछ किया जा सकता है।

> इंटरनेशनल जरनल ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च में 2021 में छपे एक फिनिश (Finnish) अध्ययन के मुताबिक, "शिक्षकों द्वारा अपनी कक्षाओं के भौतिक परिवेश में और अपनी शिक्षण विधियों में 'कहानीकरण' का किस तरह इस्तेमाल किया जाता है, इसके इर्द-गिर्द किए गए केन्द्रित संकेतीकरण से कहानीकृत शिक्षण विधि के नज़रियों और अनुभवों का वर्णन करने के छह तरीक़े सामने आए : अध्यापन के साथ मेल (समेकन), शिक्षा का उद्देश्य प्रदान करना, माहौल (संकेतन), विद्यार्थी का (दुर्) व्यवहार, विद्यार्थी की क्षमताओं का समावेश और कहीं पहुँचने का बोध।"

कौवे की इस कहानी की मदद से जोड़, घटाना, गुणा और भाग, सभी सिखाए जा सकते हैं। मान लीजिए कि घड़े में 30 कंकड़ डाले गए। अगर हर कौवे ने घड़े में एक कंकड़ डाला तो आपके हिसाब से कुल कितने कौवे रहे होंगे। अगर सिर्फ़ 15 कौवे आए होते तो प्रत्येक कौवे को कितने कंकड़ डालने पड़ते? और अगर सिर्फ़ 10 कौवे रहे हों तो?

हम इस कहानी का इस्तेमाल रूप और संरचना, पदार्थ, ठोस और द्रव, एवं आयतन आदि अवधारणाएँ पढ़ाने के लिए भी कर सकते हैं। गणित और विज्ञान जैसे अमूर्त विषयों में सीखना आमतौर पर तर्क की बजाय रटने के सहारे होता है। लेकिन, अगर कहानियाँ अच्छी तरह सुनाई जाएँ तो वे बच्चों के ज़ेहन में लम्बे समय तक टिकी रहती हैं और इससे बच्चे स्वाभाविक ढंग से सीख पाते हैं।

कहानियों से अध्यापकों को किसी अवधारणा से बच्चों को परिचित कराने, सीखने को ज़्यादा प्रासंगिक बनाने और किसी अमूर्त अवधारणा से आसानी से उनका परिचय कराने के लिए उनका ध्यान खींचने में मदद मिलती है। मिसाल के तौर पर, आप बच्चों को सम और विषम संख्याएँ कैसे पढ़ाते हैं? हैपी मैथ्स शृंखला में मैंने एक ऐसे बुज़ुर्ग की कहानी गढ़ी थी जिसमें उस बूढ़े की ऐसी प्यारी आदत थी जिसे उसका पोता पकड़ लेता है और वह यह समझ जाता है कि सम और विषम संख्याओं का असली ज़िन्दगी में महत्त्व होता है, कम-से-कम उसके दादा की ज़िन्दगी में तो ज़रूर है! *एक, तीन, पाँच, मदद! मदद!* में लेखक कुझाली मैनिकेवल भँवरे, जालीदार पंखों वाले पतंगों, रंग-बिरंगे पतंगों, मकड़ियों और अन्य जीवों का उल्लेख करते हैं ताकि इनकी मदद से बच्चों का ध्यान खींच सकें, न केवल उन्हें सम और विषम संख्याओं की तरफ़ बल्कि जोड़ की तरफ़ भी। सोनल गुप्ता वासवानी द्वारा चित्रांकित इस कहानी को जिस भी कक्षा में सुनाया जाता है, वहाँ छोटे बच्चे जोश से कूदने लगते हैं!

स्टार्ट, ज़ूम, स्टॉप!

कहानियों में हमारे जाने बिना ख़ुद-ब-ख़ुद पनपने की एक ताक़त होती है। जब कोई शिक्षक कहानी सुनाने को एक उपकरण के तौर पर इस्तेमाल करने का फ़ैसला लेता है तो कहानी के अन्त और सीखने के अपेक्षित परिणाम को ज़ेहन में रखना महत्त्वपूर्ण होता है। *किसे मिली बकरी* कहानी में अपर्णा अत्रेया दो प्यारे असुरों को लेकर आती हैं जिनके बीच यह होड़ है कि कौन ज़्यादा नीर-मोर (मसालेदार छाछ) पीएगा। इस कहानी का आशय भिन्नों को मज़ेदार ढंग से प्रस्तुत करना है। क़िरदारों के नाम और श्रेया सेन के चित्र पूरी कक्षा को ठहाकों के महासागर में तब्दील कर सकते हैं बशर्ते शिक्षक सही जगह पर रुककर गणित की ओर न बढ़ जाएँ!

सालों पहले एक दफ़ा जब मैं कक्षा-5 के बच्चों को अंकों का जादू पढ़ा रही थी तो इस मौज-मस्ती में कुछ ज़्यादा ही दूर तक बहती चली गई। मैंने विद्यार्थियों को काग़ज़ के हवाई जहाज़ बनाकर, उन पर कूटबद्ध सन्देश लिखने और कक्षा के भीतर उन्हें उड़ाने के लिए प्रोत्साहित किया था। जिस किसी को जो जहाज़ मिलता उसे उस जहाज़ पर लिखे सन्देश का कूटानुवाद करना होता। बच्चों के इस जोश और मस्ती में हम ऐसे बहते चले चले गए कि प्राचार्य साहब कब दरवाज़ा खोलकर अन्दर आ गए हमें पता ही नहीं चला। मेरी धृष्टता देखिए कि मैंने फिर भी यही सोचा कि वे गणित की कक्षा में इस जीवन्तता को देखकर कितने ख़ुश होंगे। मगर ऐसा नहीं हुआ। उन्होंने मुझे कक्षा के बाहर बुलाया और उस दिन मुझे उनसे अपनी ज़िन्दगी की सबसे कठोर फटकारों में से एक सुनने को मिली।

सच्ची कहानियाँ

एक कहानी सुनाने वाले के तौर पर अपने अनुभव में मैं यह कह सकती हूँ कि जब मैंने कहानी के इस्तेमाल से किसी अवधारणा को समझाने की कोशिश की है तो मैं अपनी शुरुआती मिथ्या धारणाओं को समझने और उन पर सवाल उठाने में सफल रही हूँ। सारी अवधारणाओं को आप कहानी के ज़रिए नहीं सिखा सकते। और न ही सारी कहानियाँ गणित पढ़ाने के लिए काम की साबित होती हैं। परियों की कहानियों और राजा-रानी की कहानियों जैसी उन बहुत सारी कहानियों (जिनके साथ हम बड़े हुए हैं) में आज के हिसाब से राजनीतिक तौर पर आपत्तिजनक सन्देश होते हैं इसलिए उनका इस्तेमाल न करना ही बेहतर होगा। क्या हमें ऐसी लोककथाओं का इस्तेमाल करना चाहिए जो काफ़ी हिंसात्मक प्रतीत होती हैं, जैसे कि वह कहानी जिसमें एक भेड़िया नन्ही बच्ची को निगल जाता है और लकड़हारा उस भेड़िए का पेट चीर देता है। इस तरह की कहानियों का इस्तेमाल न ही किया जाए तो बेहतर है।

हमारे इर्द-गिर्द फैली असली कहानियों में शिक्षाशास्त्रीय दृष्टि से बहुत भारी सम्भावनाएँ छिपी होती हैं। आप इस तरह की कहानियों को ज़्यादा विश्वास के साथ सुना सकते हैं और विद्यार्थी उनके पाठों और असली दुनिया में सीधा सम्बन्ध देख सकते हैं। जरा मेघालय की पहाड़ियों से आई एक ख़बर को देखें जहाँ खासी, गारो और जैंतिया नामक तीन प्रमुख जनजातियाँ बसती हैं। भारत और दुनिया के ज़्यादातर हिस्सों के विपरीत इन लोगों के जीवन जीने के ढंग और परम्पराएँ बहुत भिन्न हैं। उदाहरण के लिए, इस इलाक़े की लड़कियाँ अपने सरनेम के रूप में अपनी माँ के परिवार का नाम लगाती हैं। वे अपनी माँओं से विरासत में ज़मीन प्राप्त करती हैं और सबसे बड़ा हिस्सा सबसे छोटी बेटी के पास जाता है। उन्हें विरासत में बीजों का ज्ञान हासिल होता है। और वे अपने घरों से खेतों के बीच कई खड़ी और फिसलन भरी सीढ़ियाँ (कई बार तो 2500 सीढ़ियाँ तक) चढ़ती-उतरती हैं।

असामान्य और दिलचस्प तथ्यों से भरी इस कहानी का इस्तेमाल दूरियों, माप (आपके हिसाब से इस कहानी में हर पायदान की ऊँचाई कितनी होगी?) और मानक माप की ज़रूरत के बारे में पढ़ाने के लिए किया जा सकता है। इसके अलावा यह भी पढ़ाया जा सकता है :

- आयतन : एक मुट्ठी बीजों का आयतन कितना होगा?
- द्विआयाम और त्रिआयाम : अगर बीजों को ज़मीन पर सपाट फैला दिया जाए तो मुट्ठी भर बीज कितनी जगह घेरेंगे?
- भाग और तर्क : अगर दो बेटियों की माँ, बिबियाना रानी के पास 10 इकाई ज़मीन है तो वे पूरी ज़मीन को अपनी

बेटियों के बीच कितने तरह से इस प्रकार बाँट सकती हैं कि छोटी बेटी को बड़ी बेटी के मुक़ाबले ज़्यादा ज़मीन मिले?

सारांश

पाठ योजनाएँ तैयार करने में जितनी मेहनत, समय और लगन लगती है, उसके बाद अधिकांश शिक्षकों के पास दूसरे लोगों की ऐसी कहानियों को पढ़ने, देखने का बहुत ही कम समय बचता है जो उनके काम से सीधे जुड़ी हुई प्रतीत नहीं होतीं।

Given below is a list of articles and videos that teachers may find interesting and valuable in teaching maths.

https://www.sciencedirect.com/science/article/pii/S0883035520318346?via%3Dihub

https://www.mathsthroughstories.org/about-us.html

https://storyweaver.org.in/stories/51422-one-three-five-help?mode=read

https://storyweaver.org.in/stories/92172-happy-maths-numbers

https://storyweaver.org.in/stories/356934-who-got-the-goat

https://www.yesmagazine.org/democracy/2016/01/08/in-photos-the-seed-saving-farmers-who-pass-down-land-to-their-daughters

https://www.ted.com/talks/uma_adwani_the_hidden_messages_in_multiplication

---

माला कुमार एक स्वतंत्र लेखिका हैं, बच्चों के लिए किताबें लिखती हैं। वे प्रथम बुक्स में सम्पादक रह चुकी हैं। फिलहाल वे अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के प्रकाशन *आई वंडर...* की सलाहकार सम्पादक हैं। उनसे *Mala.kumar@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : योगेन्द्र दत्त **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

कहानी सुनाते वक़्त पूछे गए प्रश्न जागरूकता व समानुभूति बढ़ाने में अहम भूमिका निभाते हैं। यदि बच्चों से पूछा जाए कि अगर वे कहानी का एक पात्र होते तो क्या करते, तो इससे उनके सोचने व समस्या हल करने के कौशल-विकास में मदद मिलती है। उदाहरण के लिए, अगर कहानी सपनों के बारे में है : तुम क्या सपना देखते हो? यदि कहानी डर के बारे में है : तुम्हें किससे डर लगता है? जब तुम्हें डर लगता है तब तुम क्या करते हो? बच्चों की प्रतिक्रियाओं पर प्रश्न करने से उन्हें अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त करने का मौक़ा मिलता है और साथ ही, वे अपने जीवन को स्कूली शिक्षा के साथ जोड़ पाते हैं।

- पद्मा बी. एम., कहानियों द्वारा सीखना, पेज 41

कक्षा में कहानी सुनाने की गतिविधियाँ

नबनिता देशमुख

कहानी सुनाने पर चल रहा शोध[i] उन विद्यार्थियों के साक्षरता कौशल में उल्लेखनीय सुधार पर प्रकाश डालता है जो नियमित रूप से कहानियाँ सुनते हैं। एक लेख[ii] बताता है कि जिन बच्चों को छोटी उम्र में कहानी सुनने के मौक़े मिलते हैं, उनमें कल्पनाशीलता, समानुभूति, सहनशीलता और पूर्वानुमान लगाने जैसी महत्त्वपूर्ण क्षमताएँ विकसित होती हैं जो उन्हें आत्मविश्वास के साथ जीवन जीने में मदद करती हैं।

> जो कहानियाँ इशारों, आवाज़ के उतार-चढ़ाव, ठहरावों, चेहरे के भावों और सामग्री का उचित उपयोग करते हुए सुनाई जाती हैं, वे शिक्षण का प्रभावशाली साधन बन जाती हैं। फिर शिक्षक उनका उपयोग उन विद्यार्थियों के साथ आत्मविश्वासपूर्वक कर सकते हैं जो एक नई भाषा सीखने में संघर्ष कर रहे होते हैं। कहानियाँ सबसे प्रभावी तब होती हैं जब उनका चयन विद्यार्थियों की उम्र, रुचियों, समझ के स्तर और पृष्ठभूमि के अनुसार किया जाता है।

दुर्भाग्य से, भारत भर में कई कक्षाओं में, शिक्षक मुख्य रूप से नैतिक मूल्य प्रदान करने या व्याकरण सम्बन्धी अवधारणाएँ समझाने के लिए कहानियाँ सुनाते हैं। कहानी सुनाना सार्थक बनाने के लिए, शिक्षकों को जुनून के साथ और श्रोताओं के आनन्द के लिए कहानियाँ सुनानी चाहिए। शिक्षा या सीखने की ख़ातिर कहानियों का विच्छेदन, विश्लेषण, व्याख्या और भावानुवाद/ टीका बाद के चरण में होना चाहिए। कक्षाओं में कहानियों का उपयोग अनेक कारणों से किया जा सकता है जिनमें साक्षरता कौशल विकसित करने से लेकर अधिक मानवीय व्यक्ति बनना तक शामिल है।

यह लेख इस बात पर केन्द्रित है कि कथाकारिता किस प्रकार छोटे शिक्षार्थियों में सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने (LSRW) सम्बन्धी कौशलों के साथ-साथ उनकी कहानी समझने, उसका अनुक्रमण करने, पूर्वानुमान लगाने, दोबारा सुनाने और उसे लिखने की क्षमता में सुधार और वृद्धि कर सकती है। रचनात्मक गतिविधियों की एक सूची नीचे दी गई है जो कक्षा में की जा सकती हैं।

मौखिक कौशल

किसी भाषा को धाराप्रवाह बोलने से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास पैदा होता है और यह आत्मविश्वास व्याख्यान सुनने और शिक्षक द्वारा कही गई बातों को यांत्रिक रूप से दोहराने से नहीं, बल्कि कथाकारिता जैसी आनन्ददायक गतिविधियों में भाग लेने से प्राप्त होता है।

गतिविधि : स्टोरी बैग

उद्देश्य : कहानियाँ बनाने में बच्चों की मदद करना, जिससे उनकी कल्पनाशीलता और बोलने के कौशल में सुधार हो।

सामग्री : एक बैग जिसमें छोटी वस्तुएँ, जैसे इरेज़र, पेंसिल, पेन, शार्पनर, सिक्के, टॉफ़ी *आदि हों।*

प्रक्रिया :

- एक कहानी सुनाएँ और बच्चों को समझाएँ कि प्रत्येक कहानी की एक शुरुआत, एक मध्य और एक अन्त होता है।
- आगे की पंक्ति के छह विद्यार्थियों को अपनी आँखें बन्द करने और बैग से कोई एक वस्तु निकालने के लिए कहें।
- आप स्वयं बैग से कोई वस्तु चुनें।
- आपके द्वारा चुनी गई वस्तु पर एक कहानी शुरू करें और बच्चों को कहानी में अपनी वस्तुएँ शामिल करते हुए कहानी आगे बढ़ाने दें।

परिणाम : विद्यार्थी वास्तविक वस्तुओं का इस्तेमाल करते हुए, यानी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी की सामग्री और वस्तुओं का शिक्षण सहायक सामग्री के रूप में उपयोग करते हुए, एक कहानी बुनना सीखेंगे।

दोबारा सुनाने का कौशल

कहानी दोबारा सुनाना कहानी के बारे में समझ विकसित करने के लिए एक महत्त्वपूर्ण क्षमता होती है जो कहानियाँ अपने शब्दों में सुनाने में बच्चों की मदद करती है। इससे घटनाओं को क्रम से जमाने के कौशल के साथ-साथ उनके सुनने और बोलने के कौशलों में भी सुधार होता है।

गतिविधि : बॉल घुमाना

उद्देश्य : कहानी दोबारा सुनाने में बच्चों की मदद करना

सामग्री : एक गेंद

प्रक्रिया :

- कक्षा को एक कहानी सुनाएँ।
- एक गेंद लें और इसे विद्यार्थियों की ओर उछालें। जिस विद्यार्थी को यह मिल जाए वह कहानी को शुरू से दोबारा सुनाना शुरू करे। कहानी की पहली लाइन सुनाने के बाद, विद्यार्थी को गेंद दूसरे सहपाठी को देनी होगी, सहपाठी कहानी की अगली लाइन जोड़ेगा।
- गेंद इसी तरह आगे बढ़ती जाएगी। और प्रत्येक विद्यार्थी, जो इसे पकड़ता है, वह कहानी समाप्त होने तक कहानी की अगली लाइन जोड़ता जाएगा।
- समझ की जाँच के लिए अनुवर्ती (फॉलो-अप) अभ्यास के रूप में कहानी सुनाते समय जानबूझकर ग़लतियाँ करें और विद्यार्थियों द्वारा आपकी ग़लती सुधारे जाने की प्रतीक्षा करें।

परिणाम : विद्यार्थी किसी कहानी पर ध्यान देना, समझना और उत्साहपूर्वक दोबारा सुनाना सीखेंगे।

सुनने का कौशल

किसी भाषा को सीखने के लिए अच्छी तरह सुनने का कौशल महत्त्वपूर्ण होता है, लेकिन सुनने का मतलब केवल शब्दों की ध्वनि सुनना नहीं है बल्कि जो सुना गया है उसका प्रसंस्करण (processing) करना भी है। कहानियाँ सुनकर बच्चे समृद्ध शब्दावली, जटिल व्याकरणिक संरचनाएँ और स्पष्ट उच्चारण ग्रहण करते हैं और शिक्षक के मार्गदर्शन और सहायता से उनके पढ़ने और लिखने के कौशलों में अपने आप सुधार होता है।

गतिविधि : संगीतमय कहानी

उद्देश्य : श्रव्य (ऑडियो) संसाधनों का उपयोग करते हुए विद्यार्थियों के सुनने के कौशल में सुधार करना

सामग्री : संगीत वाद्ययंत्र या विभिन्न ध्वनियों की रिकॉर्डिंग; मोबाइल फ़ोन और स्पीकर

प्रक्रिया **:**

- ऐसी कहानी चुनें जिसमें कई ध्वनि प्रभाव हों, जैसे पक्षियों का चहचहाना, ढोल की थाप, हवा के झोंके की सरसराहट, झरनों का कल-कल करना आदि।
- कक्षा में कहानी सुनाएँ।
- उन बिन्दुओं पर रुककर कहानी दोबारा सुनाएँ जहाँ कोई आवाज़ आती हो, जैसे पक्षियों की आवाज़। स्पीकर के माध्यम से पक्षियों के चहचहाने की आवाज़ की रिकॉर्डिंग चलाएँ।
- विद्यार्थियों को उनकी उम्र और स्तर के आधार पर ध्वनि सुनकर अँग्रेज़ी में शब्द ज़ोर-से बोलना होगा, जैसे 'चीप-चीप', 'ट्वीट-ट्वीट' या 'ट्विटर'।
- कहानी तब तक दोबारा सुनाना जारी रखें जब तक कहानी से 'ध्वनि-शब्दों' की सूची समाप्त न हो जाए।
- अनुवर्ती अभ्यास के रूप में, विद्यार्थियों को अपने द्वारा सीखे गए कुछ 'ध्वनि शब्दों' का उपयोग करते हुए वाक्य ज़ोर-से बोलना होंगे या लिखना होंगे।

परिणाम : संगीत वाद्ययंत्रों और रिकॉर्डिंग के उपयोग से विद्यार्थियों की शब्दावली और समझ में सुधार होगा।

अनुक्रमण यानी क्रम से जमाने का कौशल

अनुक्रमण से बच्चों को वह समझने में मदद मिलती है जो वे पढ़ते या सुनते हैं। इससे उन्हें कहानी के घटकों को पहचानने और फिर उसे क्रमबद्ध तरीक़े से दोबारा सुनाने में भी मदद मिलती है। अनुक्रमण कौशल समझ सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण रणनीतियाँ होती हैं, विशेषकर विवरणात्मक विषयों के लिए।

गतिविधि : रीडिंग कोन

उद्देश्य : पढ़ने और अनुक्रमण सम्बन्धी कौशल विकसित करना

सामग्री : कहानी का पन्ना, पेंसिल, नोटबुक

प्रक्रिया :

- किसी पत्रिका या समाचार पत्र से बच्चों की कहानी वाला पन्ना चुनें।
- पन्ने को एक कोन में रोल करें और अन्दर देखने के लिए सिरे पर एक छोटा-सा छेद रखें।

***चित्र-1** : रीडिंग कोन।*

- विद्यार्थियों को छेद के माध्यम से झाँकने और कोन के अन्दरूनी पन्ने पर छपे शब्द या वाक्यांश पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें।
- पेपर कोन खोलें। कहानी का मध्य भाग पढ़ें और विद्यार्थियों से कहानी की शुरुआत या अन्त सुनाने या लिखने के लिए कहें।
- अनुवर्ती अभ्यास के रूप में, विद्यार्थियों को कहानी से पात्र, वस्तुएँ या क्रियाएँ बताने, लिखने या चित्रित करने के लिए कहें।

परिणाम : विद्यार्थियों में क्रमानुसार कहानी सुनाने और लिखने की प्रेरणा बढ़ेगी।

वाक्य बुनाई

सही और स्पष्ट रूप से लिखने की क्षमता किसी भी चुनौतीपूर्ण लेखन कार्य को एक सन्तोषप्रद अनुभव में बदल सकती है। वाक्य-निर्माण कौशल का विकास अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होता है, विशेषकर प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों के लिए।

गतिविधि : दो हिस्सों का खेल

उद्देश्य : विद्यार्थियों को वाक्यों की शुरुआत और अन्त को जल्दी से जोड़ने में मदद करना

सामग्री : काग़ज़ की पट्टियाँ जिन पर आंशिक वाक्य लिखे हों

प्रक्रिया :

- विद्यार्थियों को पहले सुनाई गई किसी कहानी के अधूरे/आधे वाक्यों वाली काग़ज़ की पट्टियाँ वितरित करें।
- विद्यार्थियों को एक-दूसरे के सामने दो लाइनों में खड़ा करें। पहली लाइन के विद्यार्थियों के पास वाक्यों के शुरुआत की पट्टियाँ होंगी और दूसरी लाइन के विद्यार्थियों पास वाक्यों के अन्त की पट्टियाँ।
- आपके 'गो' शब्द बोलने पर, दोनों लाइनों के विद्यार्थी अपने सम्बन्धित साथियों को खोजने के लिए दौड़ेंगे और अपने वाक्यों को पूरी कक्षा के सामने ज़ोर-से पढ़ेंगे।
- कहानी या किसी पैराग्राफ़ को दोबारा बनाने के लिए इस तरह सभी वाक्य-जोड़ों की पट्टियाँ देकर विद्यार्थियों को क्रमबद्ध खड़े रहने के लिए प्रोत्साहित करें।

परिणाम : विद्यार्थी खेल के माध्यम से पढ़ने, समझने और वाक्यों के हिस्सों को क्रम से जमाने के लिए प्रेरित होंगे।

प्रश्न पूछने के कौशल

प्रश्न पूछना एक महत्त्वपूर्ण कौशल है जिससे तर्क और विचार शक्ति विकसित होती है। प्रश्न पूछना सीखने से, एक विद्यार्थी की जानकारी और ज्ञान इकट्ठा करने की क्षमता में सुधार होता है, साथ ही उसके मौखिक कौशल में भी सुधार होता है।

गतिविधि : पाँच प्रश्न

उद्देश्य : विद्यार्थियों में प्रश्न पूछने के कौशल विकसित करना

सामग्री : कुछ नहीं

प्रक्रिया :

- कक्षा में एक कहानी सुनाएँ और एक विद्यार्थी (विद्यार्थी-1) से कहानी में से किसी वस्तु या व्यक्ति के बारे में सोचने के लिए कहें।
- अन्य विद्यार्थियों में से प्रत्येक विद्यार्थी को सही उत्तर पाने के लिए प्रयास करने और अनुमान लगाने के लिए विद्यार्थी-1 से पाँच प्रश्न पूछने होंगे। सही उत्तर पाने के लिए वस्तु की भौतिक विशेषताओं (आकार, साइज़, रंग) या व्यक्ति (उम्र, तौर-तरीक़े, पहनावे) के बारे में प्रश्न पूछे जा सकते हैं।

परिणाम : विद्यार्थी कहानी बेहतर ढंग से समझेंगे और प्रश्न पूछना सीखेंगे।

पूर्वानुमान कौशल

पूर्वानुमान बच्चों को प्रश्न पूछने और आलोचनात्मक ढंग से सोचने के लिए प्रोत्साहित करता है। इससे इस बात में भी मदद मिलती है कि वे जो कहानी सुनते या पढ़ते हैं उस पर अधिक ध्यान देते हुए उसे बेहतर ढंग से समझ सकें और उसका अनुक्रमण कर सकें।

गतिविधि : तुड़ी-मुड़ी स्टोरी बॉल

उद्देश्य : विद्यार्थियों के सुनने, पढ़ने और लिखने के कौशल में सुधार करना

सामग्री : पुरानी पत्रिकाओं और समाचार पत्रों के कहानी के पन्ने

प्रक्रिया :

- बच्चों की किसी पुरानी पत्रिका या अख़बार से कहानी का एक पन्ना काट लें।
- पन्ने को तोड़-मोड़कर एक गेंद बना लें।
- किसी विद्यार्थी को अपने पास बुलाएँ और उसे 'स्टोरी बॉल' पर दिखाई दे रहे कुछ शब्द ज़ोर-से पढ़ने के लिए कहें और उसे तथा अन्य को अनुमान लगाने के लिए कहें कि कहानी किस बारे में हो सकती है।
- तुड़े-मुड़े पन्ने को खोलें और विद्यार्थी को कहानी का कुछ भाग पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें और अन्य विद्यार्थियों को कहानी के अन्त की कल्पना कर उसे ज़ोर-से बोलने दें या लिखने दें।

परिणाम : विद्यार्थियों के पढ़ने के कौशल में सुधार होगा और वे किसी कहानी का पूर्वानुमान लगाना और समझना सीखेंगे।

***चित्र-2** : तुड़ी-मुड़ी कहानी गेंद।*

व्याकरण सम्बन्धी योग्यता

व्याकरण में शब्द-भेद (पार्ट्स ऑफ़ स्पीच) को 'वाक्यों का मूलभूत अंग' माना जाता है। अँग्रेज़ी में व्याकरणिक रूप से सही वाक्य लिखने के लिए, बच्चों को इनमें से कम-से-कम कुछ का ज्ञान होना चाहिए।

गतिविधि : स्टोरी लिफ़ाफ़ा

उद्देश्य : विद्यार्थियों को शब्द-भेद सही ढंग से पहचानने और उनका उपयोग करने में मदद करना

सामग्री : काग़ज़ की पर्चियाँ जिन पर किसी कहानी के शब्द लिखे हों, लिफ़ाफ़े

प्रक्रिया :

- कक्षा को एक कहानी सुनाएँ और उसके छपे हुए प्रारूप की फ़ोटोकॉपी बनाएँ।
- छपी हुई कहानी से संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण और क्रियाविशेषण काटकर अलग-अलग लिफ़ाफ़ों में रखें।
- विद्यार्थियों को समूहों में विभाजित करें और प्रत्येक समूह को वाक्य बनाने के लिए लिफ़ाफ़ों का एक सेट दें।
- जो समूह सबसे अधिक संख्या में सही वाक्य बनाता है उसे कक्षा में उन्हें ज़ोर-से पढ़ने का मौक़ा मिलता है।
- समझ का आकलन करने के लिए अनुवर्ती अभ्यास के रूप में, विद्यार्थियों से कहानी के कुछ शब्दों या वाक्यांशों की नक़ल करने के लिए कहें और दूसरों को सही उत्तर देने दें।

परिणाम : विद्यार्थी कहानी सुनकर और समूह खेल खेलकर व्याकरण का सही उपयोग करना सीखेंगे।

कुछ प्रतिफल

बच्चों में साक्षरता और अन्य क्षमताएँ विकसित करने के लिए इस लेख में वर्णित गतिविधियाँ अरुणाचल प्रदेश, असम, नागालैंड और ओडिशा के स्कूलों में आज़माई गई हैं। कुछ स्कूलों में विद्यार्थियों के उत्साह और कक्षा में उनके प्रदर्शन में सुधार हुआ है, साथ ही स्वयं या अपने शिक्षकों की मदद से कहानियाँ समझने, सुनाने, दोबारा सुनाने, पढ़ने और लिखने की उनकी क्षमता में भी सुधार हुआ है।

कहानी से जुड़ी इन गतिविधियों में मौजूद मज़े के तत्व ने छोटे बच्चों को बेहतर और तेज़ी से सीखने के लिए प्रेरित किया है। उन्होंने शिक्षकों को कक्षा में कहानियों का रचनात्मक उपयोग करने के लिए भी प्रेरित किया है। ऐसा करने से शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों को लाभ हुआ है। यह एक दिलचस्प गतिविधि के रूप में उभरी है जो भाषा की कक्षाओं को और अधिक मनोरंजक और शिक्षाप्रद बना सकती है।

Endnotes

i The role of storytelling on language learning: A literature review. Semantic Scholar. https://www.semanticscholar.org/paper/The-role-of-storytelling-on-language-learning%3A-A-Lucarevschi/6afa2c67e6b53337ff4b833d975b6939ec3650e6

ii Why is storytelling important to children? BBC Teach. https://www.bbc.co.uk/teach/teach/why-is-storytelling-important-to-children/zvqcnrd

नबनिता देशमुख एक शिक्षिका, शिक्षक-शिक्षिका हैं और बच्चों के लिए कहानियाँ और कविताएँ लिखती हैं। वे पूर्वोत्तर भारत के स्कूलों और समुदायों के साथ शिक्षा के क्षेत्र में बड़े पैमाने पर काम करती हैं। पढ़ना, चित्रकारी, हस्तकला और खेल उनके शौक़ हैं। उनसे deshmukh.nitu@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : सुबोध जोशी **पुनरीक्षण :** अतुल वाधवानी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

धानी के तीन दोस्त | कक्षा में कहानी

अनुजा हल्दर

कहानियाँ आमतौर से सभी आयु वर्ग के बच्चों को आकर्षित करती हैं और उनमें रुचि पैदा करती हैं। लेकिन यह तब होता है जब उन्हें इसमें सक्रिय तरीक़े से भाग लेने का अवसर मिलता है और यह समझने का मौक़ा मिलता है कि कहानी में क्या घटित हो रहा है। अध्यापकों के लिए भी, यह एक ऐसे उपकरण का काम कर सकता है जिसके माध्यम से विभिन्न विकासात्मक क्षेत्रों और सीखने के परिणामों तक पहुँचा जा सकता है।

कक्षा-1 और 2 के विद्यार्थियों के साथ कहानी सुनाने के सत्रों के मेरे शुरुआती अनुभव बहुत सफल नहीं रहे थे। बच्चों का ध्यान केन्द्रित करने का समय चूँकि बहुत कम होता है, अतः कहानी शुरू होने के कुछ मिनटों के बाद ही बच्चों की सक्रिय भागीदारी बन्द हो जाती थी। मैंने इस बात को समझा कि कहानी का सार बच्चों को विभिन्न क़िरदारों और उनकी भावनाओं के साथ जोड़े रखना है न कि बच्चों के ज्ञान का मूल्यांकन करने के लिए उनसे सवाल करना। शुरू में मैं कहानी के प्रत्येक पन्ने से बच्चों से कई सवाल पूछती थी। इससे कहानी के साथ उनका नाता बाधित हो जाता था और बच्चों की उसमें रुचि ख़त्म हो जाती थी। जब मैंने अपने हाव-भाव और आवाज़ के उतार-चढ़ाव के साथ कहानी सुनाने का प्रयास किया और उनसे बहुत सवाल नहीं पूछे तब मैंने ध्यान दिया कि विद्यार्थी कहानी को ज़्यादा ध्यान से सुनने लगे।

इसी तरह मैंने यह कल्पना नहीं की थी कि मैं कहानी सुनाने के सत्रों में आँगनवाड़ी केन्द्रों के बच्चों (तीन-पाँच साल के) को कहानी के साथ जोड़ने में सफल हो पाऊँगी। लेकिन जब मैंने सर्किल टाइम के दौरान कहानी सुनना शुरू किया तो वे इतने ज़्यादा ध्यान से कहानी सुनने लगे कि एक सत्र के बाद कहानी के क़िरदारों के चित्र भी बनाने लगे। अब वे अपने शब्दों में, मतलब अपने घर की भाषा में या कला के माध्यम से कहानी को बयान कर सकते थे। जब मैं बच्चों के बीच लड़ाई-झगड़े, शोर मचाने या दिए गए कामों को न करने जैसे मुद्दों का सामना करती थी तो कहानी सुनाना एक सामान्य शिक्षणविधि के रूप में मेरी मदद भी करता था। विद्यार्थियों के साथ जब भी मेरी पाठ योजनाएँ असफल हो जातीं तो कहानी सुनाना मेरे लिए काम आ जाता या मेरी रक्षक रणनीति बन जाता। यह गतिविधि आँगनवाड़ी, प्राथमिक और उच्च प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के साथ अच्छी तरह काम आई है।

मैंने वह क्रमिक रूपान्तर देखा कि कैसे किताब पढ़ने में रुचि न लेने वाले विद्यार्थी भागकर पुस्तकालय की ओर जाते और मुझसे कहानी पढ़ने का इसरार करने लगते। मैंने यह सीखा कि कैसे कहानी सुनाने का तरीक़ा भी महत्त्वपूर्ण है। एक कहानी सुनाने वाले को निम्न चीज़ें अवश्य करनी चाहिए —

- आवाज़ और स्वर के उतार-चढ़ाव के कौशल हासिल करना।
- कहानी कहने के ढंग के अनुरूप अपनी भाव-भंगिमाओं को ढालना।
- ऐसी कहानियाँ चुनना जो सुनने वालों की रुचि की हों।
- जो कहानी आप सुनाने जा रहे हैं, उसकी कई बार तैयारी करें और उचित योजना बनाएँ।
- उचित शिक्षण-अधिगम सामग्री (TLM) का प्रयोग करें।
- सत्र के पहले अभ्यास करें।

मेरे विचार से कहानी सुनाने की गतिविधि ऐसी होनी चाहिए कि सुनने वालों को अलग और स्वतंत्र तरीक़े से सोचने का अवसर उपलब्ध हो। अलग दृष्टिकोण और राय रखने के अवसर प्रदान करने चाहिए और इनके लिए प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, कहानी का अन्त बच्चों के लिए खुला छोड़ देना चाहिए ताकि वे उसकी व्याख्या कर सकें।

बड़ी किताब (बिग बुक) की कहानी : धानी के तीन दोस्त

मैंने एक आँगनवाड़ी केन्द्र के बच्चों को एक बड़ी किताब, *धानी के तीन दोस्त* से एक हिस्सा पढ़कर सुनाया और उनसे इस बात का अर्थ लगाने के लिए कहा कि कहानी के बीच में कौवे को क्या हुआ होगा (बच्चों को किताब में बने चित्रों को देखकर अपनी कल्पनाओं और तर्कों के आधार पर मुझे बताना था)। बच्चे बहुत उत्सुक थे और उनके पास तमाम सवाल थे, जैसे सभी जानवर कहाँ गए? धानी दुखी क्यों थी?

मैंने उनसे कहा कि सोचो और मुझे बताओ। मैं यह देख सकती थी कि वे ख़ुद सोच रहे थे और घटनाओं के बीच सम्बन्ध

जोड़ पा रहे थे और मैंने कहानी को भाव-भंगिमा के साथ सुनाना जारी रखा। एक विद्यार्थी ने कहा, "कौवे का एक्सीडेंट हुआ और उसका पैर टूट गया, इसलिए कौवा तेज़-तेज़ से रोने लगा।" एक अन्य विद्यार्थी ने कहा, "कौवा भूखा है इसलिए रो रहा है।" फिर एक अन्य बच्चे ने कहा, "गर्मी के कारण कौवा उड़ते-उड़ते नीचे गिर पड़ा।" मैं हैरान थी कि एक ही चित्र को देखकर ये बच्चे नए-नए विचार ला पा रहे थे। एक शिक्षक के रूप में मैंने इसकी सराहना की और सत्र के दौरान निर्देश देने वाले की बजाय एक मददगार के रूप में काम किया।

पूर्व स्कूली शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण लक्ष्य है कि बच्चे प्रभावी ढंग से संवाद करने वाले बन सकें। कहानी सुनाने के सत्रों के दौरान बच्चों को अभिव्यक्ति के अवसर देकर इसे हासिल किया जा सकता है। आगे बढ़कर इसे शिक्षा के व्यापक उद्देश्यों के साथ जोड़ा जा सकता है, जैसे कि व्यक्ति को विचारों की स्पष्टता और निर्णय लेने की क्षमता वाला एक तार्किक और स्वतंत्र चिन्तक बनाना, बजाय ऐसा व्यक्ति होने के जो तथ्यों को बिना तर्क के स्वीकार कर लेता हो।

प्रभावी ढंग से कहानी सुनाना

छोटे बच्चों के लिए शिक्षणविधि के रूप में कहानियों और कहानी की किताबों के प्रभावी इस्तेमाल के लिए निम्न बातें ध्यान में रखी जानी चाहिए —

कहानी की किताबों का चयन

- कहानी की किताबों में पाठ्य कम और चित्र ज़्यादा होने चाहिए।
- ये चित्र चमकदार और रंगीन होने चाहिए ताकि बच्चे आकर्षित हों और इनके साथ जुड़ाव महसूस करें।
- कहानी के क़िरदार और सन्दर्भ बच्चों की रुचि के होने चाहिए, जैसे जानवर, प्रकृति आदि।
- कहानी की किताब में चित्र और पाठ्य का सामंजस्य इस तरह होना चाहिए कि छपे हुए शब्दों के प्रति बच्चे जागरूक बन सकें।
- कहानियाँ बहुत लम्बी नहीं होनी चाहिए क्योंकि बच्चों का ध्यान केन्द्रित करने का समय कम होता है।
- कहानियों की भाषा सरल होनी चाहिए। उदाहरण के लिए अगर कहानी का पाठ्य लयात्मक है तो विद्यार्थियों के लिए उसे समझना और कक्षा के दौरान दोहराना आसान होता है। इससे मौखिक भाषा के विकास में और सुनने तथा ध्यान केन्द्रित करने का समय बढ़ाने में सहायता मिलती है।

कहानी के बाद

- कहानी सुनाने के प्रत्येक सत्र के बाद एक निर्देशित बातचीत करें या कहानी से सम्बन्धित खुले सवाल पूछें, ताकि कहानी के बारे में बच्चों की समझ का मूल्यांकन किया जा सके। साथ ही उन्हें मौखिक व लिखित रूप से अथवा चित्र बनाते हुए रचनात्मक अभिव्यक्ति व सोच-विचार के अवसर भी उपलब्ध कराए जा सकें।
- सत्र के दौरान एक साथ कई सवालों से बचना चाहिए क्योंकि इससे सुनने वालों का कहानी के साथ रिश्ता बाधित होता है। सवाल खुले होने चाहिए जिससे विद्यार्थियों को अपने आस-पास के वातावरण से जोड़कर सोचने और जवाब देने का अवसर मिल सके। उदाहरण के लिए इस कहानी को पढ़ने के बाद मैंने निम्न सवाल पूछे : "क्या धानी की तरह आपके भी कोई जानवर दोस्त हैं? अगर हैं, तो कौन-से जानवर? आपका जानवर दोस्त क्या खाना पसन्द करता है?" इन सवालों से बच्चे अपने वास्तविक दुनियावी सन्दर्भ में सीखते हैं, बात करते हैं, समस्या सुलझाते हैं, सवाल पूछते हैं, सूचनाएँ साझा करते हैं, विचारों का आदान-प्रदान करते हैं और सूचनाओं को वर्तमान ज्ञान और कौशल के साथ जोड़ते हैं और प्रतिक्रिया देते हैं।

जिज्ञासा और रुचि को जगाना

- कहानी सुनाने के विभिन्न तरीक़ों को उनके लिए सुलभ बनाना। जैसे पिक्चर कार्ड, बड़ी किताबों, डण्डियों पर लगी कठपुतलियों का इस्तेमाल करना। रचनात्मक आत्म अभिव्यक्ति के मौक़े देना जैसे सवालों के जवाब देना या कहानी के बारे में अनुमान लगाना। सीखने के कई उदेश्यों को पूरा करते हुए कला के माध्यम से अभिव्यक्ति करना या भूमिका निर्वाह करना, जहाँ बच्चा मौखिक रूप से, भाव-भंगिमाओं व दृश्य कलाओं आदि के माध्यम से विभिन्न प्रकार के माध्यमों/ रूपों (संगीत, कला, नृत्य, नाटक) का इस्तेमाल करते हुए विचारों, कल्पनाओं, भावनाओं को अभिव्यक्त व निरूपित करता है।
- विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए शिक्षकों को विद्यार्थियों को सवालों, क्रियाओं, भाव भंगिमाओं, ध्वनि शब्दों के दोहराव जैसी गतिविधियों में शामिल करना चाहिए। इससे उनकी आत्म अभिव्यक्ति और भाषा का विकास बेहतर होता है। उदाहरण के लिए, कहानी में जानवरों की ध्वनि जैसे कौवे की काँव-काँव और बिल्ली की म्याऊँ-म्याऊँ थी। ऐसा करना प्रारम्भिक ध्वन्यात्मक जागरूकता कौशलों से सीधे जुड़ता है और वातावरण में समान ध्वनियों को चिन्हित करता है।

एक शिक्षणविधि के रूप में कहानी सुनाना शिक्षक के लिए वह अवसर उपलब्ध कराता है जहाँ वह एक ही कहानी का अनेक तरीक़ों से प्रयोग कर सकती है, विद्यार्थियों को और कहानियाँ बनाने तथा बेहतर कहानी कहने वाला, बनने के लिए मार्गदर्शन कर सकती है। इससे न सिर्फ़ सीखने के एक महत्त्वपूर्ण उपकरण के उद्देश्य की पूर्ति होती है बल्कि बच्चों की बेहतरी होती है और उन्हें ढेर सारा आनन्द मिलता है।

नोट :

1. *धानी के तीन दोस्त, सुरेश स्वप्निल, रूम टू रीड इंडिया।*
2. *बड़ी क़िताबें (बिग बुक) उन छोटे बच्चों के लिए होती हैं जो पढ़ना सीख रहे हैं। ये बच्चों को मुद्रित सामग्री के साथ जोड़ने में मदद करती हैं ताकि वे अपने आप किताबों की ओर देखने, पन्ने पलटने और उन्हें पढ़ने के लिए प्रेरित हो सकें।*

अनुजा हल्दर अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन के साथ एक एसोशिएट (2021-22) के रूप में काम कर चुकी हैं। वे खटीमा, उधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड में अँग्रेज़ी और ईसीई के लिए रिसोर्स पर्सन थीं। उन्होंने अँग्रेज़ी में स्नातकोत्तर किया है और जेंडर स्टडीज़ में पीएचडी करने जा रही हैं। नाटक और जेंडर स्टडीज़ में उनकी गहरी रुचि है। उनसे *anujahalder18@gmail.com* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : मनीष आज़ाद **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

लाइटनिंग (बड़ी किताब) | कक्षा में कहानी

कमलेश चन्द्र जोशी

स्कूली बच्चों को *लाइटनिंग* जैसी बड़ी क़िताबों से कम ही अवगत कराया जाता है। इस प्रकार की सामग्री स्कूलों में आसानी से उपलब्ध नहीं होती है। जब बच्चे पहली बार लाइटनिंग किताब देखते हैं, तो वे बहुत उत्साहित हो जाते हैं क्योंकि उन्होंने पहले कभी इतने बड़े आकार की किताब नहीं पढ़ी होती है। इस किताब में एक बड़ी किताब की सभी विशेषताएँ हैं और इसकी सामग्री बच्चों के लिए प्रासंगिक है और उन्हें नए अनुभव प्रदान करती है। जब हम बच्चों को पढ़ना सिखाने के शिक्षाशास्त्र पर विचार करते हैं, तो इस किताब में बच्चों के लिए अनुमान लगाने और चित्रों के स्पष्टीकरण सामने रखने के कई अवसर हैं। चित्र बहुत आकर्षक और मनोरंजक हैं। कुछ स्कूलों में कक्षा-1 और 2 के विद्यार्थियों के यह किताब पढ़ने के अनुभव इस लेख में साझा किए गए हैं।

यह कहानी लाइटनिंग नाम की एक मशहूर बाघिन की है, जो रणथम्भोर के जंगलों (रणथम्भोर राष्ट्रीय उद्यान) में रहती है। किताब के चित्रों को देखकर बच्चों को पता चलता है कि जंगल में एक साँप, एक हिरण, एक पक्षी और एक मन्दिर है। तस्वीरें उन्हें लाइटनिंग की पूरे दिन की नियमित गतिविधियों से भी परिचित कराती हैं। यह किताब इस मायने में अनूठी है कि यह जंगली जानवरों के बारे में हमारी धारणा को चुनौती देती है कि वे ख़तरनाक होते हैं और हम पर हमला करते हैं और उनके प्रति हमारी संवेदनशीलता की भावना को बढ़ावा देती है। उत्तराखण्ड के अख़बारों में इन्सानों या मवेशियों पर बाघ या तेंदुए के हमले की ख़बरें छपना आम हैं। परिणामस्वरूप, बाघ के बारे में लोगों की धारणा एक ख़तरनाक जानवर की है। और बच्चे भी यही सीखते हैं। इससे जानवरों के प्रति हमारी संवेदनशीलता प्रभावित होती है, जो नैतिक उपदेश तक ही सीमित है।

किताब के पहले कुछ पन्नों पर चित्र और विवरण (रणथम्भोर) जंगल और लाइटनिंग के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध को दर्शाते हैं। यह जंगल और गाँव के लोगों दोनों से रिश्ता है। इससे पाठक को यह भी पता चलता है कि किस तरह एक जंगल और उसमें रहने वाले जानवरों और पक्षियों के बीच सहजीवी सम्बन्ध होता है और साथ ही इसमें मनुष्य के साथ जंगल के सम्बन्ध की पड़ताल की गई है। कहानी इस रिश्ते को मज़बूत करती चलती है। कुछ स्थानों पर, किताब हमें अपनी पूर्वकल्पित धारणाओं और जानवरों के साथ हमारे सम्बन्धों पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित करती है।

जब बच्चे पहली बार इस किताब पर चर्चा करते हैं, तो वे कहते हैं कि लाइटनिंग एक शेर, चीता, बाघ इत्यादि है। बातचीत के दौरान बाघ की ख़ास विशेषताओं/ लक्षणों को समझाने की ज़रूरत पड़ी। किताब पढ़ते समय बच्चों को बताया गया कि लाइटनिंग जंगल में घूम रही है, अब पानी पीने जा रही है और अब एक पेड़ के नीचे बैठी है। जब उनसे पूछा गया कि कहानी में आगे क्या होगा, तो बच्चों ने कहा कि वह एक जानवर पर हमला करेगी।

लेकिन कहानी में अप्रत्याशित मोड़ तब आता है जब लाइटनिंग एक कुएँ में गिर जाती है और बच्चे सोचने लगते हैं कि क्या हुआ होगा। वे इस बात से हैरान हैं कि जब सब कुछ इतना अच्छा चल रहा था, तो अचानक यह घटना क्यों घटी? उन्होंने उजले चित्र देखे थे और उनसे प्रसन्न हुए थे। लेकिन अचानक अगली छवि काली थी! बच्चों को निराशा महसूस हुई। जब उन्होंने उस कुएँ के अन्दर की तस्वीर देखी जिसमें लाइटनिंग गिरी थी तो वे चौंक गए। वे उसके बारे में चिन्तित हो गए और सोचने लगे कि वह कैसे जीवित रहेगी। हालाँकि इससे उन्हें परेशानी हुई, फिर भी उन्होंने आशा व्यक्त की कि अन्ततः उसे बचा लिया जाएगा। उनके विश्वास की पुष्टि तब होती है जब कहानी में, ग्रामीण एकत्र होते हैं और उनमें से एक फ़ोन करता है। कहानी ने उन्हें इस तरह तल्लीन रखा।

किताब के शीर्षक को लेकर भी बहस हुई। बच्चों ने लाइटनिंग की आँखों के बारे में अनुमान लगाया कि वे रात में बिल्ली की आँखों की तरह चमकती होंगी और इस तरह उसका नाम लाइटनिंग पड़ा; या कि उसका नाम उसकी दहाड़ के कारण रखा गया होगा, जो बारिश के दौरान बिजली की चमक और गड़गड़ाहट के समान है।

बच्चों को यह कहानी सुनाते समय, जब हम इस बिन्दु पर पहुँचते हैं कि लाइटनिंग कुएँ में है, तो मैं बच्चों से पूछता हूँ, "आपको क्या लगता है कि लाइटनिंग कैसे निकलेगी?" बच्चे अपने अनुभवों के आधार पर विचार प्रस्तुत करते हैं। कुछ बच्चे सुझाव देते हैं कि कुएँ में सीढ़ी डालकर उसे बाहर निकाला जा सकता है; कोई कहता है कि उसे खुदाई मशीन की मदद से बाहर लाया जा सकता है; एक अन्य बच्चा सोचता

है कि वह अपने पंजों का उपयोग करके बाहर आ जाएगी; या उसे रस्सी का उपयोग करके बाहर खींचा जा सकता है। कोई और सुझाव देता है कि एक बचाव दल तैनात किया जाना चाहिए और कुछ यह भी सुझाते हैं कि पुलिस को बुलाना चाहिए। बाद में, जब वे तस्वीर में एक ग्रामीण को फ़ोन करते हुए देखते हैं, तो उन्हें एहसास होता है कि वह पुलिस को बुला रहा है। कुछ लोग वन रक्षकों और अधिकारियों का भी उल्लेख करते हैं।

कहानी में बाद में, जब वे बाघिन को ट्रैंक्विलाइज़र गन से बेहोश करके बचाए जाते हुए देखते हैं, तो उनके दिमाग़ इस सम्भावना के प्रति खुल जाते हैं और उन्हें एक नया दृष्टिकोण प्राप्त होता है कि जानवरों को बचाने के प्रयास कैसे किए जाते हैं। उसे बेहोश करने के लिए बन्दूक से इंजेक्शन कैसे लगाया जाता है? यह कहाँ दिया जाता है? फिर उसे बाहर कैसे निकाला जाता है? बच्चों की आँखें आश्चर्य से फटी रह गईं। जैसे-जैसे हम कहानी को आगे बढ़ाते हैं, कोई भी उनकी प्रत्याशा को महसूस कर सकता है।

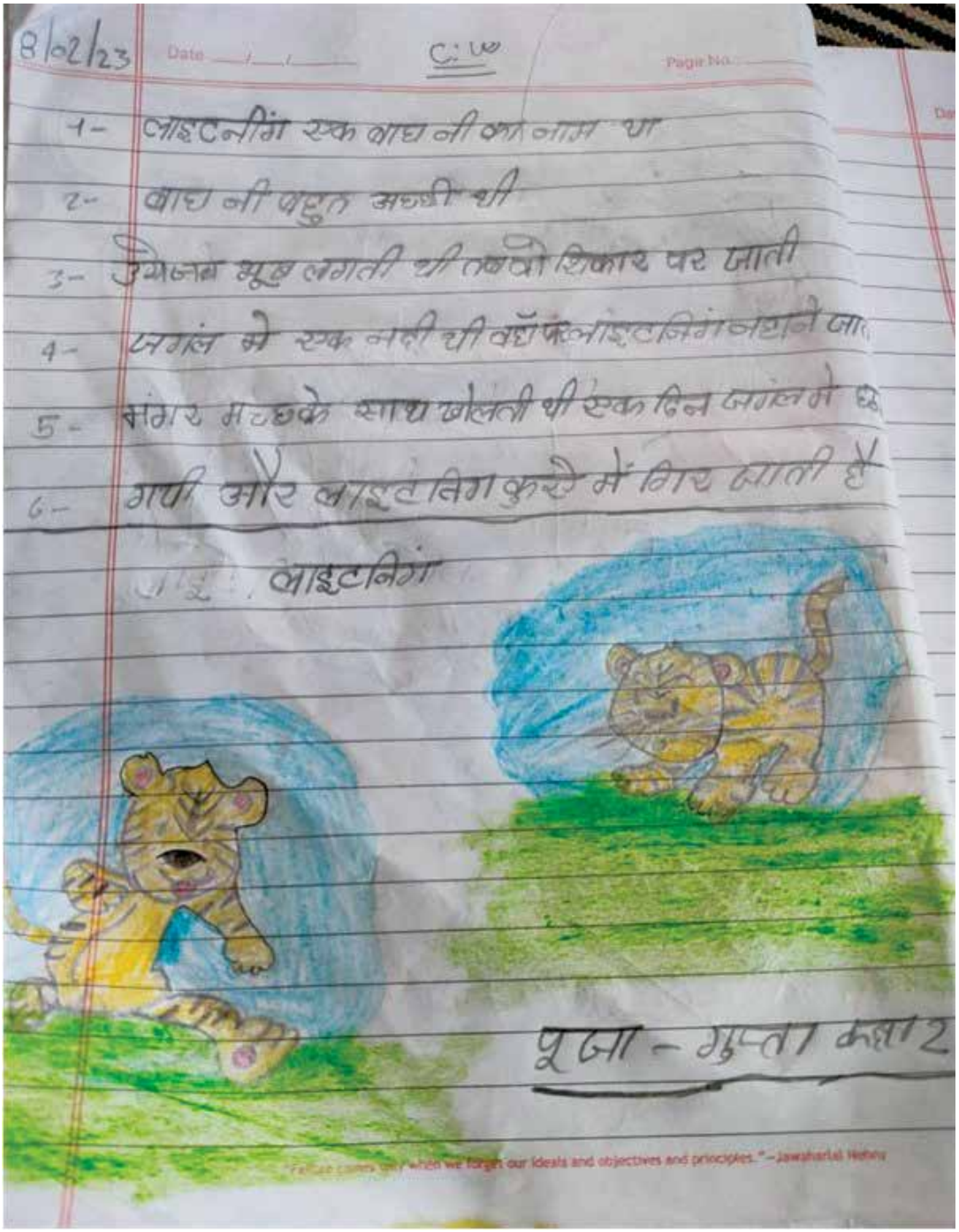

चित्र-1 : *शासकीय प्राथमिक विद्यालय, पकड़िया, खटीमा, उत्तराखण्ड के कक्षा-2 के विद्यार्थी द्वारा बनाया गया कहानी पर आधारित चित्र।*

कुएँ से निकाले जाने के बाद जब लाइटनिंग को इलाज के लिए वैन में ले जाया जाता है तो बच्चों को राहत महसूस होती है। कहानी सुनने के बाद, जिस स्कूल में मैंने इसे पढ़ा, वहाँ के बच्चों ने कहा कि कहानी मज़ेदार थी। उन्होंने पूछा, "क्या आप कल आओगे?" इस किताब की ख़ास बात यह है कि इसमें बच्चों को यह अनुमान लगाते रहना होता है कि आगे क्या होगा। इस तरह बच्चों की क़िताबों में रुचि बढ़ती है।

अवलोकन

जब हम बच्चों के साथ पढ़ने या उनके साथ चर्चा करने के लिए किसी किताब का चयन करते हैं, तो हमें ख़ुद से पूछना चाहिए, "इस किताब में ऐसा क्या ख़ास है जो बच्चों से जुड़ेगा और उन्हें एक अलग दृष्टिकोण या कुछ नए विचार और सोचने के अवसर भी देगा?" यह इस धारणा के समान है कि साहित्य पढ़ने से हम 'नए' बन जाते हैं; कि हम वे लोग नहीं रह जाते जो हम थे। यह एक अच्छी किताब का आनन्द है। यह भी सम्भव है कि कोई किताब उनकी दीर्घकालिक स्मृतियों में विशेष स्थान बना ले; जिसे भुलाया नहीं जा सकता। किसी किताब को बच्चों के साथ 'जोड़ना' इस बात पर निर्भर करता है कि किताब को सुनाने वाला व्यक्ति बच्चों को किताब किस तरह पेश करता है।

कहानी सुनने के बाद, बच्चे ख़ुद को अभिव्यक्त करने के लिए किताब पर आधारित अपने चित्र बनाते हैं। वे किताब के लिए नए शीर्षक भी सुझाते हैं। इससे उनके विचार प्रेरित होते हैं। इसके साथ ही हम इस बारे में भी बात करते हैं कि वे अपने आस-पास के जानवरों और पक्षियों की कैसे मदद करते हैं। उन्होंने पिल्लों की मदद करने के अपने अनुभवों के बारे में बात की। परिणामस्वरूप, हमारा मानना है कि बच्चों में क़िताबों के प्रति प्रेम विकसित करने के ऐसे अवसर नियमित रूप से प्रदान किए जाने चाहिए। बेशक, जब बच्चों को पढ़कर सुनाने के लिए किताबें चुनने की बात आती है तो शिक्षक की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। अच्छी किताबें चुनने के लिए शिक्षक को बच्चों के लिए अच्छे साहित्य की समझ हासिल करनी चाहिए। एक और महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि बच्चों को पढ़कर सुनाना अभ्यास के साथ बेहतर होता है : शिक्षक जितना अधिक पढ़ेंगे, वे उतने ही बेहतर बनेंगे।

नोट

बड़ी किताबें उन छोटे बच्चों के लिए होती हैं जो पढ़ना सीख रहे हैं। ये किताबें बच्चों को मुद्रित सामग्री से जोड़ने में मदद करती हैं ताकि वे स्वयं किताबें देखने, उलटने-पलटने और पढ़ने के लिए प्रेरित हों।

References

Lightning (*Big Book*) Author: Prabhat, Illustrator: Allen Shaw. Jugnoo Prakashan, an imprint of Ektara Trust. https://www.ektaraindia.in/ektarashop/Lightning?search=Big%20Book&description=true

कमलेश चन्द्र जोशी लम्बे समय से प्राथमिक शिक्षा से जुड़े रहे हैं। वे प्रारम्भिक साक्षरता, बच्चों के साहित्य और शिक्षक शिक्षा सहित विभिन्न शैक्षिक मुद्दों के बारे में जुनूनी हैं। वे वर्तमान में उत्तराखण्ड के उधमसिंह नगर में अज़ीम प्रेमजी ज़िला संस्थान में कार्यरत हैं। उनसे *kamlesh@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : निशान्त राणा **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

पाठ्यचर्या की विषय-वस्तु को कहानियों से जोड़ना | मेरे अनुभव

मथुमिता आर.

कहानियों के प्रति मेरे लगाव के कारण ही मैं एक-दूसरे से जुड़ने के इस माध्यम को कक्षाओं में उपयोग में लाती हूँ। मैं यह उम्मीद करती हूँ कि शायद कहानी पढ़ने और सुनने के प्रति मेरे उत्साह से कुछ छोटे विद्यार्थी प्रभावित हों।

मैं पिछले साल जून में सागर, मध्य प्रदेश के एक स्कूल में नियमित दौरे पर गई थी और बच्चों को सुनाने के लिए मैंने कुछ कहानियाँ तैयार की थीं। कक्षा-1 से 3 के बहुकक्षा बहु-स्तरीय (एमजीएमएल) शिक्षक और मैंने उस दिन की योजना पर चर्चा की। शिक्षक ने मुझे सूचित किया कि उस दिन दो कविताओं को दोहराने का अभ्यास करना था। दोनों कविताएँ पाठ्यपुस्तक से थीं, एक कविता गाय के बारे में थी और दूसरा घोंसला बना रहे एक पक्षी के बारे में। इसलिए, हमने मिलकर कविताओं को दोहराने की योजना में उन जानवरों को शामिल किया जिन्हें बच्चे पहले से जानते थे।

इसके बाद, मैंने "हर पेड़ ज़रूरी है" कहानी को पढ़कर सुनाया (स्तर-2, प्रथम बुक्स)। इस कहानी में संख्याओं, विभिन्न प्रकार के पेड़ों और उन पर बैठने वाले पक्षियों, विभिन्न फूलों और वे कहाँ उगते हैं इसका ज़िक्र है। बच्चे क़िताब में उल्लिखित पेड़ों जैसे, बरगद, पीपल, नीम, इमली, जामुन और पक्षियों व कीड़ों जैसे तोते और मधुमक्खी के नामों से परिचित थे। लेकिन चमगादड़ के चित्र दिखाने और उसके लटकने के तरीक़े की तरफ़ इशारा करने के बाद भी बच्चे कबूतर और चमगादड़ के बीच के अन्तर को नहीं समझ पा रहे थे। फिर जब मैंने बच्चों से कहा कि यह चमगादड़ है, तब उनमें से एक बच्चे ने कहा उसने इसे रात में खाने के बाद बाहर खेलते वक़्त देखा है। इस बातचीत से बच्चों को अपने अनुभव साझा करने और उनसे सीखने का अवसर मिला।

फिर, शिक्षक ने अपने बचपन का क़िस्सा बताया जब उन्हें कई बार जुगनुओं को देखने का मौक़ा मिला। लेकिन जुगनुओं को अब ढूँढ़ना मुश्किल है। बच्चे यह जानने के लिए उत्सुक थे कि जुगनू को उसकी रोशनी कहाँ से मिलती है। उनके उत्तर बहुत दिलचस्प थे; उन्होंने बैटरी और सौर ऊर्जा का उल्लेख किया और एक टीवी शो का भी जिसमें एक भालू जुगनू को अपनी रोशनी को जंगल में ढूँढ़ने में मदद करता है!

चूँकि हमें पक्षियों और घोंसले से जुड़ी एक कविता करनी थी और हमने पेड़ से सम्बन्धित कहानी पढ़ ली थी, मैंने सोचा कि हम बच्चों को बाहर ले जा सकते हैं, और उन्हें आस-पास के विभिन्न प्रकार के पेड़ दिखा सकते हैं। चूँकि बच्चे स्कूल के आस-पास के घरों से आते हैं, इस भ्रमण ने उन्हें हमें अपने स्थानीय पेड़ों को दिखाने का और उनकी प्रजातियों को इंगित करने का भी मौक़ा दिया।

स्कूल के ठीक सामने एक बड़ा पेड़ है (वह असल में तीन पेड़ हैं जो एक साथ बढ़ रहे हैं) एक बरगद, एक पीपल और एक नीम। तीनों पेड़ों की तने और शाखाएँ एक-दूसरे में गुँथी हुई हैं। हमने इन तीनों पेड़ों की अलग-अलग विशेषताओं जैसे पत्तियों के आकार, रंग और बनावट और बरगद के पेड़ की लटकती जड़ों को इंगित कर उन पेड़ों के बीच के अन्तर को समझने में बच्चों की मदद की। उस पेड़ के नीचे कुछ बुज़ुर्ग लोग आराम कर रहे थे जिन्होंने बच्चों को छूने और महसूस करने के लिए कुछ पत्तियाँ दीं।

बच्चों ने गिलहरियों को हवाई जड़ों के माध्यम से पेड़ पर चढ़ते और कौवे और गौरैया जैसे कुछ पक्षियों को पेड़ की तरफ़ उड़ते और बैठते हुए देखा। एक बच्चे ने पेड़ पर मधुमक्खी का छत्ता देखा और कुहनी से इशारा करके मुझे रुककर उसे देखने को कहा। फिर हम आस-पास थोड़ा घूमे जहाँ हमने पपीता और बेर जैसे अन्य पेड़ों का निरीक्षण किया। बच्चे इन पेड़ों से परिचित थे।

जब हम कक्षा में वापस आए, तो प्रत्येक बच्चे अपने साथ अलग-अलग पेड़ों से पत्ते लाए थे। शिक्षक और मैंने बच्चों से उनके इस भ्रमण पर चर्चा की। फिर हमने अलग-अलग पत्तियों के आकार और उनके नाम को लेकर एक पोस्टर बनाया और उसे कक्षा में लगा दिया। इसके बाद हमने घोंसला बना रही चिड़िया के बारे में एक कविता हाव-भाव के साथ बोली। बच्चों ने पेड़ पर बने घोंसलों में पक्षियों को देखने के बारे में अपने अनुभव साझा किए। एक बच्चे ने बताया कि कैसे एक कबूतर ने उनकी छत पर लकड़ी के टुकड़ों से अपना घर बनाया था।

कहानियों को पाठ्यक्रम की ज़रूरतों से जोड़ना

फिर शिक्षिका ने उस पाठ को शुरू किया जो उन्हें पढ़ाना था और उन्होंने पहले बच्चों से पेड़ पर आधारित एक चित्र चर्चा

की और कुछ संकेतों के साथ उन्हें बताया कि किस तरह पेड़ हमारे दोस्त हैं।

- यदि पेड़ आपके मित्र होते, तो आप उनके साथ क्या करते?
- आप उन्हें कहाँ ले जाते? क्यों?
- आप किन पेड़ों को अपना दोस्त बनाते? क्यों?

बच्चों के उत्तर भी विविध थे। वे मुख्य रूप से आम, अमरूद, अनार, इमली और नीम के पेड़ों को अपना दोस्त बनाना चाहते थे। उन्होंने इन पेड़ों को इसलिए चुना था क्योंकि ये बड़े पेड़ हैं और वे उनके नीचे खेल सकते हैं, उनकी छाया में आराम कर सकते हैं, उनके फल बेचकर पैसे कमा सकते हैं। जब पूछा गया कि पेड़ उन्हें अपने फल देने और उन्हें बेचकर पैसा कमाने देने के लिए क्यों राज़ी होगा?

तब एक बच्चे ने जवाब दिया की पेड़ भी अपने फल देकर दोस्ती में अपना योगदान देगा।

दृष्टिकोण और शैक्षणिक तौर-तरीक़े

मुझे समझ आया कि कहानी सुनाने के तरीक़े को अपनाने और बातचीत व चर्चा के मौक़े देने से न सिर्फ़ मुझे 'हर पेड़ ज़रूरी है' कहानी को बच्चों तक ले जाने का मौक़ा मिला बल्कि इससे शिक्षक को भी अपनी कक्षा की ज़रूरतों के अनुसार इसमें बदलाव कर बच्चों की रुचि और ध्यान को पकड़ने और बनाए रखने तथा निरन्तरता बनाने में मदद मिली।

पाठ्यचर्या की विषयवस्तु भी महत्त्वपूर्ण है जैसे 'हर पेड़ ज़रूरी है' कहानी ने ही बच्चों को सक्रिय और रुचिपूर्ण तरीक़े से भागीदारी करने के लिए प्रोत्साहित किया। बच्चे इसलिए सक्रिय हुए क्योंकि वे इस विषय के बारे जानते थे और चर्चा में अपना योगदान दे सकते थे। बच्चों के बीच इस तरह के संवादों के साथ ही कक्षा में सामूहिक चर्चाओं और साझेदारी का हिस्सा होना सचमुच आनन्ददायक और समृद्ध करने वाला था।

सक्रिय रूप से और तत्क्षण सिखाने के नए तरीक़ों को एकीकृत करने की कोशिश करते हुए पाठ्यचर्या को आगे बढ़ाने का अनुभव मेरे लिए बहुत दिलचस्प था। यह अनुभव न सिर्फ़ बच्चों के लिए बल्कि शिक्षक और मेरे लिए भी काफ़ी आनन्ददायक था। एक तरह से, इस प्रक्रिया के माध्यम से बच्चे अपने परिवेश को कक्षा में पढ़ी जाने वाली बातों से और गहरे व सार्थक ढंग से जोड़ पाए। दिन के अन्त में, शिक्षक ने मुझसे कहा, "मुझे लगा कि आप बस कोई कहानी सुनाने वाली हैं; मैंने नहीं सोचा था कि हम यह सब करेंगे और आज की तय पाठ्य-योजना को भी पूरा कर पाएँगे!" उन्होंने कहा कि इस तरह के शैक्षणिक दृष्टिकोण ने उन्हें आस-पास उपलब्ध सभी संसाधनों को रोज़मर्रा की कक्षा की गतिविधियों के साथ एकीकृत करने का एक तरीक़ा बता दिया था।

बच्चों के लिए दोस्ताना रवैया

उपरोक्त उदाहरण कक्षा की प्रक्रिया का एक उदाहरण है। मैं कई अन्य उदाहरणों के बारे में सोच सकती हूँ जिन्होंने बच्चों के साथ शिक्षक और मुझे चकित किया और दिखाया कि सरल-सी कहानी सुनाने की गतिविधि कक्षा में और हर बच्चे के भीतर सोचने, कल्पना करने और संवाद करने का एक संसार खोलने में कितनी मदद कर सकती है।

अकादमिक भाषा में कहें तो, शैक्षणिक दृष्टिकोण के रूप में कहानी सुनाना सीखने के निम्नलिखित बुनियादी परिणामों को प्राप्त करने में मदद करता है :

- चित्रों को शब्दों से जोड़ना।
- चित्र में दिखाई देने वाली परिचित वस्तुओं के नाम बताना।
- मौखिक रूप से या अगर बच्चे चाहें तो लिखित रूप से (वाक्यांशों/ छोटे वाक्यों में) समझ-आधारित उन प्रश्नों का उत्तर देना जो कि बच्चों की घर की भाषा/ स्कूल की भाषा/ अँग्रेज़ी/ सांकेतिक भाषा की कहानी से सम्बद्ध होते हैं।
- किसी कहानी के पात्रों और घटनाक्रम को पहचान पाना।
- घर की भाषा/स्कूल की भाषा/ अँग्रेज़ी/ सांकेतिक भाषा में पात्रों, कथानक आदि पर मौखिक रूप से अपनी राय रखना और इनसे जुड़े प्रश्न पूछना।
- चित्र बनाकर या कुछ शब्द/छोटे वाक्य लिखकर कहानी पर प्रतिक्रिया देना।
- अपने स्वयं के अनुभवों पर विचार करना और उन्हें कक्षा की चर्चा में शामिल करना।

कहानियों के साथ उनके अपने मूल्य और पाठ्यचर्या की विषयवस्तु से जोड़ने के उद्देश्य की वजह से बार-बार जुड़ने के कारण मुझे बार-बार जॉन होल्ट के उन शब्दों की याद आई जो मैंने उनकी क़िताब *हाउ चिल्ड्रन लर्न* में पढ़े थे : "इसे आस्था (Faith) कह सकते हैं। आस्था यह है कि मनुष्य प्राकृतिक रूप से एक सीखते रहने वाला प्राणी है। इसलिए, हमें बच्चों को सीखने के लिए 'प्रेरित' नहीं करना है। हमें इस बात के लिए बार-बार उनके दिमाग़ों की जाँच-पड़ताल करने की ज़रूरत नहीं है कि वे सीख रहे हैं या नहीं। हमें जो करना चाहिए और बस यही करना चाहिए कि हम दुनिया को जितना हो सके उतना स्कूल और कक्षा में लेकर आएँ; बच्चों को उतनी सहायता और मार्गदर्शन दें जितना उनके लिए ज़रूरी हो या जितना वे माँगें; उन्हें जब बात करने का मन हो उनकी बातों को सम्मानपूर्वक सुनें; और फिर उनके रास्ते से हट जाएँ। बाक़ी बातें सम्भालने के लिए हम उन पर भरोसा कर सकते हैं।'

References

Har Ped Zaroori Hai by Praba Ram and Sheela Preuitt, Pratham Books. Illustrated by Sangeetha Kadur.Translated by Deepa Tripathi. https://storyweaver.org.in/stories/17146-har-ped-zaruri-hai

मथुमिता आर. वर्तमान में चामराजनगर, कर्नाटक में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन में भाषा की रिसोर्स पर्सन के रूप में कार्यरत हैं। उन्होंने अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु से शिक्षा में मास्टर डिग्री प्राप्त की है। वे बच्चों के साथ जुड़ने के प्रति बहुत उत्सुक रहती हैं, ख़ासतौर पर प्रकृति, कहानी सुनाने और रंगमंच आधारित गतिविधियों के माध्यम से। उनसे *mathumitha.r@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : सन्दीप दुबे **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

कहानियों द्वारा सीखना

पद्मा बी. एम.

परिचय

कहानियाँ जी लुभाती हैं व सभी के द्वारा पसन्द की जाती हैं। हमारे इतिहास और मिथकशास्त्र कहानियों से भरे पड़े हैं और अपने बचपन में सुनी कहानियाँ हम कभी नहीं भूलते। कन्नड़ा में, कागक्का *गुबक्का* (कौवा और गौरैया), *गोविना हाड़ु* (गाय का गीत), *एलु समुद्रदा आछे इरुवा राक्षसा* (सात समुद्र पार रहने वाला राक्षस) जैसी कहानियाँ हमेशा याद की जाती हैं। चूँकि कहानियाँ सभी को पसन्द होती है, मैं दृढ़ता से आग्रह करती हूँ कि स्कूलों में सभी विषय कहानियों के माध्यम से पढ़ाए जाएँ।

बच्चों की कहानियों की खोज

कन्नड़ा में बच्चों की कहानियाँ ढूँढ़ते वक़्त, मैं सिर्फ़ 'कथात्मक कविताएँ' ही ढूँढ़ पाई। चित्र पुस्तकें कहीं नहीं थीं। अधिकतर क़िताबें अनुवादित थीं जिनमें शब्दों का इस्तेमाल, वाक्य संरचना और कुछ प्रसंग बच्चों के संज्ञानात्मक स्तर के परे थे। तब मुझे हमारी संस्कृति में अन्तर्निहित लोककथाओं के पुनर्लेखन और साथ ही, हमारे परिवेश के प्रति प्रासंगिक कुछ नई कहानियों को लिखने का ख़्याल आया। चूँकि अध्यापक बच्चों के साथ मेलजोल करते हैं और उन्हें अच्छी तरह जानते हैं, उनके द्वारा लिखी गई कहानियाँ प्रासंगिक व सार्थक होती हैं। बेंगलूरु ज़िला संस्थान (अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन) ने बच्चों के लिए कहानियों का संग्रह तैयार करने के उद्देश्य से आँगनवाड़ी और सरकारी प्राथमिक स्कूलों के शिक्षकों के लिए कहानी-लेखन पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। नतीजतन हमें बहुत सारी कहानियाँ मिलीं।

कार्यप्रणाली

चूँकि कर्नाटक के विभिन्न क्षेत्रों की बोलियाँ, रीति-रिवाज़ और वातावरण अलग-अलग हैं, यह तय किया गया कि कहानियाँ रचने के लिए सभी क्षेत्रों के अध्यापकों को एक ही छत के नीचे लाया जाए। कार्यशाला से पहले, हमने बच्चों के साहित्य से बहुत-सी अनुवादित व चित्रित कहानियाँ पढ़ीं और उन्हें उनकी विषयवस्तु के अनुसार छाँटकर रख दिया। हमने कहानियों के केन्द्र और उनमें निहित सीख पर भी विचार-विमर्श किया।

कुछ कहानियाँ ऐसी थीं जिनसे बच्चे जुड़ पाए, जैसे कि अक्का तंगी गूबेगलु (उल्लू बहनें), जिसे हमने चित्रित करके द्विभाषी किताब के रूप में प्रकाशित किया था। यह कहानी उन्हीं अध्यापकों में से एक द्वारा लिखी गई थी। और भी कई थीं : हुणसे *पेपरमिंट* (इमली कैंडी), इमली कैंडी बनाते वक़्त दुविधा में पड़ी दो बहनों की कहानी; और पुट्टिया प्रश्नेगलु (पुट्टी के प्रश्न), एक छोटी-सी लड़की पुट्टी के बारे में, जो अपनी दादी के गाँव जाते समय रास्ते में आती हरेक चीज़ पर सवाल करती है। मर *राक्षस* (पेड़ पर राक्षस), एक ऐसे राक्षस की कहानी थी जो उसका पेड़ काटने आए लकड़हारे के घर बड़ी दावत खाने आता है।

चित्र-1 : *पुट्टिया प्रश्नेगलु (पुट्टी के प्रश्न) कहानी का एक चित्र। कहानी और चित्र कार्यशाला में बनाए गए थे।*

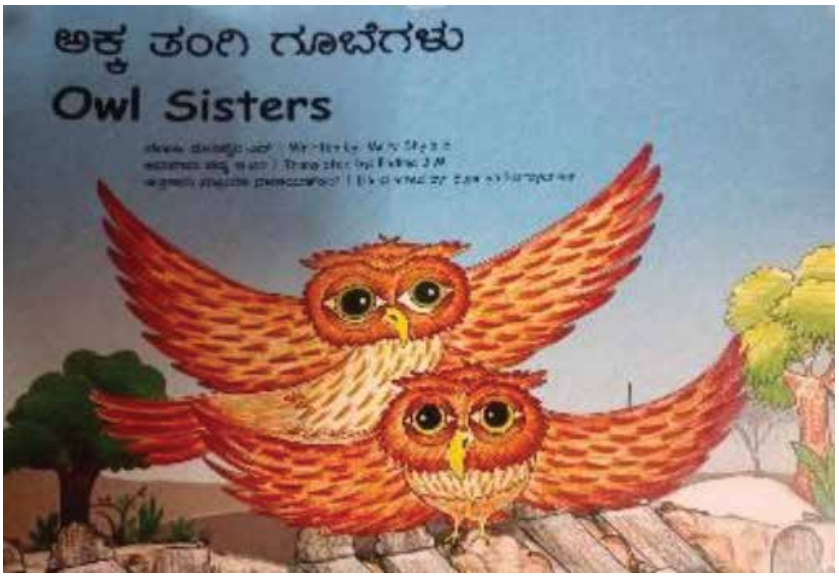

चित्र-2 : *अक्का तंगी गूबेगलु (उल्लू बहनें), कहानी का एक चित्र। कहानी और चित्र कार्यशाला में बनाए गए थे।*

बच्चे इन कहानियों के साथ जुड़ पाए और उन्हें ये बहुत ही रोचक व मज़ेदार लगीं। बच्चों के भाषा विकास में इन कहानियों का व्यापक रूप से प्रयोग किया गया। उदाहरण के तौर पर, हुणसे *पेपरमिंट* (इमली कैंडी) कहानी में, कैंडी बनाने में इस्तेमाल की जाने वाली सामग्री की सूची बच्चों ने ख़ुद ही बनाई थी। एक अन्य उदाहरण के तौर पर, मैंगलोर के एक अध्यापक ने, मौसम (नमी) और संस्कृति की अवधारणाएँ पेश करती अपनी कहानी तम्पु *गालि* में, हाथ-पंखा झलने की पद्धति का इस्तेमाल किया।

कथाकारिता और अधिगम

हमने प्रथम और नेशनल बुक ट्रस्ट (एनबीटी) द्वारा प्रकाशित पुस्तकों का इस्तेमाल न सिर्फ़ भाषा विकास को बल्कि गणित व विज्ञान के हमारे शिक्षाशास्त्र को भी समृद्ध करने के लिए किया।

भाषा विकास व कल्पनाशीलता

बच्चों के ख़ुद पढ़ना सीखने से पहले, उन्हें प्राथमिक स्तर पर कहानियाँ सुनाने से उन्हें पता चलता है कि बोलचाल की भाषा अपने आप में लिखित या साहित्यिक, भाषा से अलग होती है। कहानियों द्वारा बच्चों का नई शब्दावली से परिचय होता है और वे वर्ण व उनके उच्चारण की आवाज़ पहचानने लगते हैं। उदाहरण के लिए : *मंगुविना बुगुरी* (मंगु का लट्टू, एनबीटी) में मंगु एक पुराने लट्टू को तेल और रंगों से नया 'बना' देता है। बाद में उसे उसमें एक छेद दिखाई देता है और वह उदास हो जाता है। पर जब वह उसे घुमाता है, यह देखने के लिए कि लट्टू पहले जैसे घूमता है या नहीं, तो वह हैरान रह जाता है क्योंकि अब लट्टू सीटी की आवाज़ के साथ घूमता है। अब उसके पास एक 'सीटी वाला लट्टू' है। साथ ही, यह कहानी सुनने से बच्चे ऐसे बहुत से नए शब्द सीख जाते हैं जिनसे वे सम्बन्ध रखते हैं।

कहानियाँ बच्चों की कल्पनाशीलता विकसित करती हैं व उनकी सोच पर असर डालती हैं। उदाहरण के लिए, *प्रकृतिया कोडुगे* (नेचर्स गिफ़्ट, एनबीटी) में, एक हाथी बया (एक बुनकर पक्षी; कन्नड़ा में 'गीजग') की तरह उड़ना चाहता है और क्योंकि हाथी और बया दोस्त थे, हाथी उसे यह बात बता देता है। बया अपने झुण्ड के सभी पक्षियों से एक-एक पंख लेती है और हाथी के लिए दो बड़े से पंख बुन देती है। इस बिन्दु पर, कहानी रोक दी गई और बच्चों से पूछा गया कि क्या उन्हें लगता है कि हाथी उड़ पाएगा? कुछ बच्चों ने जवाब दिया, "उड़ सकता है क्योंकि अब उसके पास इतने बड़े पंख जो हैं," लेकिन कुछ अन्य ने कहा कि हाथी उड़ने के लिहाज़ से बहुत भारी था। बच्चों ने तर्क कर अपने लिए उत्तर ढूँढ़ लिया।

एक अन्य कहानी, *ओमबत्तु पुट्टा मरिगलु* (नौ नन्हे पक्षी, एनबीटी) में, माँ मुर्गी पिता मुर्गे को अण्डों का ध्यान रखने के लिए कहती है और पानी पीने चली जाती है। लेकिन एक तूफ़ान आ जाता है और कुछ अण्डे टूट जाते हैं। मुर्गे को एक उपाय सूझता है। यहाँ पर रुककर, बच्चों से पूछा गया कि उसने क्या उपाय सोचा होगा। कुछ ने कहा कि मुर्ग़े ने अण्डों के खोल को चिपकाकर जोड़ दिया होगा, दूसरों ने सोचा कि मुर्ग़े ने क़बूल कर लिया होगा कि अण्डे टूट गए थे।

सबसे ज़्यादा हैरानी मुझे *हारलु कलित मंगट्टे मरिहक्कि* (धनेश के बच्चे ने उड़ना सीखा, एनबीटी) नाम की एक कहानी पर एक बच्चे की प्रतिक्रिया से हुई। इस कहानी में, धनेश का एक जोड़ा एक घोंसला बनाता है और उसमें तीन अण्डे देता है। धनेश का एक बच्चा पैदा होता है पर वह उड़ने से डरता है। सो बच्चे को उड़ना सीखने के लिए, बढ़ावा देने के लिए, उसके माता-पिता बाक़ी दो अण्डों को फेंक देते हैं। जब बच्चों

से अन्दाज़ा लगाने के लिए पूछा गया कि माँ ने ऐसा क्यों किया होगा, तो छह साल का एक बच्चा बोला, "इतने बच्चों को खाना खिलाना मुश्किल होता, इसलिए उसने दो अण्डे फेंक दिए!" बच्चे कितने अलग ढंग से सोचते हैं! कथाकारिता बच्चों के संज्ञानात्मक विकास में मदद करती है और उन्हें ख़ुद से सोचने के लिए प्रेरित करती है।

गणित सीखना

प्रारम्भिक गणित कहानियों द्वारा सिखाने से बच्चों को अवधारणाओं को आसानी से समझने में मदद मिलती है। ऊपर बताई गई कहानी *ओमबत्तु पुट्टा मरिगलु* में, मुर्गा आठ अलग-अलग पक्षियों के अण्डे इकट्ठे करता है और उन्हें घोंसले में रख देता है। कुछ दिनों बाद, अण्डों से चूज़े निकलते हैं और खाने की तलाश में चल देते हैं। रास्ते में उन्हें अपनी-अपनी प्रजातियों के पक्षियों के झुण्ड मिलते हैं और वे एक-एक करके अपने-अपने झुण्ड के साथ उड़ जाते हैं। प्रश्न थे : हर बार कितने पक्षी उड़ गए? कितने पक्षी बचे? इस तरह बच्चे स्वाभाविक ढंग से घटाना सीख गए।

विज्ञान सीखना

हमने एक कहानी, *मांत्रिक तुण्डु* (जादुई गुटका, प्रथम) का इस्तेमाल करते हुए बच्चों का 'चुम्बकत्व' से परिचय करवाया। एक छोटी-सी लड़की को उसके भाई के कमरे में एक चुम्बक मिलता है और वह पाती है कि कुछ चीज़ें उससे चिपकती हैं जबकि कुछ नहीं। बच्चों को कहानी सुनाने के बाद, उन्हें एक चुम्बक का टुकड़ा दिया गया और उनसे कहा गया कि जो चीज़ें उस टुकड़े के साथ चिपक रही थीं उनकी सूची बनाएँ। गतिविधि करते वक़्त भी बच्चे दिलचस्पी ले रहे थे और जिज्ञासु बने हुए थे। पक्षियों की कहानी से उन्हें पता चला कि अण्डों में से चूज़े कितने समय बाद निकलते हैं, उनकी खुराक़ व जीने का तरीक़ा कैसा होता है। एक अन्य कहानी, *मुनिया पदेड़ा निधि* (मुनिया ने पाया सोना, एनबीटी) ने उन्हें पौधे के विकास के अलग-अलग चरणों से परिचित कराया।

सामाजिक विज्ञान सीखना

प्रारम्भिक अधिगम में, परिवार, विभिन्न पेशों व क्षेत्रों, चित्रित पात्रों व घटनाओं का परिचय शामिल होता है। कहानी *क्षौरा दिनाचरणें* (सालाना बाल-कटाई दिवस, प्रथम) में, शृंगेरी श्रीनिवास, कहानी का एक पात्र, अपने बाल कटवाने कई पेशेवर लोग जैसे दर्ज़ी, बढ़ई और एक नाई के पास जाता है। कहानी के चित्रित संवादों के द्वारा बच्चे आसानी से इन पात्रों को पहचान गए। परिवार के सदस्यों को कहानी में शामिल करने से विभिन्न रिश्तों का परिचय करवाना भी आसान हो गया। एक अन्य कहानी, *सडाको ससाकी मत्तु साविरा कागदक्रेनगलु* (सडाको ससाकी एंड द थाउजेंड पेपर क्रेन्स) में, सडाको ससाकी दो साल की एक बच्ची थी जब हिरोशिमा पर परमाणु बम गिराया गया था। नतीजतन, दस साल की उम्र में उसे कैंसर हो गया। ससाकी ने एक हज़ार काग़ज़ की क्रेनें बनानी शुरू कर दीं इस उम्मीद से कि अगर वह इस लक्ष्य को पूरा कर लेती है तो वह तथा परमाणु बम के विकिरण से प्रभावित अन्य जापानी लोग ज़िन्दा रह पाएँगे। पर यह काम पूरा होने से पहले ही वह गुज़र गई और बाद में यही काम उसके दोस्तों ने पूरा किया। इस कहानी को सुनकर बच्चों के लिए बमबारी की पृष्ठभूमि और उसके परिणामों को समझना आसान हो गया।

जागरूकता बढ़ाना

कहानी सुनाते वक़्त पूछे गए प्रश्न जागरूकता व समानुभूति बढ़ाने में अहम भूमिका निभाते हैं। यदि बच्चों से पूछा जाए

***चित्र-3** : ओमबत्तु पुट्टा मरिगलु (नौ नन्हे पक्षी, एनबीटी) कहानी का एक चित्र।*

कि अगर वे कहानी का एक पात्र होते तो क्या करते, तो इससे उनके सोचने व समस्या हल करने के कौशल-विकास में मदद मिलती है। उदाहरण के लिए, अगर कहानी सपनों के बारे में है : तुम क्या सपना देखते हो? यदि कहानी डर के बारे में है : तुम्हें किससे डर लगता है? जब तुम्हें डर लगता है तब तुम क्या करते हो? बच्चों की प्रतिक्रियाओं पर प्रश्न करने से उन्हें अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त करने का मौक़ा मिलता है और साथ ही, वे अपने जीवन को स्कूली शिक्षा के साथ जोड़ पाते हैं।

मूल्य खोजना

कहानी *प्रकृतिया कोडुगे* में, जिसका उल्लेख पहले किया गया है, एक बया और हाथी दोस्त हैं। जब हाथी उड़ना चाहता है, तो बया उसके लिए पंख बुनती है और उसे उड़ना सिखाती है। पर हाथी ज़मीन पर गिर जाता है, जिससे बया उदासी और ग्लानि से भर जाती है। हालाँकि आख़िर में, बया और हाथी दोनों को एहसास होता है कि उनके शारीरिक गुण अलग-अलग हैं। जब बच्चों से इस पर उनकी राय पूछी गई, तो कुछ ने कहा पक्षी ने अपने दोस्त की मदद करके बहुत अच्छा किया। कुछ को, हाथी के गिर जाने और चोट लगने पर बया का उससे माफ़ी माँगना अनुचित लगा। एक टोली ने कहा कि उन्हें आख़िर में हाथी और बया के बीच की बातचीत अच्छी लगी। जब बच्चे अपने आप ही इतने विभिन्न दृष्टिकोणों से देख पा रहे थे, तो हमें कहानी से महज़ एक नैतिक मूल्य ढूँढ़ निकालने की ज़रूरत नहीं लगी।

कुछ उपयोगी युक्तियाँ

- बच्चों को कहानी सुनाते वक़्त किसी मज़ेदार मोड़ पर रुक जाएँ और कुछ सवाल पूछें। उन्हें कहानी पूरा करने के लिए कहें, मौखिक या लिखित रूप से। उदाहरण के तौर पर, जब यह वाक्य, "एक लोमड़ी कुएँ में गिर गई", पढ़ा गया तो सवाल पूछा गया, "तुम्हें क्या लगता है कि लोमड़ी कुएँ से कैसे बाहर आई होगी?" बच्चों ने निम्न तरीकों से कहानी पूरी की : "कुएँ में सीढ़ियाँ थी और लोमड़ी उन पर चढ़कर ऊपर आ गई।" "लोमड़ी कुएँ में फैली लताओं के सहारे ऊपर चढ़ आई" और "लोमड़ी दूसरों की सहायता से ऊपर आ गई।"
- आसान अँग्रेज़ी कहानियों का कन्नड़ा में अनुवाद व चित्रण किया जा सकता है। ऐसा किसी भी भाषा के लिए किया जा सकता है।
- जब बच्चों को चित्रों की एक शृंखला दी गई, तो उन्होंने विभिन्न कहानियाँ लिखीं जिन्हें स्कूल के पुस्तकालय में दूसरे बच्चों के पढ़ने के लिए रख दिया गया।

साथ ही, बच्चों के भाषा अधिगम में अहम भूमिका निभाने के अलावा, कहानियाँ अपने पात्रों और विषयवस्तु के द्वारा बच्चों के सामाजीकरण की महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया में भी उनकी मदद करती हैं, जो उनके स्कूली जीवन का एक बहुत ज़रूरी पहलू है।

***चित्र-4-5** : अनुवादित की गई कहानी पर बच्चों द्वारा बनाए गए चित्र।*

पद्मा बी. एम. अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन में स्रोत व्यक्ति हैं और बेंगलूरु के सरकारी स्कूलों के साथ काम करती हैं। उन्होंने कन्नड़ा में एमए किया है और वे शिक्षा के क्षेत्र में पिछले 15 वर्षों से कार्यरत हैं। उनका मानना है कि अच्छी गुणवत्ता की प्राथमिक शिक्षा बच्चों के सम्पूर्ण विकास का आधार है। उनसे padmavathamma.munivenkatappa@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : पूनम जैन **पुनरीक्षण :** अतुल वाधवानी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

कहानियाँ सम्बन्ध बुनती हैं | मेरे अनुभव

रजनी द्विवेदी

इस लेख में छोटे बच्चों को कहानियाँ सुनाने के दो अलग-अलग अनुभव प्रस्तुत हैं। एक अनुभव कक्षा का है और दूसरे में एक बच्चे के साथ अनौपचारिक बातचीत है। बच्चों को और मुझे भी ये कहानियाँ सुनने में बहुत मज़ा आया। वयस्क, चाहे वे माता-पिता हों या शिक्षक, अक्सर बातचीत शुरू करने से पहले ही बच्चों के साथ जुड़ने के उद्देश्य निर्धारित करने का प्रयास करते हैं। ये उद्देश्य आमतौर पर सीखने के कुछ पूर्व-निर्धारित परिणामों से जुड़े होते हैं। इसका एक उदाहरण यह है कि किसी कहानी या वृत्तान्त को पढ़ने के बाद, बच्चे कठिन शब्दों के अर्थ को समझ पाएँगे, कहानी को दोबारा बता पाएँगे या कम-से-कम कुछ वाक्यों में कहानी के बारे में बोल पाएँगे इत्यादि। यहाँ वर्णित बातचीत में ऐसे उद्देश्यों पर विचार नहीं किया गया था।

मैंने बस बच्चों को कहानियाँ सुनाईं। जहाँ भी सवाल उठे, हमने चर्चा की। जब भी कोई चुटकुला होता, हँसने के लिए कोई मज़ेदार बात होती, हम साथ में हँसते। कभी-कभी हमने आश्चर्य, प्रतिक्रियाएँ और अपना विस्मय बोध भी साझा किया - "यह कैसे सम्भव हो सकता है?", "यह कैसे हुआ?" या फिर ज़्यादा सटीक ढंग से, "उन्होंने (क़िरदार ने) ऐसा क्यों किया?" और इस पर विचार किया कि क्या जो कुछ किसी ने किया वह सही था या नहीं इत्यादि। दूसरे शब्दों में, कहानी आगे बढ़ने के साथ-साथ, बच्चे अपने विचारों और भावनाओं पर बातचीत को आगे बढ़ाते हैं।

कक्षा में कहानी सुनाना

वह एक विशाल कमरा था जिसमें पहली कक्षा के 25 विद्यार्थी बैठे थे। उस बड़े कमरे में चार चौड़ी-चौड़ी खिड़कियाँ थीं, जिनकी पारों पर बच्चे बैठ सकते थे। स्कूल का नया सत्र 15 दिन पहले शुरू हो चुका था लेकिन, मेरे लिए स्कूल का वह पहला दिन था। इन छोटे बच्चों के साथ काम शुरू करने से पहले, मैंने स्कूल का दौरा किया था, शिक्षकों को पाठ्यपुस्तकों से पढ़ाते हुए देखा था और सोच रही थी कि बच्चों को क्या और कैसे पढ़ाना शुरू किया जाए। फिर, मुझे ख़्याल आया कि बच्चों से जुड़ने के लिए कहानी सुनाना एक अच्छा विचार हो सकता है। सो कुछ और करने से पहले मैंने कुछ दिनों के लिए कहानी सुनाने का फ़ैसला किया।

मैंने पहली कक्षा के उन बच्चों से कहा कि हर दिन, स्कूल के पहले पीरियड में हम एक कहानी साझा करेंगे। मैंने उन्हें कई प्रतियों में कहानियों की दो-तीन अलग-अलग किताबें दिखाईं जो मैं अपने साथ लाई थी। मैंने बच्चों से कहा कि वे आकर मेरे क़रीब बैठें। कुछ बच्चे तो मेरे पास आकर बैठे, जबकि बाक़ी बच्चों ने दूर बैठना ही पसन्द किया। कुछ बच्चे, जो खिड़की की पार पर बैठे थे, वहीं रहे। एक छोटी लड़की खिड़की पर बैठी थी और वह कहानी सुनाने के पूरे समय खिड़की से बाहर देखती रही। कुछ बच्चे अपनी पेंसिलों से खेल रहे थे; शुक्र है कि कुछ बच्चे मेरी ओर देख रहे थे। इसके बाद, मैंने एक चुनी हुई कहानी *'क्या तुम मेरी अम्माँ हो?'* पढ़कर उन्हें सुनाई। यह कहानी पूरी होने पर पीरियड ख़त्म होने तक मैंने एक और कहानी उन्हें सुनाई।

अगले दिन बच्चों ने स्वयं कहा कि वे पिछले दिन की कहानी फिर से सुनना चाहते हैं। कक्षा में बैठने की व्यवस्था पिछले दिन की तरह ही थी। मैंने वही कहानी सुनानी शुरू की *'क्या तुम मेरी अम्माँ हो?'* लेकिन इस बार मैंने कहानी पढ़ी नहीं बल्कि याददाश्त से दोहरा दी। इस कारण कहानी में एक नन्हे पक्षी का जानवरों से मिलने का क्रम बदल गया। खिड़की पर बैठी लड़की ने तुरन्त कहा, "नहीं, चिड़िया का बच्चा पहले कुत्ते से नहीं मिला।" एक दूसरे बच्चे ने कहा, "वह पहले बिल्ली, फिर मुर्गी और फिर कुत्ते से मिला।" किसी दूसरे बच्चे ने कहा कि बिल्ली और कुत्ता अच्छे थे क्योंकि उन्होंने उस नन्हे पक्षी को खाया नहीं। इसी तरह की काफ़ी प्रतिक्रियाएँ अन्य बच्चों की ओर से भी आईं। सो मुझे एहसास हुआ कि मेरी यह सोच ग़लत थी कि बहुत-से बच्चे ध्यान नहीं दे रहे थे; वे सुन रहे थे। दरअसल, वे इतने ध्यान से सुन रहे थे कि कहानी के क्रम को लेकर उन्हें पूरा यक़ीन था। यह तो स्पष्ट था कि बच्चों ने कहानी को पूरी तरह से समझ लिया था और उन्हें कहानी का प्रत्येक पात्र और उसका हिस्सा याद था।

कोई 10 दिन तक मैंने इन बच्चों को कहानियाँ सुनाईं और कविताएँ पढ़ीं। वे अधिक मुखर और बातूनी हो गए और ज़्यादा-से-ज़्यादा कहानियाँ सुनना चाहते थे। हालाँकि, कहानियों की इस कड़ी को रोकना पड़ा, क्योंकि पाठ्यक्रम जो 'पूरा' करना था।

यह विचार बार-बार मुझे परेशान करता है और मन में आता है कि पाठ्यक्रम पूरा करने का मतलब क्या है? क्या कहानी सुनाना पाठ्यक्रम से अलग है? क्या यह पाठ्यक्रम का हिस्सा नहीं होना चाहिए? यदि आप मुझसे पूछें, तो कहानी सुनाने के उन 8-10 दिनों के दौरान बच्चों और मैंने जो हासिल किया वह अभूतपूर्व था। बच्चे कक्षाओं के बाहर भी कविताओं की पंक्तियाँ गुनगुनाते थे और कहानियों के बारे में बात करते थे। इन वार्तालापों में, उनके सवाल, उन सवालों को लेकर उनकी समझ, उनका विश्लेषण और एक कहानी तथा दूसरी कहानी के बीच सम्बन्ध के बारे में उनकी समझ स्पष्ट दिखाई देती थी। उन्होंने सभी प्रकार के प्रश्न पूछे - "क्या एक नन्हा पक्षी अण्डे से निकलने के तुरन्त बाद चलना शुरू कर सकता है?" "एक अण्डे का आकार क्या होता है?" "हमारी क्लास के कुछ बच्चे अण्डा खाते हैं, लेकिन बाक़ी नहीं। क्या अण्डे खाना अच्छा होता है?" "किसके घर में गाय है?" "बछड़ा कैसे चलता है?" और ऐसे कई और सवाल। मैं इस बात को भी रेखांकित करना चाहूँगी कि जहाँ कुछ बच्चों ने पहली कहानी के साथ ही या उसके तुरन्त बाद प्रश्न पूछे, वहीं कुछ बच्चे ऐसे भी थे जिन्होंने इन्हें सुनने के 5-6 दिन बाद ही कुछ कहा।

आज भी जब मैं कहानी कहने के बारे में सोचती हूँ तो पाती हूँ कि यह पढ़ने-लिखने से कहीं अधिक उपयोगी और प्रभावी है। इसका एक व्यक्ति के रूप में बच्चे के विकास से सीधा सम्बन्ध है। शायद बच्चों को पाठ्यपुस्तकें पढ़ना सिखाने की जल्दबाज़ी में, हम सीखने की उनकी उस सहज प्रक्रिया में बाधा डालते हैं, जो कहानियों को सुनने और उनसे जुड़ने के माध्यम से आती है।

किसी बच्चे को कहानियाँ सुनाना

पढ़ने-लिखने के प्रति बच्चों की रुचि विकसित करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण क़दम यह है कि वे उन पाठों को चुन सकें जिन्हें पढ़ने में उन्हें आनन्द आए। इसलिए, छोटे बच्चों को अपनी पसन्द की सामग्री खोजने के लिए अपने आप किताबें तलाशने का मौक़ा देना, उनमें पढ़ने के प्रति रुचि पैदा करने का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है।

कहानियों को लेकर बच्चों की अपनी पसन्द-नापसन्द होती है। जिस बच्चे को मैंने कहानियाँ सुनाईं वह चार साल का था और हर दिन एक नई और लम्बी कहानी सुनना चाहता था। एक बार तो, उसने वह कहानी सुनने से इंकार ही कर दिया जो मैं उसे पहले सुना चुकी थी। कहानी में, एक भालू का बच्चा मर जाता है (हालाँकि उसे वापस जीवित कर दिया जाता है); बच्चे को यह याद था। मैंने पहली पंक्ति शुरू ही की थी कि उसने तेज़ी से कहा, "नहीं, यह नहीं, मैं यह नहीं सुनना चाहता; मैंने यह सुनी है; भालू का बच्चा मर जाता है।" इस प्रतिक्रिया से मुझे समझ आया कि भालू के बच्चे का मरना उसके दिमाग़ में बैठा रहा और शायद इस बात से वह लगातार परेशान भी रहा आया था।

कहानियाँ बच्चों को उनके आस-पास होने वाली घटनाओं से जुड़ने में मदद करती हैं। जब यह बच्चा लगभग 5 वर्ष का था, तब मैंने डायनासोर के बारे में कहानियों की एक शृंखला पढ़ी थी। उन कहानियों में डायनासोर सम्बन्धी कई तथ्य शामिल थे - उनका आकार, भोजन सम्बन्धी उनकी आदतें आदि। कहानियों में डायनासोर के जीवाश्मों के बारे में भी बात की गई थी और यह भी कि जीवाश्मों की खोज कैसे की जाती है। कुछ दिनों बाद, जीवाश्मों की तलाश के लिए पास के एक बग़ीचे को खोदा गया। नतीजतन, यह चर्चा शुरू हो चली कि जीवाश्म किस चीज़ से बने होते हैं, वे कैसे बनते हैं, इसमें कितना समय लगता है और यह भी कि उन्हें खोजने के लिए कितने प्रयास और धैर्य की आवश्यकता होती है।

अपने एक पर्चे में, वाइगोत्स्की ने कहा है कि कल्पना यूँ ही शून्य में विकसित नहीं होती, कल्पना पूर्व अनुभवों पर आधारित होती है। यह व्यक्तिगत अनुभव या सुनी हुई बात हो सकती है। कहानियाँ दूसरे प्रकार का अनुभव प्रदान करने का उत्कृष्ट तरीक़ा हैं। इनसे कल्पनाशक्ति का विकास होता है और कल्पनाशक्ति कई अलग-अलग दिशाओं में विकसित हो सकती है। कहानी के अलावा, एक पाठक, लेखक के बारे में सोच सकता है; लेखक कौन होते हैं? वे किस प्रकार के लोग होते हैं? वे कहाँ रहते हैं? वे कौन-सी भाषा बोलते हैं? वे कैसे लिखते हैं? उन्होंने कब लिखना शुरू किया? तब उनकी उम्र कितनी रही होगी?

रोआल्ड डाह्ल की *गोइंग सोलो,* जो मैंने इस आठ वर्षीय बच्चे को पढ़कर सुनाई, से उसने अफ़्रीका के बारे में बहुत कुछ सीखा। एक कहानी में लेखक एक लड़ाकू विमान में दुर्घटनाग्रस्त होता है। उसका पूरा शरीर घायल है और उसके समूचे चेहरे पर पट्टियाँ बँधी हुई हैं। वह देख नहीं सकता; केवल सुन सकता है। चूँकि वह नर्स के सवालों के जवाब नहीं दे सकता, सो वह उससे कहती है कि यदि वह सकारात्मक उत्तर देना चाहता है तो बस उसका हाथ दबा दे। इस किताब को पढ़ने के तीन-चार महीने बाद बच्चा बीमार हो गया। मैंने उससे आराम करने और चुप रहने को कहा। उसने कहा, "ठीक है, जब आप मुझसे कोई सवाल पूछें तो बस अपना हाथ मुझे दीजिए, अगर मैं हाँ में जवाब देना चाहूँगा तो आपका हाथ दबा दूँगा।" (वह संकेत कर रहा था कि मुझे पूछने की ज़रूरत पड़ सकती है कि क्या उसे प्यास लगी है, या वह भूखा है या कि वह वॉशरूम जाना चाहता है या खड़ा होना चाहता है आदि)।

जैसा कि कहा जा चुका है, ठोस अनुभवों के साथ बातचीत

करने से कल्पना की ये कड़ियाँ आगे बढ़ती हैं, मज़बूत होती हैं। उदाहरण के लिए, *गोइंग सोलो* को ज़ोर से पढ़ने के बाद, इस बच्चे के मन में कई सवाल उभरे - "क्या अफ़्रीका भारत से बड़ा है?" "क्या यह चीन से भी बड़ा है?" सो हमने एक ग्लोब देखा और पाया कि अफ़्रीका चीन से बड़ा है। तो फिर आपको कौन-सी नई कहानियाँ सुननी चाहिए? आपको और क्या सुनना चाहिए? ऐसे सारे सवाल महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं।

निष्कर्ष

जब मैंने कहानियाँ सुनाना शुरू किया था तो मैं यह नहीं जानती थी कि इससे क्या फ़ायदा होगा या इस अभ्यास से बच्चे क्या सीखेंगे। इनमें से कई बातों का एहसास मुझे बहुत बाद में हुआ, कभी-कभी तो कहानी पढ़ने के महीनों बाद।

ज़रूरी नहीं कि हर बच्चा कहानी को वैसे ही समझेगा जैसा हम उसे समझाना चाहते हैं। अनेक विद्वानों एवं शिक्षकों ने इस बात को रेखांकित किया है। अनीता ध्यानी ने अपने लेख में बताया है कि उन्हें स्कूल में पढ़ी एक कहानी के एक वाक्य का सही अर्थ तब पता चला जब वे स्वयं शिक्षिका बनीं। बच्चे कहानियों से अपने लिए संगत अर्थ बना सकते हैं। हम कभी भी पूरी तरह से यह नहीं समझ सकते कि बच्चे किसी कहानी को कैसे देखते हैं; वे उससे क्या समझते हैं और उसे कैसे समझते हैं। लेकिन, यदि बच्चों में कहानियाँ सुनने की आदत विकसित हो जाए तो कहानियाँ अपना प्रभाव तो छोड़ती ही हैं।

Endnotes

ध्यानी, अनीता (2021) कहानी क्यों? कहानियाँ और समझ के विभिन्न आयाम, *पाठशाला – भीतर और बाहर*, अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी।

References

Imagination and Creativity in Childhood. Lev Semenovich Vygotsky. Journal of Russian and East European Psychology, vol. 42, no. 1, January–February 2004, pp. 7–97. https://www.marxists.org/archive/vygotsky/works/1927/imagination.pdf

रजनी द्विवेदी अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय की पत्रिका *पाठशाला - भीतर और बाहर* की सम्पादकीय टीम की सदस्य हैं। उनसे *rajni.dwivedi@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : मनोहर नोतानी **पुनरीक्षण : भरत त्रिपाठी** **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

कहानी सुनाने के माध्यम से गणितीय अवधारणाओं का शिक्षण

रंगनाथ

पिछले दो सालों से, मैं कर्नाटक के यादगीर ज़िले के शैक्षिक क्षेत्रों में से एक, 'येरगोल', में भ्रमण कर रहा हूँ। यहाँ, मैंने स्कूलों में कहानियाँ कहने की गतिविधियों के माध्यम से गणित सीखने की अप्रयुक्त सम्भावना को देखा। शुरुआत में, ऐसी कहानियों को ढूँढ़ने की प्रक्रिया कठिनाइयों से भरी रही, जो गणित सीखने में मदद करते हुए कक्षा-4 और 5 के विद्यार्थियों के शिक्षा के प्रतिफलों से भी इस सीख का मेल कराती हों। हालाँकि, मुझे रूपा पई द्वारा लिखी एक कहानी मिली जिसका शीर्षक है *'मुत्तज्जिया वयास्शेष्टु?'* (मुत्तज्जी की उम्र क्या है?)।[i] यह कहानी, अपने जिज्ञासु पात्रों और जटिल उप-कथानकों के साथ, ऐसी स्थितियों को प्रस्तुत करती है जिनमें विद्यार्थियों को सवालों की परतें खोलने और समाधान ढूँढ़ने की ज़रूरत होती है।

यह कहानी दो बच्चों के रोमांचकारी अनुभव के बारे में है जो अपनी मुत्तज्जी (परनानी) की सटीक उम्र खोजने का प्रयास करते हैं। कहानी सुनाने की गतिविधि ने हमारे सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों को संकेतों को खोलने के और उन्हें जोड़, घटाने की संक्रियाओं और तार्किक चिन्तन का उपयोग करके जवाबों तक पहुँचने के अवसर प्रदान किए।

हालाँकि विद्यार्थियों को कहानी और उसके सवाल दिलचस्प लगे, पर उन्होंने पहले मुझसे सीधे सवाल पूछे, जैसे कि जवाब तक पहुँचने के लिए कौन-सी संक्रिया का उपयोग करना है। संवाद, यानी सही सवाल पूछने और वैकल्पिक संकेत प्रदान करने, के ज़रिए विद्यार्थियों ने अपनी विचार प्रक्रियाओं को अपनी नोटबुक में प्रतीक रूप में दर्ज करने का प्रयास किया, जो कि संक्रियाएँ करने के पारम्परिक तरीक़े से अलग था। इस लेख में, विद्यार्थियों के साथ मेरी बातचीत और अमूर्त विचारों के दर्ज करने की उनकी प्रक्रिया पर ध्यान केन्द्रित करते हुए, मैंने गणित को सीखने में कहानी सुनाने की सम्भावना को खोलने का प्रयास किया है।

मैंने कक्षा-5 में, कक्षा अध्यापक की उपस्थिति में, कहानी की इस किताब के मौलिक परिचय के साथ कहानी की शुरुआत की। मुत्तज्जी की उम्र के बारे में प्रारम्भिक बातचीत के दौरान, कुछ विद्यार्थियों ने कहा कि उनकी उम्र 200 साल होगी, जैसा कि कहानी के एक पात्र पुट्टा ने कहा था। मुझे लगा कि अगर विद्यार्थी ऐसे बिना तर्क लगाए जल्दबाज़ी में जवाब देते हैं, तो चार अंकों वाली संख्याओं का जोड़-घटाव सीखने का उद्देश्य पूरा नहीं होगा। इस चुनौती को ध्यान में रखते हुए, मैंने बच्चों से वह सब कुछ लिखने को कहा जो उनके हिसाब से कहानी में आने वाले प्रश्न और परिस्थितियों को सुलझाने के लिए महत्त्वपूर्ण हो। इन प्रतिक्रियाओं ने बाद में मुझे महसूस कराया कि बच्चे अपने विचारों को लिखते समय उन्हें कैसे तैयार करते हैं।

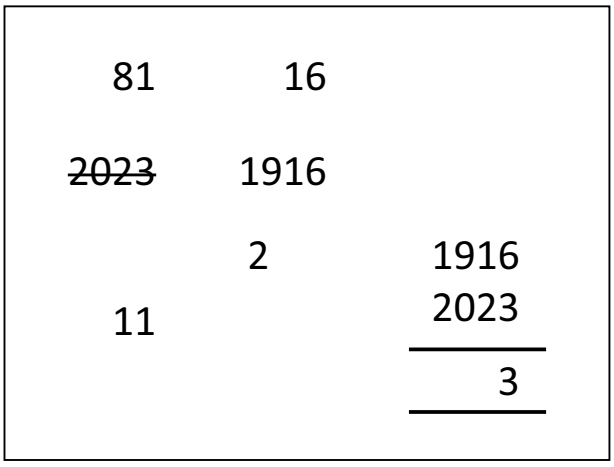

चित्र-1

कार्यविधि

विद्यार्थियों को संकेत दिया गया कि 1916 वह साल था जब कन्नामबाडी बाँध[ii] बना था और यह किसी तरह से उस साल से जुड़ा था, जब मुत्तज्जी पैदा हुई थीं। कुछ विद्यार्थियों ने मुझसे पूछा कि उन्हें गणना के लिए कौन-सी संक्रिया का अनुसरण करना चाहिए। एक विद्यार्थी ने जवाब हासिल करने के लिए यह प्रयास किया (**चित्र-1**)।

इसे देखकर, मुझे महसूस हुआ कि शायद हमें सुगमकर्ताओं के रूप में, उस समस्या का अवलोकन करना चाहिए, जिसका सामना विद्यार्थी तब करते हैं, जब उन्हें तर्क का इस्तेमाल करके जवाब हासिल करने होते हैं। इसे आसान बनाने के लिए, मैंने यह सवाल पूछा : "अगर 2023 में आपकी उम्र 12 साल है, तो आपको यह जानने के लिए क्या करना चाहिए कि 2014 में आपकी उम्र कितनी थी?" बच्चों ने विभिन्न जवाब दिए, जैसे कि दोनों सालों को जोड़ दें, 2023 को 2014 से घटाएँ आदि। आगे बढ़ने से पहले, मैंने उनसे उनकी वर्तमान उम्र और जन्म

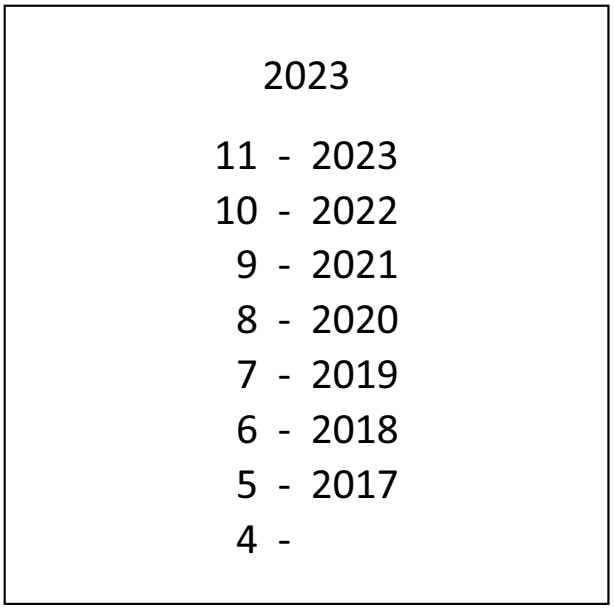

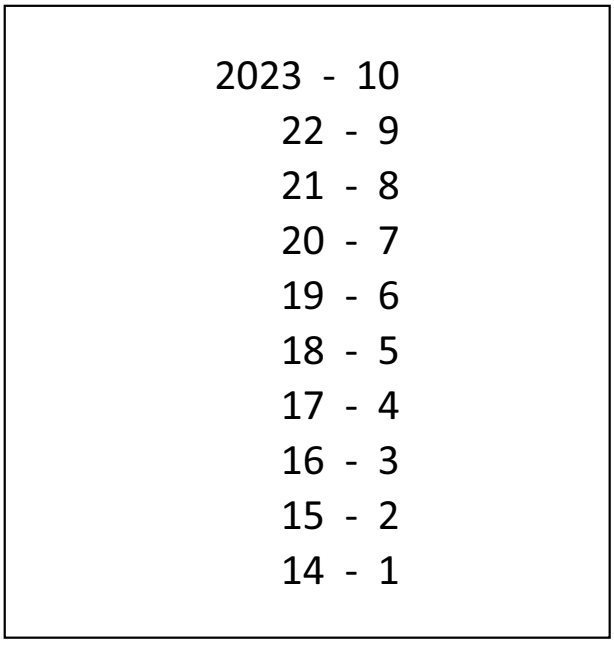

2023			
11	-	2023	
10	-	2022	
9	-	2021	
8	-	2020	
7	-	2019	
6	-	2018	
5	-	2017	
4	-		

चित्र-2

2023	-	10
22	-	9
21	-	8
20	-	7
19	-	6
18	-	5
17	-	4
16	-	3
15	-	2
14	-	1

चित्र-3

के साल के बारे में पूछा। मुझे कई जवाब मिले और मैंने उनके जन्म के साल के बाद ऐसे ही किसी एक साल को चुना और उनसे पूछा कि उस साल में उनकी उम्र क्या होगी। इसके लिए, विद्यार्थियों ने जो जवाब दिए (**चित्र-2, 3 और 4**), उन्होंने मुझे आनन्दित कर दिया क्योंकि मुझे उनसे ऐसे ही रचनात्मक काम की उम्मीद थी।

प्रक्रिया की समझ

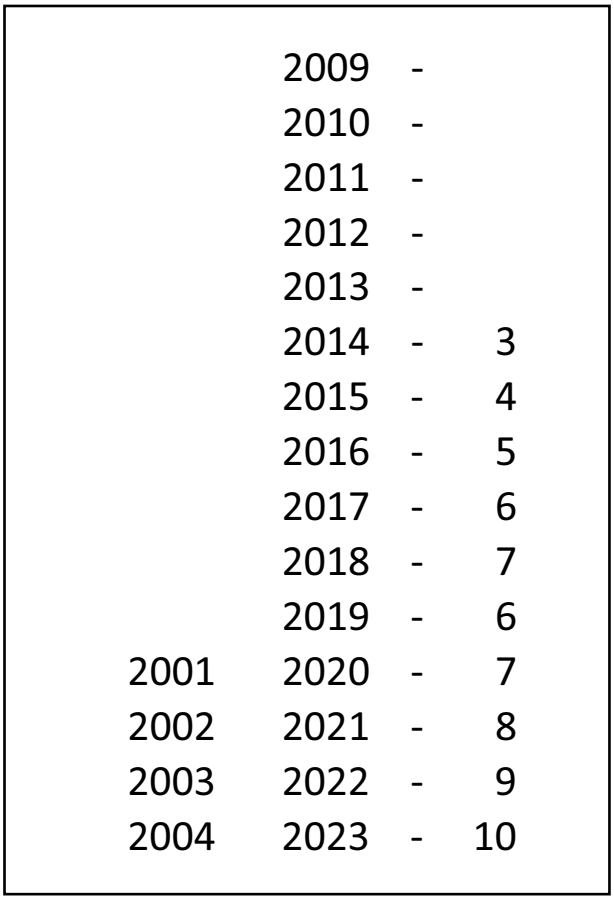

इस विचार प्रक्रिया के साथ लिखने के माध्यम से, विद्यार्थियों को समझ में आया कि उन्हें किसी विशेष साल में अपनी उम्र जानने के लिए अपनी वर्तमान उम्र से जन्म साल की ओर जाना

	2009	-	
	2010	-	
	2011	-	
	2012	-	
	2013	-	
	2014	-	3
	2015	-	4
	2016	-	5
	2017	-	6
	2018	-	7
	2019	-	6
2001	2020	-	7
2002	2021	-	8
2003	2022	-	9
2004	2023	-	10

चित्र-4

चाहिए। हालाँकि यह बहुत ही व्यावहारिक बुद्धि वाली बात लगती है, पर इस प्रकार के तार्किक चिन्तन के कौशलों से विद्यार्थियों से परिचय नहीं कराना, हमें सामान्य रूप से शिक्षा की गुणवत्ता और विशेष रूप से गणितीय संवादों की गुणवत्ता पर सोच-विचार करने को मजबूर करता है।

मैं कहानी को सुनाता रहा। विद्यार्थियों को कहानी से एक और संकेत मिला जहाँ उन्हें पता चला कि 2023 में नानी की उम्र 81 साल होगी। अब, उनके जन्म का साल क्या होगा? आश्चर्यजनक तौर पर, कई बच्चों ने सही संक्रिया का पालन किया और अपने तरीक़े से अपने जवाब लिखे। एक कहानी सुनाने वाले के रूप में, मैं मंत्रमुग्ध हुआ, उनके संक्रिया करने से नहीं, बल्कि जिस तरह से बच्चों ने अपने जवाबों को अपनी नोटबुक में लिखने की कोशिश की। यह संख्याओं को दर्ज करने और उनके नीचे जवाब लिखने के पारम्परिक तरीक़े जैसा नहीं था।

जैसा कि हम **चित्र-5** में देखते हैं, एक विद्यार्थी ने 81 को 2023 से घटाने की कोशिश की। चूँकि लक्ष्य था कि मुत्तज्जी की उम्र का पता लगाना, कुछ विद्यार्थियों ने नानी की उम्र को अलग से नहीं लिखा, बल्कि इसे माँ, नानी और परनानी के लिए खड़े स्तम्भ में लिखा।

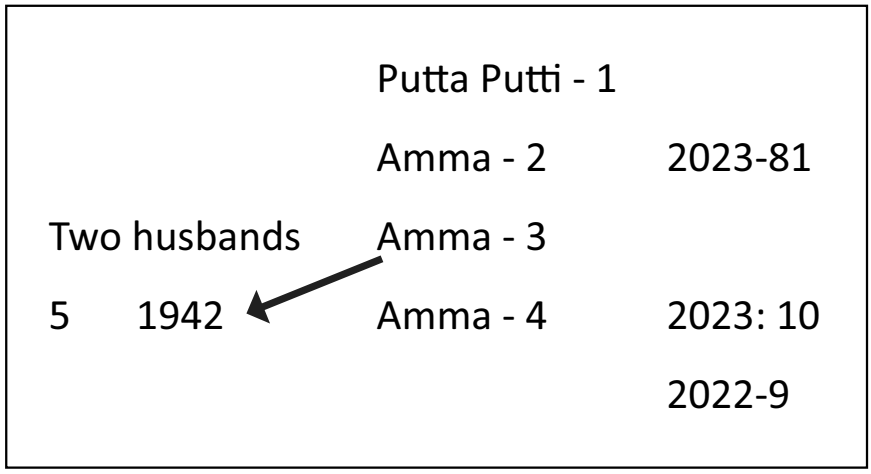

चित्र-5

जवाब पाने के हर एक चरण में, विद्यार्थी यह जानने को उत्सुक हो रहे थे कि आगे क्या आएगा और वे उसे कैसे सुलझाएँगे। जैसे मैं कहानी के साथ आगे बढ़ा, बच्चों को एक और संकेत मिला - परनानी ने अपनी पाँच सन्तानों को एक-एक करके अपनी शादी के बाद हर दो साल में जन्म दिया। तब, विद्यार्थियों ने 1942 के साल से बार-बार संख्या 2 को घटाना शुरू किया।

चर्चा में, विद्यार्थियों ने ख़ुद व्यक्त किया कि, चूँकि परनानी की पाँच सन्तानें थीं और पाँचवीं सन्तान का जन्म 1942 में हुआ था तो हम नानी के भाई-बहनों के जन्म के साल को 1942 से 2 को 4 बार घटाकर हासिल कर लेंगे, क्योंकि मुत्तज्जी की सभी सन्तानों के बीच 2 साल का अन्तर है।

घटाने के संकेत प्रयोग किए बिना, विद्यार्थियों ने अपने विचारों को नोटबुक में दर्ज किया, जैसा कि **चित्र-6** में देखा जा सकता है। यह हमें बताता है कि जब हम गणना की विधियों को पुख़्ता करते हैं, तो हम गणना के चरणों को छोड़कर, अपने सहज ज्ञान से जवाब हासिल कर लेते हैं। उदाहरण के लिए, **चित्र-6** इंगित करता है कि परनानी की पाँचवीं सन्तान 1942 में पैदा हुई थी और विद्यार्थियों ने 1942 में से 2 को घटाने का क्रम तीसरी सन्तान तक जारी रखा। विद्यार्थियों ने दूसरी सन्तान की गणना छोड़ दी और पहली सन्तान पर पहुँच गए, जो उन्हें मुत्तज्जी की उम्र पता करने के लिए महत्त्वपूर्ण लगी। फिर, उन्होंने पाया कि पहली सन्तान की जन्म का साल 1934 है (1942 में 8 घटाएँ, अगर पाँच सन्तानें हैं जिनकी उम्र में 2-2 साल का अन्तर है)।

अब, मैंने विद्यार्थियों से पूछा कि उन्हें मुत्तज्जी की उम्र की तरफ़ बढ़ने के लिए क्या करना चाहिए। कुछ विद्यार्थियों ने कहा कि उन्हें 1942 से 8 को घटाना चाहिए। एक विद्यार्थी ने कहा कि उन्हें 81 (उम्र) में 8 को जोड़ना चाहिए जिसका मतलब है कि मुत्तज्जी की उम्र 89 साल से अधिक है। विद्यार्थियों ने अब मुत्तज्जी की उम्र का अनुमान लगाना शुरू किया। उन्हें कहानी के दौरान दिए गए एक और संकेत की याद आई, जिसके हिसाब से मुत्तज्जी की शादी बचपन में नहीं हुई थी। इसलिए, विद्यार्थियों ने 16 को जोड़ा, जो उनकी शादी की उम्र थी (उस समय विवाह की न्यूनतम उम्र 15 साल थी)। उन्होंने 89 में 16 साल जोड़कर कहा कि मुत्तज्जी की उम्र 105 साल हो सकती है।

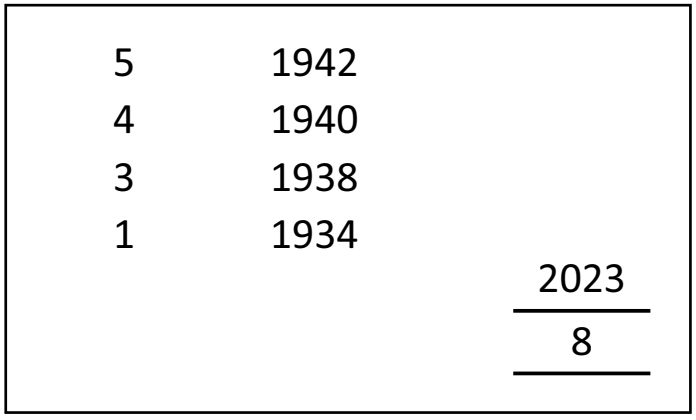

चित्र-6

एक विद्यार्थी ने तार्किक रूप से सोचा कि मुत्तज्जी ने 1934 में, अपने पहले बच्चे को जन्म देने से पहले एक से दो साल तक का इन्तज़ार किया होगा। बाद में, दिए गए सभी संकेतों को संग्रहित करते हुए, उन सभी ने 105 में 2 साल जोड़कर कहा कि मुत्तज्जी की उम्र 107 साल हो सकती है। हम सबने मान लिया कि मुत्तज्जी की उम्र 107 साल होगी। आख़िरकार, उन्होंने 107 को 2023 में से घटाया और मुत्तज्जी के जन्म का साल प्राप्त किया।

जैसा कि हमने यहाँ देखा, वास्तविक जीवन के सन्दर्भों का इस्तेमाल करके, चर्चाओं और तार्किक चिन्तन के माध्यम से विद्यार्थियों को किसी कहानी में शामिल करने से, उनकी उत्सुकता बढ़ती है और वे गणित के सवालों को हल करने के लिए प्रेरित होते हैं।

नोट : चित्रों में दर्शाए बच्चों के काम को प्रकाशित करने के लिए व्यवस्थित तरीक़े से दुबारा लिखा गया है।

Endnotes

i This story is set in 2016 when it was first published. The age of *Mutttaji* has been changed to use the story in a class in 2023.

ii Also known as Krishna Raja Sagara Dam.

References

How Old is Muttajji? Written by Roopa Pai; Illustrated by Kaveri Gopalakrishnan. Pratham Books. https://storyweaver.org.in/stories/5699-how-old-is-*Muttajji*?mode=read

रंगनाथ कर्नाटक के यादगीर ज़िले में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन के ज़िला संस्थान में रिसोर्स पर्सन हैं। उन्हें मज़ेदार तरीक़ों से गणित पढ़ाना अच्छा लगता है जैसे कहानियों, समस्या-समाधान विधियों और पहेलियों का उपयोग करते हुए। वे समकालीन कथेतर साहित्य पढ़ना पसन्द करते हैं। उनसे *ranganath@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : राम कुमार सरोज **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

जब हम बच्चों के साथ पढ़ने या उनके साथ चर्चा करने के लिए किसी किताब का चयन करते हैं, तो हमें ख़ुद से पूछना चाहिए, "इस किताब में ऐसा क्या ख़ास है जो बच्चों से जुड़ेगा और उन्हें एक अलग दृष्टिकोण या कुछ नए विचार और सोचने के अवसर भी देगा?" यह इस धारणा के समान है कि साहित्य पढ़ने से हम 'नए' बन जाते हैं; कि हम वे लोग नहीं रह जाते जो हम थे। यह एक अच्छी किताब का आनन्द है। यह भी सम्भव है कि कोई किताब उनकी दीर्घकालिक स्मृतियों में विशेष स्थान बना ले; जिसे भुलाया नहीं जा सकता।

- कमलेश चन्द्र जोशी, लाइटनिंग (बड़ी किताब) : कक्षा में कहानी, पेज 35

बालटी के अन्दर समन्दर | कक्षा में कहानी

श्वेता विश्वकर्मा

हम प्राथमिक कक्षा में भाषायी कौशलों के विकास में बाल साहित्य के महत्त्व से अवगत हैं। कविताएँ, कहानियाँ, चित्र, सन्दर्भ, विभिन्न प्रकार के पात्र आदि सभी विद्यार्थियों के सीखने के स्तर के आधार पर अच्छे बाल साहित्य में शामिल किए जाते हैं। आज के बाल साहित्य में विविध सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय सन्दर्भ होते हैं। अतः इसका उपयोग सिर्फ़ विशेष उद्देश्यों तक ही सीमित नहीं है; बल्कि यह हमें इसे विभिन्न तरीक़ों से इस्तेमाल करने के अवसर देता है। एक तरह से यह दुनिया को समझने का एक माध्यम है।

प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ाते समय रचनात्मक शिक्षक, कहानियों, क़िस्सों, कविताओं और स्थितियों का उपयोग जिज्ञासा पैदा करने, नई चीज़ों को खोजने और प्रेरित करने के लिए करते हैं और विद्यार्थियों को अपनी जिज्ञासाओं को पूरा रखने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। हालाँकि बाल साहित्य को केवल भाषायी क्षमताओं के विकास के लिए देखने से इसका महत्त्व कम हो जाता है। यदि कक्षा शिक्षण प्रक्रिया में किसी भी बाल साहित्य या पुस्तक को शामिल किया जाता है, तो इससे न केवल भाषायी कौशल, बल्कि अन्य विषयों में निहित कौशलों के विकास के अवसर भी पैदा होते हैं। हम किसी भी कहानी या कविता में दी गई स्थितियों, घटनाओं और पात्रों का उपयोग करके अपनी कक्षा में पर्यावरण अध्ययन (ईवीएस) में निहित उद्देश्यों और कौशलों के विकास के अवसर पैदा कर सकते हैं।

एक उदाहरण

मैं अवेहि-अबकस प्रोजेक्ट[1] के तहत एकलव्य द्वारा प्रकाशित एक पुस्तक के उदाहरण के साथ अपनी बात को स्पष्ट करना चाहूँगी। पुस्तक *बालटी के अन्दर समन्दर* (The Sea in a Bucket)[2], बेहद दिलचस्प तरीक़े से जल सम्बन्धी कई परिदृश्यों की खोजबीन करती है। यह न केवल पानी के उपयोग, बल्कि पानी की पूरी यात्रा को भी को दर्शाती है।

आइए हम यह समझने की कोशिश करते हैं कि यह पुस्तक ईवीएस के शिक्षण में इतनी महत्त्वपूर्ण संसाधन क्यों है।

पानी की कहानी सोनू की बालटी के साथ शुरू होती है। यह पता लगाना है कि सोनू की बालटी में पानी कहाँ से आता है- समुद्र से शुरू होकर सूरज, बादलों, पहाड़, नदी, झील, पाइप के साथ चलकर नल के साथ समाप्त होता है। फिर यह वर्णन सोनू की बालटी से ज़मीन में रिसने वाले पानी के चक्र के साथ जारी रहता है और अन्त में, समुद्र में फिर से मिल जाता है। इस तरह के विषय पर काव्यात्मक और कल्पनाशील तरीक़े से विचार करना कठिन है। अक्सर, जिस तरह से हमारी कक्षाओं में ऐसे विषयों को प्रस्तुत किया जाता है, वह यांत्रिक होता है, जहाँ विषयवस्तु परिभाषा, महत्त्व, प्रक्रिया जैसे विशिष्ट बिन्दुओं तक सीमित होती है। मगर इस पुस्तक की शैली इसे अलग और विशेष बनाती है। जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, अन्य पात्रों का परिचय दिया जाता है। पन्नों और पंक्तियों के अच्छी तरह से जुड़े होने से कहानी बख़ूबी बहती है। हम इसे एक उदाहरण से बेहतर समझ सकते हैं :

यह है नदी

जो मिल जाती है झील में

जिसका ठहरा शान्त पानी

पाइप में चलकर

नल में से टपककर

भरता है सोनू की बालटी को।

***

ये हैं पहाड़

जहाँ से बहती है नदी

जो मिल जाती है झील में

जिसका ठहरा शान्त पानी

पाइप में चलकर

नल में से टपककर

भरता है सोनू की बालटी को।

यह क्रम न केवल शब्दों में बल्कि चित्रों में भी परिलक्षित होता है। पुस्तक में चित्र विविधतापूर्ण और आकर्षक हैं — चाहे वह सोनू का घर हो या अलग-अलग स्थानों पर बहने वाले पानी का प्रवाह। आस-पास के वातावरण, परिदृश्य और गतिविधियों को चित्रों में बारीकी से प्रदर्शित किया गया है।

चित्रों का क्रम कई स्थितियों में जीवन को भी दर्शाता है। यह जीवनचक्र मनुष्यों तक ही सीमित नहीं है; इसमें जानवरों, पेड़-पौधों, श्रमिकों, आवासों की संरचना और अन्य व्यवस्थाओं को भी देखा जा सकता है। पुस्तक में कहानी के साथ-साथ दृश्य भी आगे बढ़ते हुए दिखाई देते हैं।

ईवीएस के लिए पुस्तक का उपयोग करना

जैसा कि पहले कहा गया है, हम इस पुस्तक की मदद से कौशल विकास और पर्यावरण अध्ययन पढ़ाने के उद्देश्यों को प्राप्त करने के अवसर पैदा कर सकते हैं। आइए इसे इस तरह से देखें — ईवीएस पाठ्यक्रम में 'जल' को एक विषय के रूप में शामिल किया गया है। कक्षा-3 से 5 तक की एनसीईआरटी या किसी भी अन्य राज्य की पाठ्यपुस्तक में जल के बारे में कई अध्याय देखे जा सकते हैं। यह परिकल्पना की गई है कि इन अध्यायों में शामिल गतिविधियाँ और अभ्यास विद्यार्थियों को जल के स्रोतों, उपयोगों, महत्त्व, स्वच्छता, संरक्षण और मूल्य से परिचित कराएँगे, साथ ही बच्चों को अपने आस-पास की इन समस्याओं के प्रति संवेदनशील बनाएँगे। हम अपनी कक्षाओं में बच्चों की पुस्तकों का उपयोग करके इस प्रक्रिया में सहयोग दे सकते हैं।

हम इस पुस्तक की मदद से इसे कुछ चरणों में समझने की कोशिश करेंगे।

चर्चा

शिक्षक पुस्तक के शीर्षक के बारे में पूछकर शुरुआत कर सकते हैं, बालटी के अन्दर समन्दर - क्या यह सम्भव है कि एक समुद्र एक बालटी में फिट हो जाए? कई विद्यार्थी समुद्र से अपरिचित हो सकते हैं। कक्षा में इस कहानी पर बातचीत के माध्यम से विद्यार्थी समुद्र की अवधारणा को समझेंगे। इसी तरह, आपसी संवादों का उपयोग उन्हें पुस्तक में प्रस्तुत नए शब्दों को समझने में मदद करने के लिए किया जा सकता है। पुस्तक में दिए गए चित्रों के बारे में बात करना विद्यार्थियों के लिए अध्याय के साथ सम्बन्ध बनाने में उपयोगी होगा। शिक्षक वार्तालाप को विद्यार्थियों के सन्दर्भों के लिए प्रासंगिक बनाने की कोशिश कर सकते हैं और उदाहरण प्रदान करने के साथ-साथ उन्हें नए सन्दर्भों की कल्पना करने और समझने का अवसर दे सकते हैं।

अवलोकन और जुड़ाव

यह पुस्तक न केवल जल की यात्रा की व्याख्या करती है, बल्कि यह अन्य अवधारणाओं से भी जुड़ती है। इस पुस्तक में जानवरों, पौधों, पेड़ों, जीवन जीने के तरीक़ों, गतिविधियों, कपड़ों आदि के चित्रों की एक विस्तृत शृंखला है। विद्यार्थियों को पुस्तक में दिए चित्रों का अवलोकन करते हुए विभिन्न वस्तुओं को छाँटने और उनकी सूची बनाने की गतिविधि सौंपी जा सकती है। इसके अलावा, विद्यार्थियों के साथ अन्य परिवेशों में अन्तर और समानताओं पर भी चर्चा की जा सकती है।

घटनाओं को उनके आस-पास के वातावरण से सम्बन्धित करना

ईवीएस पढ़ाने के मुख्य उद्देश्यों में से एक विद्यार्थियों को उनके परिवेश के माध्यम से विषयवस्तु को समझकर दुनिया को समझने में मदद करना है। वे नए ज्ञान की ओर बढ़ने के लिए, जो पहले से जानते हैं, उसका उपयोग कर सकते हैं। ऐसे मामले में, बच्चों को पढ़ाते समय, नई जानकारी के निर्माण में सहायता करने वाली प्रक्रियाओं को बढ़ावा देना महत्त्वपूर्ण है। इस कहानी के लिए, नज़दीक के जल स्रोतों को समझना, उनमें हो रहे परिवर्तनों का अवलोकन करना व समझना और साथ ही अन्य नए स्रोतों के बारे में जानना शामिल हो सकता है जो उनके क्षेत्र में मौजूद नहीं हैं, उदाहरण के लिए, पानी की टंकियों और झीलों द्वारा नदियों और समुद्रों को समझना।

प्रोजेक्ट कार्य

प्रोजेक्ट कार्य विद्यार्थियों को समूहों में या व्यक्तिगत रूप से सौपें जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, आस-पास के जल स्रोतों की खोज, पानी के घरेलू और अन्य उपयोगों के बारे में जानकारी एकत्र करना और यह निर्धारित करना कि उनके गाँव, इलाक़े या शहर में पानी कहाँ से आता है, ये कुछ ऐसे विषय हैं जिनका पता लगाया जा सकता है। सम्बन्धित जानकारी एकत्र करने के लिए, शिक्षक विद्यार्थियों के साथ प्रश्नावली निर्माण, दूसरों के साथ बातचीत और अवलोकन जैसे कौशलों पर काम कर सकते हैं। अन्त में, विद्यार्थियों की समझ का दस्तावेज़ीकरण किया जा सकता है और कक्षा में उन्हें प्रस्तुत किया जा सकता है। इस प्रकार के अभ्यास कार्य विद्यार्थियों को सम्बन्धित विषय को अपने अनुभवों से जोड़कर उसे समझने में मदद करते हैं।

अन्य संसाधन

यह एक पुस्तक का उदाहरण है। अन्य पुस्तकें पर्यावरण और हमारे आस-पास की दुनिया से सम्बन्धित समान घटनाओं और विषयों का अधिक व्यापक तरीक़े से पता लगाती हैं। उदाहरण के लिए, *बीज बोया* (एकलव्य प्रकाशन), उस क्रम का वर्णन करती है जिसमें एक बीज से एक पौधा और फल निकलते हैं। इसके विपरीत, *मोर डूँगरी* (जुगनू प्रकाशन) गाँवों से शहरों की ओर पलायन के साथ-साथ मनुष्यों और जानवरों के बीच के सम्बन्ध को बेहद संवेदनशीलता के साथ दर्शाती है। यह बहुत आवश्यक है कि पाठ्यपुस्तक के अलावा, ऐसे संसाधनों को कक्षा में शामिल किया जाए।

Endnotes

i AVEHI ABACUS PROJECT (AAP) aims to strengthen the quality and content of education in primary schools. http://www.avehiabacus.org/

ii Balti Ke Andar Samandar. Avehi-abacus. Illustrator: Deepa Balsawar. Eklavya. https://eklavyapitara.in/products/balti-ke-andar-samandar

श्वेता विश्वकर्मा मध्य प्रदेश के खरगोन में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन जिला संस्थान में काम करती हैं। वे शिक्षकों के साथ फील्ड-स्तर के जुड़ाव और भाषा शिक्षण और सीखने से सम्बन्धित सामग्री निर्माण प्रक्रियाओं का हिस्सा रही हैं। इससे पहले वे मुस्कान, भोपाल के साथ थीं। उन्होंने अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय से एमए (शिक्षा) की पढ़ाई की है। वे बाल साहित्य की शौक़ीन हैं और यह जानना और समझना पसन्द करती हैं कि इसे विभिन्न सन्दर्भों में कैसे बनाया जा रहा है। उनसे *shweta.vishwakarma@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : जितेन्द्र 'जीत **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

विज्ञान की कक्षा में लोकप्रिय कहानियाँ

वेंकट नाग विनय सूरम

और इस तरह, कौवे ने अपनी प्यास बुझाई और ख़ुशी-ख़ुशी उड़ गया।

ख़रगोश को अपनी ग़लती का एहसास हुआ और उसने कछुए से हार स्वीकार कर ली।

वह सीधे अपने बाथटब से निकलकर 'यूरेका-यूरेका' चिल्लाता हुआ सड़कों पर दौड़ पड़ा।

ये पंक्तियाँ हममें से अधिकांश लोगों के लिए उन कहानियों की पंक्तियों के रूप में ख़ास हैं जिन्हें हमने अपने बचपन में सुना या पढ़ा है। हममें से अधिकांश लोग एक अच्छी कहानी का आनन्द लेते हैं, लेकिन कहानियों का एक बड़ा शैक्षणिक मूल्य भी होता है, विशेष रूप से विज्ञान की कक्षा में। यदि हम विज्ञान को विभिन्न सम्बद्ध तत्वों के बीच के सम्बन्धों की खोजबीन करते और उन्हें समझाते हुए अपने आस-पास की दुनिया को समझने के प्रयासों के रूप में परिभाषित करते हैं, तो एक कक्षा में विज्ञान शिक्षण को विद्यार्थी के लिए अन्वेषण करने और उसके महत्त्व को समझने, अपने अवलोकनों को दर्ज करने और उनका विश्लेषण करने तथा तमाम सम्बद्ध घटकों के बीच के सम्बन्धों को समझने का मार्ग प्रशस्त करना चाहिए।

विद्यार्थियों को उनकी रुचि बनाए रखते हुए ऐसी प्रक्रिया में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना कभी-कभी एक चुनौतीपूर्ण कार्य हो सकता है। ऐसे समय में एक अच्छी कहानी काम आ सकती है, न केवल चर्चा शुरू करने के लिए, बल्कि विद्यार्थियों को इस प्रक्रिया में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए भी। कहानियों और कहानी कहने का उपयोग मौजूदा समझ को मज़बूत करने और मूल्यांकन के उपकरणों के रूप में भी किया जा सकता है। इसके साथ-साथ, विद्यार्थियों को अपने अवलोकनों या अनुभवों के आस-पास अपने वर्णनों को विकसित करने के लिए कहना, उनकी संचार व संवाद क्षमताओं को समृद्ध करता है। कहानियाँ जिस भाषा का उपयोग करती हैं, वह अक्सर वैज्ञानिक शब्दावली की तुलना में विद्यार्थियों से अधिक जुड़ी होती है। इस बात को स्पष्ट करने के लिए, मैं पढ़ाते समय कहानियों का उपयोग करने के दो अनुभव साझा करना चाहूँगा। इन्हें विभिन्न आयु समूहों- प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के साथ उनके संज्ञानात्मक स्तर के अनुसार अवधारणाओं में थोड़ा बदलाव करते हुए आज़माया गया है।

शिक्षण विधि के रूप में कुछ कहानियाँ

प्यासा कौआ

वस्तुएँ अलग-अलग परिस्थितियों में अलग-अलग गुण प्रदर्शित करती हैं। पानी (या वस्तुतः किसी अन्य तरल पदार्थ) में रखे जाने पर कुछ वस्तुएँ तैरती हैं, कुछ डूब जाती हैं और कुछ तैरने और डूबने के बीच रह जाती हैं। इन वस्तुओं के इस तरह से व्यवहार करने का कारण सापेक्ष घनत्व के सन्दर्भ में समझाया जा सकता है। सापेक्ष घनत्व को समझने के लिए आयतन (volume), द्रव्यमान (mass) और घनत्व (density) की अवधारणाओं से परिचित होने की आवश्यकता होती है। इस तरह की अवधारणा की एक प्रभावी शिक्षण विधि में विद्यार्थियों को ऐसा व्यावहारिक अनुभव प्रदान करना शामिल होना चाहिए, जिसमें वे पानी में रखे जाने पर विभिन्न वस्तुओं के व्यवहार का निरीक्षण करते हैं और निष्कर्ष निकालते हैं। इस तरह के अन्वेषण की शुरुआत ऐसी होनी चाहिए जो विद्यार्थियों को अधिक-से-अधिक उत्साह के साथ सीखने की प्रक्रिया में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करे ताकि विद्यार्थी खोजबीन प्रक्रिया का अनुभव कर सकें। और यही वह जगह है जहाँ प्यासे कौवे की कहानी खेल में आती है।

हममें से ज़्यादातर लोग इस कहानी को जानते हैं, लेकिन आपको याद कराने के लिए, मैं बताए देता हूँ। कहानी कुछ इस तरह है : एक गर्म, धूप वाले दिन, पानी की तलाश में एक कौवे को एक घड़ा दिखाई देता है, जिसके नीचे तल में थोड़ा पानी होता है। कौवा एक-एक करके उसमें कंकड़ गिराना शुरू कर देता है जिससे उसका जल स्तर बढ़ना शुरू हो जाता है। कौवा कंकड़ों को तब तक गिराता रहता है जब तक कि पानी ऊपर तक नहीं पहुँच जाता। कौआ पानी पीता है और ख़ुशी से उड़ जाता है। कहानी कक्षा में संवाद शुरू करने के लिए कुछ रोचक सम्भावनाएँ प्रदान करती है।

इसे एक कक्षा में आज़माया गया था; चर्चा निम्नलिखित प्रश्नों के साथ शुरू हुई :

- कौवे ने कंकड़ क्यों उठाए? उसने लकड़ी जैसी कोई अन्य वस्तु क्यों नहीं उठाई?
- शुरुआत में घड़े में कितना पानी था? यदि शुरुआती जल स्तर बहुत कम है तो क्या पानी ऊपर की ओर उठेगा?

- पानी ऊपर क्यों उठा?

अधिकतर विद्यार्थी वह प्रयोग करना चाहते थे जो कौवे ने किया था। मैंने कुछ गिलास, पानी के स्तर को चिह्नित करने के लिए मार्कर और पानी की एक बाल्टी की व्यवस्था की। विद्यार्थी अपनी पसन्द की वस्तुएँ चुनने के लिए कक्षा से बाहर निकले। उनमें से अधिकांश विद्यार्थी विभिन्न आकार के पत्थर लेकर आए। उन्होंने कौवे द्वारा किए गए प्रयोग को दोहराया और जब पत्थरों को पानी में गिराया गया तो पानी के स्तर में बदलाव का अवलोकन किया। जब वे गतिविधि का संचालन कर रहे थे, तो मैंने उन्हें गिलास में पानी की मात्रा में बदलाव करने और फिर अपने अवलोकनों की तुलना करने के लिए कहा। पूरी कक्षा उत्साही 'कौवों' से भरी हुई थी जो सभी प्रकार की चीज़ों से प्रयोग कर रहे थे, जैसे, पानी के विभिन्न स्तरों, विभिन्न आकार के पत्थरों और विभिन्न प्रकार की वस्तुओं के साथ, जिनमें से कुछ तैर भी रही थीं। जब मैंने उनसे अपने अवलोकनों को साझा करने के लिए कहा, तो चर्चा में विभिन्न पहलू आए। मैंने कुछ प्रतिक्रियाओं को नीचे सूचीबद्ध किया है :

- जब पानी की मात्रा बहुत कम थी, तो कई सारे पत्थर डालने के बावजूद भी पानी गिलास में ऊपर नहीं आया।
- कंकड़ आकार और आकृति में समान नहीं थे। इसलिए गिलास में डालने पर समस्या पैदा हो रही थी।
- पत्थरों के अनियमित आकार के कारण, उनके एक–दूसरे के ऊपर लुढ़कने पर बीच में फ़ासले बन रहे थे जिनमें से पानी बह रहा था।
- छोटे कंकड़ों ने सामूहिक रूप से पानी के स्तर को प्रभावी ढंग से बढ़ाने में योगदान दिया। भले ही बड़े कंकड़ों ने भी पानी का स्तर बढ़ाया, लेकिन उनके बीच के फ़ासले बड़े रह जा रहे थे और इसलिए वे उतने प्रभावी नहीं रहे।
- समान आकार और आकृति के कंकड़, जो गिलास के आकार के अनुरूप पंक्तिबद्ध हो जाते हैं, पानी के स्तर को बढ़ाते हैं, चाहे पानी की शुरुआती मात्रा कुछ भी रही हो।
- स्टायरोफोम गेंदों (styrofoam balls) और लकड़ी जैसी वस्तुओं ने पानी के स्तर को प्रभावी ढंग से नहीं बढ़ाया। यहाँ पत्थरों की तुलना में जल स्तर में वृद्धि बहुत कम थी।

उपरोक्त जवाबों की वैधता की चर्चा हम फिर कभी करेंगे। लेकिन इन जवाबों ने कई कारकों को छुआ, जैसे कि कंकड़ और गिलास का आकार, पानी के स्तर में परिवर्तन पर वस्तुओं के आकार का प्रभाव, वस्तुओं का प्रकार जिन्होंने वृद्धि में योगदान दिया और जिसके परिणामस्वरूप कक्षा में एक जीवन्त चर्चा हुई। ऐसा प्रतीत हुआ कि प्रतिभागी सीखने की इस प्रक्रिया के मालिक हैं और इस प्रकार, सीखने के एक सहभागी अनुभव का प्रतिनिधित्व करते हैं। वस्तुओं के तैरने के गुणों के बारे में चर्चा करने और अधिक विस्तार से इन गुणों का पता लगाने के लिए इस कहानी ने एक प्रभावी शुरुआती मंच प्रदान किया।

मैंने प्रतिभागियों के एक अन्य समूह के साथ इस गतिविधि का संचालन करते हुए प्रक्रिया में बदलाव किया। शुरुआत में उन्हें गतिविधि को फिर से करने के लिए कहने की बजाय, मैंने उन्हें पेंसिल से सरल रेखाचित्रों में कहानी दर्शाने के लिए कहा, ताकि यह देखा जा सके कि वे घड़े में पानी के आरम्भिक स्तर और बाद में स्तर में आने वाले बदलाव को कैसे दर्शाते हैं। फिर मैंने उन्हें उसी स्तर के पानी के साथ गतिविधि शुरू करने के लिए कहा जो उन्होंने अपने रेखाचित्रों में दर्शाया था।

ख़रगोश और कछुआ

एक घटना को कई रूपों में दर्शाया जा सकता है, उदाहरण के लिए, एक वाहन की गति को चित्रों, 'स्थिति-समय' (position-time) की मापों वाले सारणीबद्ध स्तम्भों और एक ग्राफ़ के सन्दर्भ में दर्शाया जा सकता है। प्रदर्शन के प्रत्येक रूप के अपने फ़ायदे हैं। ग्राफ़ में एक घटना को दर्शाना कई प्रतिभागियों के लिए एक महत्त्वपूर्ण बिन्दु है और मैंने विद्यार्थियों की ग्राफ़ की समझ को और बढ़ाने के लिए ख़रगोश और कछुए की कहानी का उपयोग किया। 'स्थिति-समय ग्राफ़' पर इस कहानी को निरूपित करना एक दिलचस्प अभ्यास है क्योंकि यह प्रतिभागियों को अपनी सीखों को समेकित और मान्य करने में सक्षम बनाता है।

संक्षेप में, कहानी यह थी : एक ख़रगोश और कछुआ एक दौड़ में प्रतिस्पर्धा करते हैं। शुरू में, ख़रगोश तेज़ी से आगे निकल जाता है और जीतने के प्रति बेहद आश्वस्त होने के कारण, आराम करने के लिए रुक जाता है और अन्ततः सो जाता है। दूसरी ओर कछुआ अपनी निरन्तर गति बनाए रखता है और पहले समाप्ति रेखा तक पहुँच जाता है।

कक्षा में गतिविधि का संचालन करते समय, मैंने विद्यार्थियों से कहानी को दर्शाने के लिए एक सरल 'स्थिति-समय ग्राफ़' बनाने के लिए कहा। जब वे चित्र बना रहे थे तो मैं कक्षा में घूमता रहा और कुछ सबसे आम परिदृश्यों को नोट किया। प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाओं का उपयोग संवाद करने और ग्राफ़ पर कहानी के निरूपण को समझने के लिए किया गया।

एक बार जब उन्होंने कार्य पूरा कर लिया, तो मैंने उन्हें कहानी के कुछ प्रमुख सूचकों पर ध्यान केन्द्रित करने और यह सुनिश्चित करने के लिए कहा कि ग्राफ़ उन्हें दर्शाता हो। उदाहरण के लिए :

- दौड़ 'जीतने' का क्या अर्थ होता है?
- आप कैसे दिखाएँगे कि कछुआ दौड़ जीत गया?
- आप उस अवस्था को कैसे चित्रित करेंगे जहाँ ख़रगोश सो रहा था?
- क्या आप कछुए और ख़रगोश के लिए दो अलग-अलग ग्राफ़ बनाना पसन्द करेंगे?
- आप कैसे दिखाएँगे कि ख़रगोश की शुरुआत अच्छी हुई थी?

कक्षा ने इन बिन्दुओं की चर्चा के आधार पर अपने ग्राफ़ का विश्लेषण किया। प्रत्येक सूचक को ग्राफ़ में एक अवधारणा से जोड़ना महत्त्वपूर्ण तत्व था। उदाहरण के लिए, ग्राफ़ पर 'दौड़ जीतने' का अर्थ होगा कि विजेता का समय मान दूसरे की तुलना में कम है और ख़रगोश के सोने का दौर वह हिस्सा होगा जहाँ समय में वृद्धि के बावजूद स्थिति में कोई बदलाव नहीं होता है। प्रतिभागियों के लिए यह गतिविधि बहुत अर्थपूर्ण थी क्योंकि वे कहानी की भाषा और पाठ्यपुस्तक की गणितीय शब्दावली के बीच सम्बन्ध बना सकते थे। यह शायद सम्भव नहीं होता, अगर गणित की अवधारणा पर पारम्परिक रूप से ही चर्चा की गई होती।

सोचने के लिए बिन्दु

कक्षा में कहानी का उपयोग करने में प्रमुख चुनौतियों में से एक है कहानी में विद्यार्थियों की रुचि पैदा करना और कहानी को चुनी हुई अवधारणा के साथ जोड़ते हुए उनके उत्साह को बनाए रखना। यह सुनिश्चित करते हुए कि उनकी प्रतिक्रियाओं के लिए पर्याप्त मौक़ा दिया जाए, यह भी सुनिश्चित करने के लिए सावधानी बरतनी चाहिए कि विषय से ध्यान विचलित न हो। सही कहानी चुनना एक और चुनौती है, जिसका सामना करना पड़ता है। सही कहानी चुनने का मानदण्ड केवल अवधारणा के साथ इसके सम्बन्ध तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह सुनिश्चित करने के लिए भी है कि खोजबीन और अन्वेषण करने के लिए पर्याप्त सीखने के अवसर प्रदान करते हुए, कहानी को किसी भी पूर्वाग्रह को प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए, न ही रूढ़िवादिता को मज़बूत करना चाहिए। कभी-कभी, दैनिक जीवन के अनुभवों के इर्द-गिर्द चर्चा करना भी वांछित परिणामों को प्राप्त करने में सहयोगी होता है।

वेंकट नाग विनय सूरम ने 2013 में आईआईटी रुड़की से भौतिकी में मास्टर्स की पढ़ाई पूरी की और अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में शामिल हो गए। वे सरकारी स्कूल के शिक्षकों के साथ काम कर रहे हैं ताकि विद्यार्थियों के लिए विज्ञान शिक्षण को और अधिक अनुभवात्मक (experiential) बनाया जा सके। इसमें विज्ञान की अवधारणाओं के इर्द-गिर्द मॉड्यूल विकसित करना और शिक्षकों को इन्हें अपनी कक्षाओं में उपयोग के लिए उन्मुख करना शामिल है। उनकी रुचियाँ इतिहास, विज्ञान दर्शन, तंत्रिका विज्ञान और विज्ञान शिक्षा में हैं। उनसे *vinay.suram@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : जितेन्द्र 'जीत' **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

हुनरमन्द कहानी सुनाने वाले कैसे बनें

राजेश उत्साही

हम सभी, ख़ासतौर पर बच्चों, को कहानियाँ सुनना पसन्द है। मैं जब अपने बचपन को याद करता हूँ, तो मुझे दादी-नानी की कहानियाँ याद आती हैं। सर्दियों के मौसम में हमारे घर में गर्माहट के लिए सिगड़ी जलाई जाती थी। आग तापने के लिए हम सभी बच्चे देर रात तक सिगड़ी के आस-पास बैठे रहते थे। गर्मियों के मौसम में घर के आँगन में बिछी चारपाइयों पर इकट्ठे होते थे। यही वह समय होता था जब दादी-नानी हमें कहानियाँ सुनाया करती थीं। उन्हें कहानियाँ याद भी ख़ूब रहा करती थीं। कहानी सुनते-सुनते अगर नींद आ जाती और कहानी अधूरी रह जाती थी, तो अगले दिन इसे फिर से सुनाने की फ़रमाइश करते थे। यह वह समय था जब टीवी नहीं था। मोबाइल फ़ोन तो दूर की बात है; लैंडलाइन फ़ोन भी आमतौर पर सभी घरों में नहीं होता था।

लेकिन, पिछले कुछ सालों में पूरा परिदृश्य ही बदल गया है। यहाँ तक कि नियमित टीवी कार्यक्रमों की जगह ओटीटी प्लेटफार्म ने ले ली है। अब तो शायद दादी-नानी भी मोबाइल या टीवी के माध्यम से ही कहानियाँ सुना रही हैं। ऐसे तमाम चैनल, ब्लॉग और वेबसाइट हैं जहाँ वीडियो, पॉडकास्ट और ऑडियो कहानियाँ मिल सकती हैं।

इन दिनों मैं अपनी ढाई साल की पोती वान्या के साथ हूँ। यूट्यूब पर वह ऐसी तमाम कहानियों और कविताओं को सुनती और देखती है, जो ख़ासतौर पर बच्चों के लिए तैयार की गई हैं। वह अपनी पसन्द और नापसन्द भी ज़ाहिर करती है।

सुनाने का महत्त्व

घरों में बच्चों को मोबाइल फ़ोन आसानी से उपलब्ध हैं, इस कारण कहानियाँ पढ़ने या सुनाने की अनुकूल परिस्थिति नहीं बन पाती है। हालाँकि इस परिदृश्य में भी, स्कूल में कहानी सुनाने का महत्त्व अब भी बना हुआ है। कहानी सुनाने की कला कक्षाओं में एक उपयोगी साधन (टूल) के रूप में लोकप्रिय हो रही है। कहानी सुनाना अपने आप में एक विशेषज्ञता भी बन गई है। अब पेशेवर कहानी सुनाने वाले (storytellers) भी होने लगे हैं जो स्कूलों में इसके विशेष सत्र लेते हैं। प्रख्यात शिक्षाविद कृष्णकुमार ने कहानी सुनाने की महत्ता पर अपने एक निबन्ध में लिखा है, अगर हमारे प्राथमिक विद्यालयों में रोज़ाना पहले दो पीरियड सिर्फ़ कहानी सुनाने के हों तो बच्चों को स्कूल में टिकाए रखने की समस्या कम-से-कम एक हद तक सुलझ सकती है। आगे वे कहते हैं कि मेरे मन में एक ऐसे दिन की कल्पना है जब छोटे बच्चों को पढ़ाने वाले हर शिक्षक से यह अपेक्षा की जाएगी कि कम-से-कम 30 पारम्परिक कहानियों पर उनकी महारत हो। महारत से मेरा आशय है कि ये कहानियाँ उन्हें अच्छी तरह से याद हों, ताकि वह उन्हें इत्मीनान और आत्मविश्वास के साथ सुना सकें। वे आगे कहते हैं कि यह एक ऐसे समाज के लिए कोई बड़ी या मुश्किल बात नहीं है जिसके पास हज़ारों कहानियों की विरासत है। 30 ऐसी कहानियाँ जिन्हें अध्यापक अपनी मर्ज़ी से जब चाहे सुना सके, जो प्राथमिक कक्षाओं के पहले दो पीरियड का माहौल बदलकर रख देंगी। शर्त इतनी भर है कि दैनिक पाठ्यक्रम में कहानी सुनाने को एक सम्मानजनक जगह इस ख़ातिर दी जाए कि कहानी सुनाना अपने आप में महत्त्वपूर्ण है।

बुनियादी चरण के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 में भी इस पर ज़ोर दिया गया है।

> "कहानियाँ बच्चों के लिए दुनिया को जानने की खिड़की होती हैं। वे आकर्षक, सुन्दर, करामाती होती हैं! कहानियाँ सुनने में बहुत मज़ा आता है और ख़ासकर छोटे बच्चे उन्हें सुनना पसन्द करते हैं। भावनाओं के साथ, भाव-भंगिमा और जीवन्त अभिव्यक्ति के साथ सुनाई गई कहानियाँ जादुई होती हैं और आपकी साँसें थामे रखती हैं। हर शब्द अपने आप में एक अनुभव बन जाता है।
>
> कहानियाँ विशेष रूप से सामाजिक सम्बन्धों और नैतिक विकल्पों को सीखने, भावनाओं को समझने व अनुभव करने और जीवन कौशल के बारे में जागरूक होने के लिए एक अच्छा माध्यम हैं। कहानियाँ सुनते समय बच्चे नए शब्द सीखते हैं जिससे उनकी शब्दावली विस्तृत होती है और साथ ही वे वाक्य संरचना एवं समस्या सुलझाने के कौशल भी सीखते हैं। जो बच्चे बहुत ज़्यादा वक़्त तक एक जगह ध्यान नहीं लगा पाते हैं, वे भी कहानी में लम्बे समय तक तल्लीन होने लगते हैं। सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक कहानियों के ज़रिए हम बच्चों को उनकी संस्कृति, सामाजिक मानदण्डों से परिचित करा सकते हैं और उनके परिवेश के बारे में जागरूकता पैदा कर सकते हैं।"

कक्षा में कहानी सुनाने का उपयोग

शिक्षाशास्त्र के रूप में कहानी सुनाने का उपयोग अमूमन पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं के बच्चे के लिए किया जाता है, जिन्होंने अभी स्वयं से पढ़ना नहीं सीखा है या पढ़ना सीख रहे हैं। हालाँकि श्रोता ऐसे भी हो सकते हैं जिन्हें पढ़ना तो आता है पर पढ़ने में कोई रुचि नहीं है।

अगर आप शिक्षक हैं, (या अभिभावक हैं या शौक़िया रूप से कहानी सुनाने की कला में माहिर होना चाहते हैं) तो आपको कुछ बातों का ध्यान रखना होगा। सबसे पहले यह तय करना होगा कि कहानी क्यों सुनाई जा रही है, उसका उद्देश्य क्या है। मोटेतौर पर निम्न उद्देश्य हो सकते हैं -

- बच्चों को बहलाना।
- बच्चों में कहानी के प्रति रुचि जगाना।
- बच्चों में पढ़ने के प्रति रुचि जगाना।
- किसी अवधारणा विशेष या मूल्यों को बच्चों तक पहुँचाना।
- बातचीत करने में बच्चों की झिझक तोड़ना।
- बच्चे कहानी के बहाने सवाल पूछने, चर्चा में भाग लेने के लिए आगे आएँ।
- बच्चों में कल्पनाशीलता, दृश्यनिर्माण को बढ़ावा देना।
- अपनी समस्या को सामने रखने के लिए कौशल विकसित करना।

कहानी कहाँ से मिल सकती है?

आप कहानी कहीं से भी ले सकते हैं। हालाँकि, आपका उद्देश्य भी इस बात को निर्धारित करेगा कि कहानी कहाँ से लें। सबसे बेहतर स्रोत हैं हमारी पारम्परिक कहानियाँ। इनमें लोककथाओं का स्रोत सबसे बड़ा है। लोककथा की एक ख़ासियत यह है कि यह परिवेश और संस्कृति के हिसाब से यात्रा करती हुई अपना रूप बदलती रहती है, लेकिन उसका मूल कथ्य वही बना रहता है। इस कारण से यह याद भी जल्दी होती है और किसी बँधे-बँधाए ढर्रे में नहीं चलती है। पंचतंत्र, जातक कथाएँ जैसे स्रोत भी उपयोगी होंगे। बहरहाल महत्त्वपूर्ण यह भी है कि आप क्या नहीं चुनें। किसी का मज़ाक उड़ाने वाली, नैतिक शिक्षाओं से भरी, भूत-प्रेत और अन्धविश्वास को बढ़ावा देने वाली, संवैधानिक मूल्यों की अवहेलना करने वाली कहानियों से बचें। कहानी की भाषा सरल, सहज और सम्प्रेषणीय हो। शब्द ऐसे हों, जो उनके परिवेश के हों,उच्चारण करने में आसान हों।

शुरुआत कैसे करें

- शुरुआत करने के लिए आपको जो भी कहानी याद हो, आपने किसी से सुनी हो, कहीं पढ़ी हो, उसका प्रयोग करें। उस पर बच्चों की प्रतिक्रिया देखें। उस प्रतिक्रिया के आधार पर आप अगली कहानी सोच सकते हैं।
- आप किसी किताब या पत्रिका में छपी कहानी भी सुना सकते हैं।
- बच्चों से पूछें। यदि उन्हें कोई कहानी याद हो तो वे भी उसे सुना सकते हैं।
- शुरुआत इस तरह भी हो सकती है कि बच्चों से पूछा जाए घर से स्कूल आते वक़्त उन्होंने रास्ते में क्या देखा। या कि उनके साथ पिछले दिन ऐसा क्या घटा जिसे वे औरों को बताना चाहते हैं। यह गतिविधि बच्चों में अभिव्यक्ति के कौशल को विकसित करने में मदद करेगी।

अभ्यास निपुण बनाता है

कहानी सुनाना वास्तव में एक कला है। उसमें आप धीरे-धीरे पारंगत हो सकते हैं। आप कहानी सुनाते हुए अपनी आवाज़ में उतार-चढ़ाव ला सकते हैं। पात्रों के अनुरूप अपनी आवाज़ को बदल सकते हैं। अपने चेहरे की भाव-भंगिमाएँ बना सकते हैं। और अगर कक्षा में या जहाँ आप कहानी सुना रहे हैं, जगह है तो आप चलते या घूमते हुए भी अपनी कहानी सुना सकते हैं। ध्यान रखें कि ऐसी कोई भंगिमा न बनाएँ या आवाज़ न निकालें जो बच्चों में डर पैदा करे। अगर कहानी रोचक होगी तो बच्चे ध्यानपूर्वक सुन रहे होंगे। अगर बच्चों का ध्यान कहानी सुनने में नहीं है तो आपको सोचना होगा कि क्या नया किया जाए। एक तरीक़ा यह है कि कहानी कुछ इस तरह सुनाएँ कि उसमें बच्चों से संवाद का मौक़ा भी निकल आए। कहानी में जो होने वाला है या हो सकता है, उसके बारे में बच्चों को सोचने के लिए कहें। दूसरा तरीक़ा है कहानी को उनके परिवेश से जोड़ें, उनकी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी से जोड़ें।

कुछ कहानियाँ ऐसी होंगी, जिन्हें बच्चे बार-बार सुनना चाहेंगे। ऐसी कहानियाँ सुनाने में आपको भी आसानी होगी। आपके पास मौक़ा होगा कि आप कहानी को हर बार नए अन्दाज़ से सुना सकते हैं। उसमें नए पहलू और प्रसंग भी जोड़ सकते हैं। इस सन्दर्भ में मैं एक निजी अनुभव का ज़िक्र करना चाहूँगा। मेरे दो बेटे हैं। जब वे छोटे थे तो मेरे पिता उन्हें कहानी ख़ुद बनाकर सुनाते थे। उन्होंने लाट साहब नाम का एक चरित्र गढ़ा था। वे हर बार उसका कोई नया कारनामा बनाकर सुनाते थे। इसमें भी मज़े की बात यह थी कि बीच-बीच में उनके श्रोता यानी मेरे बेटे स्वयं भी इसमें कुछ-न-कुछ जोड़ देते थे। यानी वे भी लाट साहब के चरित्र के अनुरूप कल्पना करने लगते थे। आप भी बच्चों को ऐसे अवसर दे सकते हैं।

इसके अलावा एक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हर कहानी का अमूमन एक तय अन्त होता है। यह ज़रूरी नहीं है कि आप उस अन्त पर अडिग रहें। आप उस अन्त को न बताकर बच्चों के सामने एक सवाल के रूप में छोड़ सकते हैं। या बच्चों से उसके एक से अधिक अन्त सोचने के लिए कह सकते हैं। और यह भी तत्काल न करके, उन्हें कुछ समय देकर या अगले दिन सोचकर आने के लिए कह सकते हैं। इस कहानी से क्या शिक्षा मिलती है या यह कहानी हमें क्या सिखाती है जैसे जुमलों से परहेज़ किया जाना चाहिए। अगर कहानी में ऐसा कुछ है भी तो बच्चों को उसे ख़ुद ही आत्मसात करने का मौक़ा दें।

जब आप कहानी सुनाना शुरू करेंगे तो उस पर बच्चों की प्रतिक्रिया ही आपको ऐसे सुराग़ देगी कि अगली बार कैसी कहानी चुनें। अच्छी कहानियाँ चुनने के लिए कहानियाँ पढ़ते रहना भी ज़रूरी होगा। बहरहाल यह कुछ प्रारम्भिक बातें हैं। एक हुनरमन्द कहानी सुनाने वाला बनने के लिए निरन्तर अभ्यास और नए तरीक़े आज़माने और सीखने की ज़रूरत होगी।

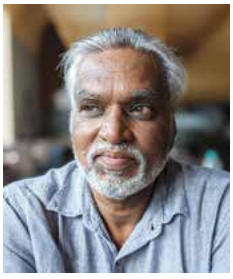

राजेश उत्साही अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के 'अनुवाद पहल' में वरिष्ठ हिन्दी सम्पादक हैं। वे विश्वविद्यालय की पत्रिकाओं *लर्निंग कर्व* और *आई वंडर...* के हिन्दी-अनुवादित संस्करणों का सम्पादन करते हैं। लगभग 12 वर्षों तक अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन के 'टीचर्स ऑफ़ इंडिया' पोर्टल के हिन्दी सम्पादक रहे हैं। इससे पहले क़रीब 27 साल तक *एकलव्य* के साथ विभिन्न भूमिकाओं में काम कर चुके हैं, जिसमें 17 वर्षों तक बाल विज्ञान पत्रिका *चकमक* का सम्पादन भी शामिल है। उनसे *utsahi@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : अफ़साना पठान **पुनरीक्षण :** प्रतिका गुप्ता **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

शिक्षकों को उनके क्षेत्र-विशेष से कहानियाँ साझा करनी चाहिए। ऐसी और कहानियों के लिए वे शिक्षार्थियों से कह सकते हैं कि वे अपने पालकों से उनके क्षेत्र-विशेष की कहानियाँ सुनाने के लिए कहें। परिवारों में कहानी सुनाने के रिवाज़ों को पहचाना जाना चाहिए और प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, इससे पहले कि वे पूरी तरह ख़त्म हो जाएँ। अच्छे साहित्य से रूबरू होने की कमी से पड़ी दरार बदक़िस्मती से 'ख़बरी क़िस्सों' से भरी जा रही है जिसकी बमबारी टीवी और फ़ोन के ज़रिए हम पर लगातार हो रही है।

- वैलेंटीना त्रिवेदी, कहानियाँ कैसे बच्चों का लालन-पालन करती हैं, पेज 1

भाषा सीखने में कहानियों का प्रभाव

शरुन सनी

यह बात व्यापक तौर पर स्वीकार की जाती है और इस क्षेत्र में शोध भी किए जा रहे हैं कि जब हम कहानियाँ सुनते हैं, तो हमारे मस्तिष्क अधिक सक्रिय होते हैं। तब भी यह प्रश्न अपनी जगह बना रहता है कि कहानी की वर्णनात्मक संरचना, जहाँ घटनाएँ क्रमिक ढंग से सामने आती हैं, का हमारी सीखने की प्रक्रिया पर इतना गहरा प्रभाव क्यों पड़ता है।

इसका जवाब एकदम सीधा-सा है : हमारे मस्तिष्क कहानियों के लिए सहज रूप से बने हैं — कहानियाँ कहने और सुनने के लिए। हर कहानी के मूल में कारण-प्रभाव सम्बन्धों की एक शृंखला होती है, जो उस क्रमिक चिन्तन के जैसी होती है जो सूचना को संसाधित करने के हमारे स्वाभाविक ढंग का आधार होता है। चाहे हम रोज़मर्रा की गतिविधियों में लगे हों, काम कर रहे हों या अपने प्रियजनों के साथ समय बिता रहे हों, हम अपने कृत्यों और व्यवहारों को समझने के लिए अपने दिमाग़ में, थोड़े समय के लिए ही सही, निरन्तर कहानियाँ बुनते रहते हैं। कहानी सुनाने की गतिविधि (स्टोरीटेलिंग) क्रमिक चिन्तन की हमारी नैसर्गिक प्रवृत्ति का उपयोग करती है और सूचना को ज़्यादा कारगर ढंग से संसाधित करने और संचित रखने में हमारी मदद करती है। यह बात विशेष रूप से उन बहुत छोटे बच्चों के सन्दर्भ में सही है जिनके मस्तिष्क अभी विकसित होने की प्रक्रिया में होते हैं और जो नई जानकारी और अनुभवों के प्रति बहुत ग्रहणशील होते हैं। यह उनका नए विचारों, अवधारणाओं और अनुभवों से परिचय कराती है और वे कारण-प्रभाव सम्बन्धों, समस्या-समाधान की युक्तियों और कार्यों के परिणामों के बारे में सीखते हैं। वे भाषिक दक्षताएँ, शब्दावली (जो सीखने वालों की याद करने तथा नए शब्दों का सन्दर्भपरक इस्तेमाल करने की दक्षता में इज़ाफ़ा करती है) और भावनाओं तथा संवेदना की अधिक गहरी समझ भी विकसित करते हैं।

इस लेख का उद्देश्य इस बात को समझना है कि विषयवस्तु को पढ़ाने के लिए कहानी सुनाने को कक्षा की रोज़मर्रा गतिविधियों में शामिल करना छोटे विद्यार्थियों में भाषायी विकास को सहयोग देते हुए सीखने की प्रक्रिया को बढ़ाने में कैसे एक मूल्यवान साधन हो सकता है।

इससे पहले कि हम इस विवरण की गहराई में जाएँ कि छोटे विद्यार्थियों के लिए कहानी सुनाना क्यों महत्त्वपूर्ण था और आज भी है, कहानी सुनाने की परिभाषा ज़रूरी है, क्योंकि यह किसी कहानी को ज़ोर-से पढ़ने से या पढ़ने की दूसरे क़िस्म की प्रस्तुतियों से भिन्न है। बहुत सारी परिभाषाएँ हैं, लेकिन जो एक परिभाषा बहुत स्पष्ट है, वह रोनी (1983) की है जिसमें वे कहते हैं कि, "कहानी सुनाना अपने सर्वाधिक बुनियादी रूप में वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से कोई व्यक्ति (कहानी सुनाने वाला), मानसिक बिम्बों, आख्यान की संरचना और स्वरों के उच्चारण या संकेतों का इस्तेमाल करता हुआ उन अन्य लोगों (श्रोताओं) तक अपनी बात पहुँचाता है जो स्वयं भी मानसिक बिम्बों का इस्तेमाल करते हैं और इस तरह मुख्यतः अपनी भाव-भंगिमाओं के माध्यम से कहानी सुनाने वाले तक अपनी बात पहुँचाते हैं, जिसके नतीजे में कहानी एक सहयोगी सृजन-प्रक्रिया के माध्यम से सामने आती है।"

भाषा की प्राथमिक कक्षाओं में, कहानी सुनाना एक गतिशील और बहुमुखी गतिविधि होती है जो सामान्य तौर पर तीन भिन्न चरणों में सामने आती है।

कहानी सुनाने के चरण

पहला, कहानी के पहले की गतिविधियाँ जहाँ बच्चों को कहानी के प्रति आकर्षित करती हैं और उससे जोड़े रखती हैं, वहीं सम्बन्धित भाषा और शब्दावली से उनका परिचय कराती हैं या उन्हें सुदृढ़ बनाती हैं। फिर, कहानी के दौरान जारी गतिविधियाँ बच्चों का ध्यान एकाग्र रखती हैं और क़िस्से की उनकी समझ का मार्गदर्शन करती हैं और उसे सुदृढ़ बनाती हैं। अन्त में, कहानी सुनाए जाने के बाद की गतिविधियाँ बच्चों को कहानी की भाषा का सक्रिय रूप से प्रयोग करने और निजी प्रतिक्रियाओं को साझा करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।

इन तीन चरणों के माध्यम से बच्चे विभिन्न अवस्थाओं से और विषयवस्तु के दोहराव की प्रक्रिया से गुज़रते हैं। बल्कि कई रूपों में कहानी सुनाने की प्रक्रिया भाषा की गहरी समझ विकसित करने, अपनी शब्दावली का विस्तार करने और आलोचनात्मक चिन्तन की दक्षताएँ विकसित करने की और इस दौरान कहानियों की सम्मोहक शक्ति का आनन्द लेने की समग्र पद्धति है।

कभी-कभी शिक्षक यह मान लेते हैं कि उनकी कक्षा, स्वाभाविक तौर पर, समृद्ध भाषा का इस्तेमाल करने और सुनने के अवसर उपलब्ध कराती है। यह बात हमेशा सही नहीं होती। शिक्षकों के लिए ज़रूरी है कि वे ऐसी सुविचारित योजनाएँ तैयार करें जो बच्चों को उस तरह की भाषा से जोड़ें जैसी भाषा साक्षरता शिक्षा से जुड़ी हो (फ्लिन, 2016)। और कहानी सुनाना ऐसी ही एक गतिविधि है। कहानी सुनाने की गतिविधियों के दौरान शिक्षकों को शब्द-क्रीड़ा, तुकबन्दी, ऑनसेट (onset) और राइम (rime)[1] जैसी गतिविधियों को प्रोत्साहित करने का और एक शब्द के भीतर विभिन्न ध्वनियों को अलगाने का अवसर प्राप्त होता है, जिसके परिणामस्वरूप बच्चे में सुविकसित ध्वन्यात्मक जागरूकता आती है और अन्ततः हिज्जे करने तथा अर्थ करने की उत्तम दक्षताएँ पैदा होती हैं (सोडरमैन और अन्य 2013)।

जैसे ही बच्चा लगभग 100-50 शब्द अर्जित कर लेता है, भाषा बहुत तेज़ी-से विकसित होती है (सोडरमैन और अन्य, 2013)। बच्चे प्रायः चार-पाँच साल की उम्र में अपने बोलने में प्रवाह लाने लगते हैं और इसमें अत्यन्त सफल होते हैं (ब्रायन, 1996; कैमबर्न, 1986)। बोलना बच्चे का सबसे मज़बूत पक्ष होता है, लेकिन संवाद के लिए इस्तेमाल की जाने वाली उनकी भाषा अकादमिक होने की बजाय व्यावहारिक ज़्यादा होती है। वे भाषा का विश्लेषण करने की बजाय उसका इस्तेमाल कर रहे होते हैं। सामान्यतः, कहानी सुनाने की गतिविधि इन बातों के साथ एकदम सटीक बैठती है, क्योंकि वह प्राथमिक तौर पर मौखिक भाषा पर आधारित होती है। यह मौखिक भाषा में बच्चे की दक्षता का अकादमिक ढंग की बजाय व्यावहारिक ढंग से इस्तेमाल करती है और, इसलिए हर बच्चे की पहुँच में होती है।

सीखने के एक साधन के रूप में, कहानी सुनाने का इस्तेमाल पाठ्यक्रम के सभी क्षेत्रों में विषयवस्तु को साझा करने के लिए किया जा सकता है, लेकिन अँग्रेज़ी भाषा की कक्षा के लिए उसका विशेष रूप से बहुत अधिक मूल्य है क्योंकि यह मुद्रित साहित्य के प्रति जागरूकता को बढ़ाती है। कहानी-पाठ के दौरान जब अध्यापक पुस्तक के पन्ने पर अपनी अँगुली सरकाते हुए धीरे-धीरे पढ़ रहा होता है तो बच्चे उसका अनुसरण करते हैं। शब्दों के अर्थ निकालने का पहला चरण इस बात को समझना है कि पन्ने पर अंकित गद्य सामान्यतः बाएँ से दाएँ लिखा गया होता है। बच्चों को कहानी सुनाने की प्रक्रिया में सह-रचना के लिए भी आमंत्रित किया जा सकता है।

> कहानी सुनाने की गतिविधि भाषिक रूप से समृद्ध वातावरण की गुंजाइश देती है। इसमें उन अवसरों के लिए भी ध्यान रखा गया होता है जो बच्चों को भाषा के विस्तृत इस्तेमाल (वयस्क और बच्चे के बीच परस्पर वार्तालाप) की और विचारों में विस्तार करने की गुंजाइश देते हैं। उदाहरण के लिए, जब बच्चों के सीखने के तात्कालिक वातावरण में मौजूद वयस्क लम्बी और ज़्यादा जटिल बातें बोलते हैं तथा वाक्य-रचना की दृष्टि से जटिल भाषा का प्रयोग करते हैं, तो इससे बच्चों में लम्बे वार्तालापों में भाषा का इस्तेमाल करने और वाक्य-रचना की दृष्टि से जटिल कथनों का इस्तेमाल करने की क़ाबिलियत पैदा होती है। इस क़िस्म की सीखने की प्रक्रिया इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि बच्चे नए शब्द सीखने के लिए सन्दर्भपरक संकेतों का इस्तेमाल करते हैं, जिनमें वाक्य-संरचना द्वारा उपलब्ध कराए गए संकेत शामिल होते हैं। वाक्य रचना के विविध रूपों के साथ परिचय में भाषा की समझ का पूर्वानुमान निहित होता है और वह अन्ततः पढ़ने की समझ से जुड़ा होता है।

इस उपलब्धि के बाद सकर्मक क्रियाओं और सरल क़िस्म के सूत्रात्मक पदों (I want, Stop it, Don't want that, Please) को जोड़ दिया जाता है। जैसे ही एक बार पर्याप्त ग्रहणशील शब्दावली और इस बात का प्रमाण जुट जाता है कि दूसरों के साथ संवाद अपने अत्यन्त स्वभाविक रूप में हो रहा है और अभ्यास के लिए प्रोत्साहन और अवसर मिल रहे हैं, वैसे ही बच्चे सामान्यतः तेज़ रफ़्तार प्रगति के रास्ते पर चल पड़ते हैं (कोस्टेल्निक, सोडेरमैन और व्हाइरेन, 2013)।

परिचित आधार

इन आरम्भिक चरणों के दौरान अध्यापकों के लिए यह सुनिश्चित करना बहुत महत्त्वपूर्ण होता है कि बच्चे जिन चीज़ों से परिचित हैं उन्हें सुनें, देखें और पढ़ें। एक उदाहरण के तौर पर, कक्षा में जो कुछ कहानी के रूप में पढ़ा जा रहा हो, उसे उन बातों को भी सहारा देना चाहिए जिन पर सर्कल टाइम या छोटे-छोटे समूह संवादों के दौरान चर्चा हो रही हो। इस क़िस्म की कहानी को ही लें, जो नीचे दी गई है :

एक उजली सुबह, जब सूर्य पृथ्वी की ओर देखकर मुस्करा रहा था, एक छोटे-से बीज में, जिसे मीना ने अपने बग़ीचे में बोया था, जीवन प्रस्फुटित हो उठा। उस अंकुर की छोटी-छोटी-सी पत्तियाँ काली मिट्टी को धक्का देती रहीं और एक दिन जब उन्होंने धक्का दिया, तो दो हरी पत्तियाँ बीज की फल्ली में से बाहर निकल आईं। मीना ने उन्हें रोज़ पानी दिया और जल्दी ही वह अंकुर एक पौधा बन गया। जब वह पौधा बड़ा हुआ, तो पौधे की नोक पर एक छोटी-सी कली की ओर उसका ध्यान गया। जैसे-जैसे दिन बीतते गए, कली धीरे-धीरे खुलने लगी और एक ख़ूबसूरत सुबह, एक चमकीले, पीले सूरजमुखी ने मीना का स्वागत किया।

इस कहानी का इस्तेमाल न सिर्फ़ इसकी विषयवस्तु के बारे में बल्कि भाषा के बारे में भी शिक्षा देने के लिए किया जा सकता है। इसका एक तरीक़ा यह है कि एक विशेषता चार्ट तैयार किया जाए। विशेषता चार्ट वे सशक्त उपकरण होते हैं जो अभिव्यंजक शब्दावली गढ़ने में और उस भाषा के शब्द सीखने में बच्चों की मदद करते हैं जिसे वे अर्जित करने की कोशिश कर रहे होते हैं। ऊपर अंकित कहानी में, शिक्षक विद्यार्थियों को वास्तविक सूरजमुखी दिखा सकता है, बच्चों को अपने बीज बोने तथा उन्हें उगते हुए देखने को प्रेरित कर सकता है। यह सब एक कहानी के माध्यम से किया जा सकता है। विशेषता चार्ट के माध्यम से, अध्यापक न सिर्फ़ विज्ञान से सम्बन्ध रखने वाले शब्दों को, बल्कि उन शब्दों को भी प्रकाश में ला सकता है, जो फूल का वर्णन करते हैं जैसे 'सुन्दर', 'पीला', 'चमकीला' आदि। बेशक, ऐसे अनेक तरीक़े हैं जिनमें कोई कहानी सीखने के लिए उपयोगी हो सकती है।

कहानियाँ और कहानी सुनाने की गतिविधियाँ ख़ासतौर से उस समय बहुत कारगर होती हैं जब छोटे बच्चों को अँग्रेज़ी पढ़ाई जा रही होती है क्योंकि वे वास्तविक जीवन के सन्दर्भों में स्पष्ट और सुगम भाषा उपलब्ध कराती हैं। इसके अतिरिक्त, कहानियाँ प्रेरणादायी होती हैं और वे बच्चों की कल्पना को प्रेरित कर उन्हें विभिन्न विषयों के बीच सम्बन्ध स्थापित करने में सक्षम बनाती हैं। कहानियों का इस्तेमाल करते हुए, विद्यार्थी सन्दर्भीकृत भाषा को प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि वह एक परिचित सन्दर्भ में प्रस्तुत की गई होती है और उसे चित्रों तथा रेखांकनों का सहारा दिया गया होता है। भाषा को एक विशेष स्थिति में रखते हुए विद्यार्थी इस्तेमाल की गई भाषा के अर्थ और सन्दर्भ को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं। अँग्रेज़ी पढ़ाने का यह तरीक़ा सीखने के एक अधिक सामंजस्यपूर्ण अनुभव की रचना करता है जिससे विद्यार्थियों को भाषा को अपने रोज़मर्रा जीवन से जोड़ने में मदद मिलती है।

एक अनिवार्य दक्षता है सुनना, जिसे छोटी उम्र के विद्यार्थी अक्सर सहज ढंग से विकसित कर लेते हैं, लेकिन जिसमें हो सकता है कि उन्होंने स्पष्ट तालीम हासिल न की हो। सुनना छोटे विद्यार्थियों के लिए सम्भवतः सर्वाधिक महत्त्व की वह दक्षता है जिसे उन्हें विकसित करना होता है। बच्चे कक्षा में प्रवेश करने से पहले ही यह विशेष दक्षता हासिल कर चुके होते हैं, क्योंकि सुनना सम्प्रेषण व संवाद को सीखने का बुनियादी पक्ष है। कहानी सुनाना बच्चों की सुनने की विकसित दक्षताओं से लाभान्वित होने का और उन्हें सीखने की प्रक्रिया में समाहित करने का एक कारगर तरीक़ा है। शिक्षक इस सुविधा का लाभ उठाते हैं, क्योंकि वे उन दक्षताओं को और विकसित करने पर ध्यान केन्द्रित कर सकते हैं जो विद्यार्थियों के पास पहले से मौजूद हैं और जो कि पढ़ने और लिखने की उन दक्षताओं के विपरीत होती हैं जो औपचारिक शिक्षण और अनेक हस्तक्षेपों की माँग करती हैं।

> सुनना निष्क्रिय गतिविधि नहीं है; यह अच्छे-ख़ासे संज्ञानात्मक परिष्कार की माँग करती है। बच्चे जब कोई कहानी सुनते हैं, तब उन्हें उन चीज़ों का परिष्कार करना अनिवार्य होता है जिन्हें वे सुनते और देखते हैं, साथ ही उन्हें प्रस्तुत की जा रही भाषा और विषयवस्तु को समझना भी ज़रूरी होता है। बच्चे कहानी को समझ सकें, इसमें उनकी मदद के लिए अध्यापकों को 'सोचने के समय' की गुंजाइश देनी चाहिए, ताकि बच्चों को वह समय मिल सके जो जटिल भाषिक और संज्ञानात्मक परिष्कार के लिए ज़रूरी होता है।

कहानी सुनाना एक आधारभूत उपकरण है जो भाषा सीखने में मदद देता है और शिक्षकों के लिए यह महत्त्वपूर्ण है कि वे इस शाश्वत उपकरण का निरन्तर उपयोग करते रहें। कहानी सुनाने के लिए उच्चस्तरीय प्रौद्योगिकी या कहानी की महँगी क़िताबों की ज़रूरत नहीं होती। इसकी बजाय, सीखने का एक समृद्ध वातावरण रचने के लिए, अध्यापक और विद्यार्थी आपसी सहयोग करते हुए अपने रोज़मर्रा के अनुभवों से कहानियों की सह-रचना कर सकते हैं।

यहाँ विभिन्न आयु के विद्यार्थियों के लिए कहानियों की कुछ ऐसी क़िताबें सुझाई जा रही हैं जिनकी विषयवस्तु प्राकृतिक दुनिया से ली गई है :

तेजस्विनी आप्टे और सुजाता पद्मनाभन द्वारा रचित कल्पवृक्ष की द *पूप बुक*

तान्या मजूमदार द्वारा रचित कल्पवृक्ष की द *मॉन्स्टर हू कुड नॉट क्लाइम्ब ए ट्री*

आरती मुथन्ना सिंह और ममता नैनी दवारा रचित कराडी टेल्स की *वत्सला लव स्नेक्स*

शोभा विश्वनाथ द्वारा रचित कराडी टेल्स की द *इन्सेक्ट बॉय*

अंशुमनी रुद्रा द्वारा रचित कराडी टेल्स की *दोरजेज़ स्ट्राइप्स*

Endnotes

1. ऑनसेट-राइम शब्दों को दो हिस्सों में बाँटने या तोड़ने की प्रक्रिया है : ऑनसेट किसी भी शब्द की प्राथमिक ध्वन्यात्मक इकाई है, और राइम उसके बाद आने वाले अक्षरों की लड़ी है। राइम सामान्य तौर पर एक स्वर और एक अन्तिम व्यंजन ध्वनि से मिलकर बनती है।

References

Bryen, D N (1982). *Inquiries into Child Language*. Boston, MA: Allyn and Bacon

Cambourne, B (1986). "Rediscovering Natural Literacy Learning: Old Wine in a New Bottle." Paper presented at the E.S.L. Conference, Singapore

Flynn, E E (2016). Language-Rich Early Childhood Classroom: Simple but Powerful Beginnings. *The Reading Teacher*, 70(2), 159–166 http://www.jstor.org/stable/44001420

Roney, R C (2009). A Case for Storytelling in the K-12 Language Arts Curriculum. *Storytelling, Self, Society*, 5(1), 45–54. http://www.jstor.org/stable/41943299

Soderman, A K, Clevenger, K. G., & Kent, I. G. (2013). Using Stories to Extinguish the Hot Spots in Second Language Acquisition, Preschool to Grade 1. YC *Young Children*, 68(1), 34–41. http://www.jstor.org/stable/42731300

शरून सनी अँग्रेज़ी भाषा के शिक्षण के क्षेत्र में कार्यरत एक पेशेवर अध्यापिका और शिक्षक प्रशिक्षक हैं। सृजनात्मकता की शोधकर्ता और लेखन की शिक्षिका के रूप में वे सृजनात्मकता, सुन्दरता और सरलता को एक साथ लाने की कोशिश करती हैं। वे अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु में पढ़ाती हैं। उनसे *sharoon.sunni@apu.edu.in* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : मदन सोनी **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

कथावना | कहानियों और कहानी सुनाने के लिए अवसर तैयार करना

सोनिका पाराशर

बाल साहित्य (मौखिक, प्रदर्शनशील और लिखित) में बच्चों को आनन्द, कल्पना, भावनाओं, रचनात्मकता, जिज्ञासा, विभिन्न संस्कृतियों, भाषा के साथ खेलने, मानव जीवन के साथ सहानुभूति और स्वयं को समझने की दुनिया में ले जाने की क्षमता है।

–कथावना, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, 2023

बच्चे एक बड़े समूह में आए और मैंने उन्हें मेरे सामने आधे गोले में बैठने के लिए कहा। उनकी उत्साहित, चमकती आँखें मेरी ओर प्रतीक्षा से देख रही थीं। मैं धीरे-धीरे अपनी पीठ के पीछे छिपी हुई क़िताब को आगे ले आई। मैंने उन्हें कवर पेज दिखाया और एक नाटकीय अन्दाज़ के साथ चिल्लाई, "उस मगरमच्छ को पकड़ो!" मेरे सामने बैठा विद्यार्थियों का समूह हँसी से झूम उठा और मैं समझ गई कि शो शुरू हो गया है।

हमारे वार्षिक बाल साहित्य मेले, कथावना (KathaVana) में मैंने एक स्टॉल लगाया था, जिसमें ज़ोर-से पढ़कर (read-aloud) कहानी सुनाने (storytelling) की एक गतिविधि थी। ये बच्चे जो आए थे वे कन्नड़ा से परिचित थे और मैं केवल हिन्दी और अँग्रेज़ी जानती थी। इसलिए, मैंने जो अँग्रेज़ी में पढ़ा, एक सहकर्मी की मदद से उसका कन्नड़ा में अनुवाद किया गया। भाषा में अन्तर के बावजूद इशारों, अभिव्यक्तियों, आवाज़ की लयताल और अन्य पारभाषिक (paralinguistic) विशेषताओं के साथ ज़ोर-से पढ़ने से बच्चों द्वारा पर्याप्त रूप से समझपूर्ण, विचारशील और रोमांचक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुईं। उनकी आश्चर्यचकित होने, चौंकने, हँसने और उत्साहित प्रतीक्षा करने की सहज प्रतिक्रियाएँ सत्र की मुख्य आकर्षण रहीं।

कथावना क्या है?

कथावना एक वार्षिक, द्विभाषी, बाल साहित्य महोत्सव है, जो अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय,बेंगलूरु द्वारा अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन के कर्नाटक के फील्ड संस्थानों के साथ मिलकर आयोजित किया जाता है। यह विभिन्न सांस्कृतिक, सामाजिक-आर्थिक और भाषायी पृष्ठभूमियों

चित्र-1 : *वार्षिक द्विभाषी बाल साहित्य महोत्सव, कथावना में बच्चे।*

के बच्चों के लिए साहित्य के उपयोग को सुलभ बनाने के लिए सरकारी और कम शुल्क वाले निजी स्कूलों के साथ काम करने की एक पहल है।

कथावना का प्रत्येक संस्करण कार्यशालाओं, चर्चाओं, मौखिक रूप से कहानी सुनाने, ज़ोर-से पढ़ने, कठपुतली शो, चित्रकार से मिलने और इसके आस-पास के अन्य कार्यक्रमों के साथ एक विषय पर आधारित होता है। पहले के कुछ विषय 'साहित्य में बच्चों की आवाज़', 'पाठकों के रूप में शिक्षक' और 'साहित्य के प्रति बच्चों की प्रतिक्रिया का पोषण' रहे हैं। यह उत्सव बच्चों की बाल साहित्य तक पहुँच और जुड़ाव को सक्षम बनाता है और उन्हें अपनी कक्षाओं में लौटने के बाद भी इसको जारी रखने के लिए प्रेरित करता है। शिक्षक यहाँ अवलोकन करके अपनी कक्षाओं में बाल साहित्य उपयोग के लिए कई विचारों और तरीक़ों को सीखते हैं।

कहानी सुनाना क्यों?

जब से मानव भाषा अस्तित्व में आई है, तब से *दास्तानगोई, हरिकथा कलाक्षेपम, यक्षगान, कावड, बुर्रा कथा, कठपुतली, रबाना छाया, थोलू बोम्मलता* जैसी विभिन्न मौखिक और प्रदर्शन परम्पराओं के माध्यम से कहानी सुनाना मानव जीवन का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा रहा है। इन मौखिक और प्रदर्शन परम्पराओं को अब वाज़िब तौर पर साहित्य के रूप में और दर्शकों-श्रोताओं के रूप में बच्चों के होते हुए प्रदर्शन करने पर बाल साहित्य के रूप में मान्यता दी जाती है।

कक्षा में कहानियों के उपयोग और कहानियों को कहने के कई फ़ायदे हैं, जिसके कारण वे कथावना का एक अभिन्न अंग बन गई हैं। इनमें से कुछ फ़ायदे इस प्रकार हैं -

अपने और दुनिया के बारे में सीखना

कहानी सुनाने की प्रक्रिया में बच्चों को अन्दर और बाहर देखने, पात्रों और घटनाओं के प्रति सहानुभूति रखने का मौक़ा मिलता है। बच्चे पात्रों के कार्यों के पीछे की भावनाओं, प्रतिक्रियाओं, रुचियों और प्रेरणाओं के प्रति जागरूक हो जाते हैं और अपने जैसी तथा अलग संस्कृतियों और लोगों से परिचित होते हैं। बच्चों के लिए, कहानियाँ न केवल कल्पना के लिए एक स्प्रिंगबोर्ड के रूप में कार्य करती हैं, बल्कि उन्हें काल्पनिक दुनिया को वास्तविक दुनिया से जोड़ने में भी सक्षम बनाती हैं। कहानी सुनाने की गतिविधि उन्हें अपने लिए महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर सोचने और विचारने के लिए एक मंच प्रदान कर सकती है और मानवता के लिए सार्वभौमिक विषयों पर ध्यान देने में उनकी मदद कर सकती है। इन सबसे ऊपर, एक कक्षा में कहानी सुनाने की प्रक्रिया एक साझा सामाजिक अनुभव बनती है, जिससे बच्चों का सामाजिक-भावनात्मक विकास होता है जहाँ वे हँसते हैं, चिन्ता करते हैं, उत्साहित महसूस करते हैं, दुखी हो जाते हैं या एक समूह के रूप में एक साथ उम्मीद करते हैं और इस प्रक्रिया में एक बेहतर समुदाय का निर्माण करते हैं।

विचार करना सीखना

कहानी सुनाने की प्रक्रिया बच्चों को सुनने, योजना बनाने, परिकल्पना करने, अनुमान लगाने, पैटर्न की पहचान करने और ध्यान देने की युक्तियों को विकसित करने में मदद करती है। वे अर्थ बनाने के लिए परोक्ष रूप से दृश्य और श्रव्य संकेतों का और दुनिया व भाषा के बारे में अपने पूर्व ज्ञान का उपयोग करना शुरू कर देते है।

भाषा सीखना

कहानी सुनाने में भाषा के समान पैटर्नों का अनुभव और उनकी बार-बार पुनरावृत्ति बच्चों को एक मौखिक और कथात्मक संवाद से परिचित कराती है, जिससे मौखिक भाषा का विकास होता है, जो साक्षरता और भाषा कौशल के विकास के लिए बेहद महत्त्वपूर्ण है। शब्दावली, वाक्य संरचना, व्याकरण के नियम, उच्चारण, लय, सस्वर पाठ (intonation), बोध और विशेष सन्दर्भों में भाषा के उपयोग से भी बच्चों को परिचित कराकर इन पहलुओं को सुदृढ़ किया जा सकता है।

एक शैक्षणिक माध्यम के रूप में

कहानी सुनाने की गतिविधि गणित, विज्ञान, कला, प्रौद्योगिकी और सामाजिक विज्ञान की पाठ्यचर्या में विभिन्न अवधारणाओं को पेश करने और मज़बूत करने के लिए एक सन्दर्भ प्रदान कर सकती है, जिससे यह शिक्षकों के लिए एक बहुत ही उपयोगी शैक्षणिक माध्यम बन जाता है। यह पाया गया है कि कहानियाँ सुनना बच्चों और वयस्कों के लिए समान रूप से मज़ेदार और आनन्ददायक होता है। कहानी सुनाने की प्रक्रिया शिक्षकों को बच्चों की रुचियों और प्रेरणाओं के आधार पर कक्षा में उनकी भागीदारी और जुड़ाव की रणनीति बनाने का मौक़ा देती है। यह कक्षा में व्यक्तिगत असमानताओं, आवश्यकताओं और विविधता के लिए भी जगह बनाती है और शिक्षकों को इन पर प्रतिक्रिया देने में मदद करती है।

कक्षाओं में कहानी सुनाने की प्रक्रिया नदारद क्यों है?

कहानी सुनाने के शैक्षिक मूल्य के बावजूद, इसे अभी भी शिक्षकों के प्रतिरोध का सामना करना पड़ता है क्योंकि उनमें से कई बच्चों के जीवन और सीखने में इसके उपयोग के वास्तविक मूल्य से अनजान हैं। यदि वे इसके महत्त्व को समझते भी हैं, तो वे उन तरीक़ों की पहचान करने के लिए संघर्ष करते हैं जिनमें कहानी सुनाना उनकी कक्षाओं और सीखने-सिखाने का हिस्सा बन सकता है। यह संघर्ष किसी पाठ की

योजना बनाने, पाठ्यचर्या की समय-सीमाओं का प्रबन्धन करने या कहानी सुनाने के लिए ऐसी सही प्रकार की पुस्तकों और परम्पराओं की पहचान करने के आस-पास हो सकता है जो उम्र और सीखने के स्तर के लिए उपयुक्त हों। कुछ शिक्षक कहानियाँ सुनाने या उन्हें ज़ोर-से पढ़ने की अपनी क्षमताओं में विश्वास की कमी के कारण भी कहानी सुनाने से बचते हैं।

कथावना ने कैसे मदद की है

कथावना ने पेशेवर विकास कार्यशालाओं और संवादों के माध्यम से सेवारत और सेवा-पूर्व शिक्षकों के साथ लगातार काम किया है। सिद्धान्त-व्यवहार जुड़ाव का इस्तेमाल करते हुए, शिक्षकों को व्यवस्थित रूप से बाल साहित्य को कक्षा में लाने के तरीक़ों से परिचित कराया जाता है, विशेष रूप से कहानी सुनाने के द्वारा। शिक्षकों के लिए कुछ मुख्य निष्कर्ष इस प्रकार रहे हैं -

सीखना और बाल-केन्द्रित दृष्टिकोण

साहित्य के साथ बच्चों का जुड़ाव निष्क्रिय नहीं होना चाहिए, जहाँ कि शिक्षक कहानी सुनाते हैं, अनुवाद या सारांश द्वारा इसकी व्याख्या करते हैं और इसकी 'सीख' (moral) देते हैं। इसकी बजाय, बच्चों को अपने अर्थ बनाकर, अपनी व्याख्याओं, अनुमानों और भावनाओं को साझा करके और विभिन्न रचनात्मक तरीक़ों से प्रतिक्रिया देकर साहित्य के साथ सक्रिय रूप से जुड़ने की आवश्यकता है। ऐसा होने के लिए, शिक्षकों को ऐसी कहानियों का चयन करने की आवश्यकता है, जिनमें कई व्याख्याएँ और अर्थ हों, जो विषयों में समृद्ध हों, बच्चों के जीवन और अनुभवों के साथ जुड़ती हों, बच्चों के लिए प्रासंगिक हों, उनकी रुचियों और ज़रूरतों को ध्यान में रखती हों। शिक्षकों के लिए यह भी ज़रूरी है कि वे सीखने के आयु उपयुक्त व व्यक्तिगत स्तरों के लिए अवसर दें और सुनिश्चित करें कि सत्र संवादपूर्ण हों और बच्चों की सोच एवं कल्पना का स्वागत करते हों। उदाहरण के लिए, एक कहानी सत्र में, स्टोरीटेलर मैत्री वासुदेव ने ऊरी ओर्लेव की "ग्रैनी निट्स" (Granny Knits) को ज़ोर-से पढ़ा, जिसका अनुवाद ईश्वरचन्द्र ने हिब्रू से कन्नड़ा में किया था। उन्होंने बच्चों को कल्पना करने, कहानी को उनके जीवन से जोड़ने, सोचने, विचारने और उनके अर्थों के साथ प्रतिक्रिया करने के लिए कुछ इस तरह के प्रश्नों के साथ एक चर्चा सत्र आयोजित किया, जैसे कि 'अज्जी को कैसा लगा जब उनके पोते-पोतियों ने एक-दूसरे के ऊन के धागे निकाले? आपके माता-पिता/ दादा-दादी की क्या प्रतिक्रिया होती है, जब आप घर में कुछ तोड़ते हैं? कहानी में अज्जी की प्रतिक्रिया उनकी प्रतिक्रिया के समान थी या अलग थी? जब आपको ग़ुस्सा आता है तो आप क्या करते हैं? क्या आपका ग़ुस्सा अज्जी की तरह धीरे-धीरे, फूलते गुब्बारे की तरह बढ़ता है? या यह अचानक, एक फटते हुए गुब्बारे की तरह होता है?'

पाठ्यचर्या की अवधारणाओं का विस्तार और एकीकरण

कहानी सुनाने से अन्य गतिविधियाँ हो सकती हैं, विषयों का परिचय हो सकता है और अन्य पाठ्यचर्या क्षेत्रों में अवधारणाओं के शिक्षण में मदद मिल सकती है। स्टोरीटेलर वनिता ने एक कहानी प्रस्तुत की और इसका उपयोग, बच्चों को सहायक चित्रों के साथ एक एकॉर्डियन पुस्तक (accordion book) के रूप में अपनी कहानियाँ बनाने में मदद करने के लिए, एक प्रारम्भिक बिन्दु के रूप में किया। एक अन्य स्टोरीटेलर, प्रिया मुथुकुमार ने सामुदायिक सहायकों, विभिन्न क्षेत्रीय भोजन, प्रकृति और जानवरों के व्यवहार के विषयों के बारे में बात करने के लिए "हकीम्स हिकप्स" (Hakeem's Hiccups), "बिसिबलेबाथ पॉट" (Bisibelebath Pot) और "द कैट एंड द फ्लाई" (The Cat and the Fly) जैसी कहानियों का उपयोग किया।

बहुविध उपयोग

कहानी सुनाने का एक बहुविध पहलू (multimodal aspect) है, जिसमें भूमिका-निर्वाह, वस्तुओं (props) और नाटक का उपयोग किया जा सकता है। इसे हमेशा केवल अपने हाव-भाव और शरीर की भाषा पर बहुत अधिक निर्भर नहीं रहना पड़ता है। आवाज़ के उतार–चढ़ाव और भावाभिव्यक्तियों में वस्तुओं और अन्य सामग्रियों का सहयोग लिया जा सकता है। उदाहरण के लिए, कुछ स्टोरीटेलर (उमाशंकर पेरिओडि, गगन येयादी और अन्विता प्रकाश) ने कहानियाँ सुनाने के लिए अन्य वस्तुओं - दुपट्टे, फर्नीचर, संगीत वाद्ययंत्र आदि के साथ कठपुतली का उपयोग किया। इससे बच्चों को अपनी ख़ुद की कठपुतलियाँ बनाने और उनके माध्यम से सीधे कहानियाँ कहने या उन्हें नाटकों में वस्तुओं के रूप में उपयोग करने के लिए प्रोत्साहन मिला।

द्वि/ बहुभाषी कक्षाओं का निर्माण

शिक्षकों ने बहुभाषी कक्षाओं को एक वास्तविकता बनाने के तरीक़े खोजना शुरू कर दिया है। एक द्विभाषी आयोजन होने के नाते, कथावना दर्शाता है कि कैसे कन्नड़ा और अँग्रेज़ी निर्बाध रूप से बातचीत का हिस्सा बन सकती हैं। हमारे पास ऐसे विद्यार्थी और सन्दर्भ व्यक्ति रहे हैं जो दो से अधिक भाषाओं के साथ सहज हैं, जैसे कि कन्नड़ा के अलावा हिन्दी या उर्दू में अच्छी-ख़ासी मौखिक भाषा की प्रवीणता और अँग्रेज़ी में शुरुआती स्तर की प्रवीणता रखते हैं।

सत्रों के दौरान इनमें से किसी भी या सभी भाषाओं में बातचीत को प्रोत्साहित किया जाता है। उदाहरण के लिए, शुरुआत में

मैंने जो उदाहरण साझा किया, उसमें हमारी बहुभाषी क्षमताओं का इस्तेमाल हुआ, जहाँ विद्यार्थियों ने कहानी को ज़ोर-से पढ़ने के दौरान मेरे संवादात्मक सवालों के जवाब कन्नड़ा, अँग्रेज़ी और उर्दू के मिश्रण में दिए। हम हाव-भाव और अभिव्यक्तियों का उपयोग करके अर्थ समझने में समर्थ थे। शुद्धता, प्रवाह या सटीकता को महत्त्व नहीं दिया गया था, बल्कि बच्चों द्वारा अपनी भाषा पर बिना किसी प्रतिबन्ध के अपनी व्याख्याओं, भावनाओं और विचारों को साझा करने पर महत्त्व दिया गया था। भाषा की यांत्रिकी की बजाय, बच्चे, उनके विचार और उनकी भाषा केन्द्र में थी। एक अन्य स्टोरीटेलर, अश्रुति सेवेंत्रा ने प्रोजेक्टर पर कन्नड़ा में पुस्तक को प्रदर्शित करते हुए अँग्रेज़ी में ज़ोर-से पढ़कर कुछ ऐसा ही किया। आगे की गतिविधि के लिए विद्यार्थियों को कहानी के आधार पर चित्र बनाने की आवश्यकता थी। विद्यार्थियों ने न केवल चर्चा में उनके प्रश्नों के उत्तर देते समय, बल्कि उनके चित्रों को नाम देने में भी कई भाषाओं का उपयोग किया।

भाषा का विकास

विशिष्ट शब्दावली का उपयोग; उच्चारण और लय के उतार-चढ़ाव का अभ्यास करने के अवसर; और मौखिक भाषा का विकास (विशेष रूप से नाटकों और भूमिका निर्वाह के माध्यम से प्रस्तुति की भाषा) कहानी सुनाने के सत्रों के आस-पास बुने गए - सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने के भाषा कौशलों के विकास में मदद कर सकते हैं। इन्हें शामिल करने के कुछ तरीक़े हो सकते हैं - बच्चों को ख़ुद अपनी कहानी का अन्त बनाने, किसी कथानक के आधार पर कठपुतलियाँ बनाने और कहानी सुनने के बाद उसके कुछ हिस्सों को लिखने और अभिनय करने के लिए प्रोत्साहित करना।

स्थानीय परम्पराओं के साथ सम्बन्धों को खोजना

कथावना ने हमेशा हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत तथा मौखिक और प्रदर्शनशील साहित्य की परम्पराओं को महत्त्व दिया है। चूँकि यह कार्यक्रम कर्नाटक के सन्दर्भ में आयोजित किया जाता है, इसलिए प्रतिभागियों को यक्षगान को जानने का मौक़ा मिलता है और वे एक मौखिक और प्रदर्शन परम्परा के रूप में इसकी प्रासंगिकता को समझते हैं। शिक्षक यह पहचान पाए हैं कि कैसे रागिनी, हरिकथा, पट्टचित्र, ब्लावेली पाठन (blaveli reading), कावड, पावकथकली जैसी उनकी स्थानीय और सांस्कृतिक परम्पराओं को भी कक्षा में एक जायज़ उपस्थिति मिलनी चाहिए ताकि बच्चों को समुदाय और संस्कृति के साथ एक मज़बूत बन्धन बनाने और कक्षा के अन्दर और बाहर के अपने जीवन को जोड़ने में मदद मिल सके।

अन्त में

शिक्षकों के लिए कथावना की सबसे बड़ी उपलब्धि, यह स्वीकृति रही है कि बच्चे साहित्य के साथ जुड़ना पसन्द करते हैं। बच्चों ने पुस्तकों को गहराई से देखा है और संवादात्मक पठन-पाठन में प्रतिक्रिया करते हुए; नाटक, कठपुतली और यक्षगान के माध्यम से कहानियाँ सुनाते हुए; कविताएँ और कहानियाँ लिखते हुए; चित्रकारी और भूमिका निर्वाह करते हुए सक्रिय रूप से सत्रों में भाग लिया है।

बच्चों ने इन सत्रों के बाद भी इस कार्य को स्कूल या कक्षा के पुस्तकालय से क़िताबें लेकर जारी रखा। शिक्षकों को विद्यार्थियों की रुचि, भागीदारी और उनकी छिपी हुई प्रतिभा देखकर बहुत आश्चर्य हुआ। इससे उन्हें विद्यार्थियों की ज़रूरतों और क्षमताओं को पूरा करने के लिए अपनी शिक्षण सामग्री और गतिविधियों को व्यवस्थित करने और भाषा पाठ्यचर्या और कक्षा में साहित्य को लाने में मदद मिली।

बच्चों की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि और सांस्कृतिक स्थितियों की परवाह किए बिना, साहित्य तक उनकी पहुँच को मुमकिन बनाने के लिए, देश भर में विभिन्न भाषाओं में कथावना जैसे बाल साहित्य समारोहों की संख्या में वृद्धि करने की आवश्यकता है। यह आवश्यक है कि हम एक बच्चे के जीवन में बाल साहित्य और कहानी कहने की प्रासंगिकता को पहचानें और इन्हें भाषा पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र की रूपरेखा के अभिन्न अंग के रूप में शामिल करने के प्रयास करें।

चित्र-2-3 : *कथावना के दौरान पढ़ने और अन्य गतिविधियों में तल्लीन बच्चे।*

References

Azim Premji University. (2023). KathaVana: Annual bilingual children's literature festival. https://azimpremjiuniversity.edu.in/kathavana

Barone, D. M. (2011). Children's literature in the classroom. The Guilford Press

Bennett, S. V., Gunn, A. A. & Peterson, B. J. (2021). Access to multicultural children's literature during COVID-19. The Reading Teacher, 74(6), 785-796

Ellis, G. & Brewster J. (2014). Tell it again! The storytelling handbook for primary English language teachers. British Council

Huus, H. (1972). The role of literature in children's education. Educational Horizons, 50(3), 139-145

Williamson, P. M. (1981). Literature Goals and Activities for Young Children. Young Children, 36 (4), 24-30

सोनिका पाराशर अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु में शिक्षक-शिक्षिका हैं। वे भाषा शिक्षा तथा पाठ्यचर्या और शिक्षाशास्त्र के कोर्स पढ़ाती हैं। उन्हें सेवा-पूर्व शिक्षक-शिक्षा, पाठ्यचर्या विकास, शिक्षा में भाषा, बाल साहित्य, पाठ्यचर्या के विभिन्न क्षेत्रों के शिक्षाशास्त्र और उनके एकीकरण, शिक्षा में कला, विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकताओं वाले बच्चों को पढ़ाने और मार्गदर्शन तथा परामर्श देने का अनुभव और रुचि है। उनसे *sonika.parashar@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : जितेन्द्र 'जीत' **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

कहानियों के ज़रिए विज्ञान को मानवीय बनाना

वीना प्रसाद

एक शिक्षक को कक्षा में एक ही समय में विभिन्न प्रकार के व्यक्तित्वों से जूझना पड़ता है। ख़ासतौर से, एक विज्ञान कक्षा में अपनी अनूठी चुनौतियाँ होती हैं। कुछ बच्चों का झुकाव पहले से ही विज्ञान की ओर होता है और वे पाठ्यक्रम में उपलब्ध सभी ज्ञान को लेने के लिए उत्सुक होते हैं; कुछ का रुझान मानविकी की ओर ज़्यादा होता है और वे तथ्यों व आँकड़ों की अधिकता से आसानी से ऊब सकते हैं; कुछ लोग सीखने के लिए उत्सुक हो सकते हैं, लेकिन उन्हें जान पड़ता है कि उनका ध्यान आसानी से भटक जाता है; और कुछ अन्य लोग पहले ही अवधारणा व तथ्यों को सीख चुके होंगे और बस ऊब रहे होंगे।

एक विज्ञान लेखक के रूप में, मैंने पाया है कि किसी वैज्ञानिक अवधारणा के पीछे के विचार को समझाने के लिए और वैज्ञानिकों ने उसे कैसे खोजा उसका इतिहास बताने के लिए कहानियों का इस्तेमाल करना कहीं बेहतर अनुभव देता है - लेखक और पाठक दोनों को और इसका विस्तार करें तो, शिक्षक के साथ-साथ विद्यार्थी को भी। उदाहरण के लिए फॉस्फोरस की खोज को लीजिए। एक विज्ञान पाठ्यपुस्तक में आमतौर पर इसके आस-पास कुछ तथ्य होते हैं - इसका परमाणु क्रमांक, इसकी खोज कब और किसने की और इसके प्रमुख उपयोग और अभिक्रियाएँ। लेकिन इसकी खोज कैसे हुई इस कहानी पर विचार करें।

हेनिग ब्रांड नाम का एक कीमियागर, 'पारस पत्थर' की खोज में अपनी प्रयोगशाला में सोना बनाने की कोशिश में लगा हुआ था। कई बार असफल होने के बाद, उसके मन में यह विचित्र विचार आया कि अगर वह पेशाब को उबालता रहे तो वह सोने में बदल सकता है। (मैं सोचती हूँ कि क्या यह रंग की वजह से हुआ होगा)। उसने पेशाब के कई बर्तनों को लम्बे समय तक उबालने के लिए रखा, जब तक कि वह सारे तरल को वाष्पित करने और एक मोमी पदार्थ को अलग करने में कामयाब नहीं हो गया, जो हवा के सम्पर्क में आने पर सहसा आग पकड़ लेता था। यह फॉस्फोरस तत्व था (ग्रीक में इस शब्द का अर्थ 'प्रकाश लाने वाला' होता है) और हेनिग ब्रांड किसी तत्व की खोज करने वाले पहले व्यक्ति बने।

यह एक ऐसी कहानी है जो मुझे कई कारणों से पसन्द है। एक, किसी तत्व की अवधारणा पर आगे बढ़ने से पहले बच्चों का ध्यान खींचने का यह एक शानदार तरीक़ा है। वे पहले से ही जानने को उत्सुक होते हैं। वे सवालों से भरे होते हैं : *तत्व क्या होता है? कोई इसकी खोज कैसे करता है? वैज्ञानिक उन्हें अलग करने की तकनीकें कैसे जानते हैं? क्या ये तकनीकें किसी विशिष्ट तत्व को अलग करने के उद्देश्य से निकाली गई थीं? क्या खोजे जाने के बाद पृथक तत्व को उद्देश्य हासिल हो गया?* (फॉस्फोरस माचिस के आविष्कार में प्रमुख घटक था)।

दूसरा कारण यह है कि वैज्ञानिक या 'खोजकर्ता' एक व्यक्ति हो जाता है। एक व्यक्ति के पास किसी उद्देश्य को प्राप्त करने का विचार था, उसने उस पर विचार किया और आगे बढ़ने की एक दिशा तय की, अपने विचारों को क्रियान्वित करने के लिए एक प्रयोगशाला बनाई, प्रयोग किया, परिणामों की जाँच की, कुछ और प्रयोग किए, परिणामों के मुताबिक़ दिशा बदली और आख़िर में अपने मूल उद्देश्य से बिल्कुल अलग कुछ हासिल किया। यह विज्ञान का सार है - आप प्रयोग करते हैं, परिणामों को दर्ज करते हैं और उस रास्ते पर चलते हैं जिस पर परिणाम आपको ले जाता है। आपको अनपेक्षित परिणामों का सामना करना पड़ सकता है और आपकी शुरुआती धारणाएँ ग़लत साबित हो सकती हैं, फिर भी आप तथ्यों और सहज-ज्ञान से निर्देशित होकर दृढ़ निश्चय के साथ उस समस्या का हल ढूँढ़ने के लिए लगे रहते हैं।

वैज्ञानिकों को व्यक्तियों में बदलकर, हम उनके काम को विद्यार्थियों के लिए प्रासंगिक बनाते हैं। विद्यार्थी तथ्यों को वैसे का वैसा लेने की बजाय अवधारणा को समग्र तरीक़े से समझते हैं। वे वैज्ञानिक बनने के लिए भी प्रेरित हो सकते हैं! कम-से-कम, वे पेशाब वाले प्रयोग में 'शौचालय हास्य' पर हँसेंगे, जो वैसे एक ऐतिहासिक तथ्य है।

यह मुझे एक अलग प्रकार की विज्ञान की कहानी की ओर ले जाता है जिसका कोई ऐतिहासिक दस्तावेज़ नहीं है। ये उन खोजों से सम्बन्धित हैं जो इतने समय पहले की गई थीं कि कोई नहीं जानता कि वे कैसे हुईं। आग, पहिया, मिट्टी के बर्तन, बुनाई आदि इस श्रेणी में आते हैं।

काल्पनिक इतिहास

एक स्टोरीटेलर, के रूप में, मैं पुराने नवाचारों का दस्तावेज़ीकरण न किए जाने का फ़ायदा उठा सकती हूँ और खोज तक ले

जाने वाले पूरे घटनाक्रम को काल्पनिक बना सकती हूँ। मैं अपने ख़ुद के पात्र गढ़ने, उनसे संवाद बुलवाने, उन्हें दिलचस्प तरीक़ों से उनकी दुनिया के साथ बातचीत कराने की आज़ादी ले सकती हूँ जो आख़िरकार महत्त्वपूर्ण खोज की ओर ले जाता है।

हालाँकि, मैं इस तथ्य के प्रति भी सचेत हूँ कि ये खोजें कैसे की गई होंगी इसे लेकर वैज्ञानिकों ने परिकल्पनाएँ प्रस्तुत की हैं। ये परिकल्पनाएँ हमारी कहानी का आधार हो सकती हैं।

उदाहरण के लिए, यह शायद आकाशीय बिजली के कारण लगी आग थी जिसने शुरुआती इन्सानों को मोहित कर दिया और उन्हें इस ऊर्जा का पता लगाने और उसका दोहन करने के लिए प्रेरित किया। शिक्षक अपने विद्यार्थियों को ख़ुद को गुफा में रहने वाले ऐसे लोगों के रूप में कल्पना करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं जिन्होंने सबसे पहले आग का सामना किया था। *उनकी प्रतिक्रिया कैसी होगी? क्या वे भयभीत होंगे? रोमांचित होंगे? वे जंगल में जलते अंगारे के पास कैसे जाएँगे? क्या वे इसे छुएँगे? क्या वे समझेंगे कि यह उन्हें जला सकता है? उन्हें कब एहसास हुआ कि जानवर आग से डरते हैं और ख़ुद को सुरक्षित रखने के लिए इसका इस्तेमाल किया जा सकता है? और यह एहसास होने पर, उन्होंने आग पर क़ाबू पाने और उसे सुरक्षित रूप से जलाने की कोशिश कैसे की? क्या ग़लतियों से सीखते हुए कोशिश करने की कोई प्रक्रिया थी?* इसके बाद, शिक्षक उन्हें 'अग्नि त्रिकोण' (ऑक्सीजन, ईंधन और एक चिंगारी) आग को जलाने और उसे जलाए रखने के लिए आवश्यक तीन घटकों के बारे में बता सकते हैं। इनमें से किसी एक को भी हटा देने पर आग बुझ जाएगी।

यहाँ इस बात पर ध्यान दिया जा सकता है कि पारम्परिक शिक्षण आमतौर पर अग्नि त्रिकोण से शुरू होता है और यह मुमकिन है कि विद्यार्थी अपनी मौलिकता में अद्वितीय रूप से मानवीय इस खोज के विस्मय और इसकी महत्ता को पूरी तरह से समझे बिना, इसे याद कर लें।

कहानी की ताक़त

आपने देखा होगा कि चर्चा किए गए प्रत्येक उदाहरण में कहानी के विचार को दो तरीक़ों से प्रस्तुत किया गया है। पहले उदाहरण में, फॉस्फोरस की खोज के पीछे की कहानी विद्यार्थियों को सुनाई गई है, जबकि दूसरे में, बच्चों को आग के साथ मानवता के पहले अनुभव के परिदृश्य की कल्पना करने और अपनी कहानियाँ बनाने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। दोनों, विद्यार्थियों के दिमाग़ को खोलने और उनकी जिज्ञासा को जगाने के उद्देश्य को पूरा करते हैं। प्रभाव कहानी कैसी बुनी गई है उससे आता है।

किसी कहानी के दो प्रमुख तत्व हैं, परिवेश और चरित्र-चित्रण। परिवेश यानी वह जगह जहाँ कहानी घटित होती है। फॉस्फोरस की कहानी में, परिवेश प्रयोगशाला है। चरित्र-चित्रण का मतलब कहानी में भूमिका निभाने वाले लोगों, उनकी प्रेरणाओं और व्यक्तित्वों से है। उदाहरण के लिए, हेनिग ब्रांड एक ऐसा क़िरदार है जिसे हास्यपूर्ण लेकिन दृढ़निश्चयी व्यक्ति के रूप में चित्रित किया जा सकता है। आग की खोज की कहानी में, जो इन्सान सबसे पहले आग को छूने की कोशिश करता है उसे बहादुर चित्रित किया जा सकता है और जो उस अनुभव से सीखता है उसे बुद्धिमान।

समुद्री ज्वार-भाटे की अवधारणा को पेश करने के लिए समुद्र तट की यात्रा कहानी के लिए एक अच्छा परिवेश बन सकती है। समुद्र तट पर खेल रहे तेज़-नज़र बच्चों का एक समूह कहानी के पात्र हैं। जैसे ही सूरज ढलने वाला होता है, बच्चे देखते हैं कि लहरें किनारे की ओर आगे बढ़ती आ रही हैं और उन जगहों को भी छू रही हैं जो पहले सूखी थीं। उनके माँ-पापा उन्हें पीछे हटने और सुरक्षित रूप से खेलने के लिए कह रहे हैं। अगली सुबह वे फिर से बाहर निकल सकते हैं जब समुद्र वापस पीछे को चला जाएगा। लहरें आगे तक क्यों आ रही हैं? और कुछ घण्टों के बाद पीछे क्यों हट जाती हैं?

समुद्री जल से नमक कैसे बनाया जाता है, यह समझाने के लिए रसायन विज्ञान की कक्षा में समुद्र तट के उसी परिवेश का इस्तेमाल किया जा सकता है। भौतिकी की कक्षा में ऊँचाई और समुद्र तल के बारे में बात करने के लिए आप फिर से वहाँ जा सकते हैं और जीवविज्ञान की कक्षा में समुद्री क्रस्टेशियनों का परिचय कराने के लिए एक बार और जा सकते हैं। कहानी में बच्चों द्वारा किए गए अवलोकनों और वयस्कों द्वारा दी गई जानकारी या चेतावनियों को बार-बार इस्तेमाल किया जा सकता है और इससे वे सोच-विचार करना शुरू कर देते हैं। एक परिचित दृश्य बनाकर और उनका ध्यान किसी परिचित घटना की ओर आकर्षित करके, हम उनकी जिज्ञासा को जगाते हैं। हम उनके विचारों को इस दिशा में पक्का करते हैं कि - 'इस घटना का एक कारण है। इसके पीछे एक विज्ञान है।'

फिर शिक्षक उस विज्ञान अवधारणा को बताना शुरू करके इस जोश को आगे ले जा सकते हैं। अध्याय पूरा हुआ!

कहानी के तरीक़े को पूरे साल जारी रखने से एक अतिरिक्त फ़ायदा हो सकता है - हर बार जब कक्षा ऊबने या विचलित होने लगे, तो शिक्षक उस कहानी को एक अलग परिवेश में इस्तेमाल कर सकते हैं और बच्चों का जुड़ाव वापस हासिल कर सकते हैं।

कहानी कहने का सूत्र

नीचे कहानी कहने की कुछ तकनीकें दी गई हैं जो शिक्षकों को जल्दी से कहानियाँ बनाने में मदद करेंगी। इसके अलावा,

इस लेख के आख़िर में कुछ स्रोत दिए गए हैं जहाँ से कहानियाँ जुटाई जा सकती हैं।

1. आपको एक मुख्य पात्र (नायक) और वैकल्पिक रूप से, कुछ सहायक पात्रों की आवश्यकता होगी (इसे दो तक सीमित रखें)।
2. अपनी कहानी की शुरुआत, मध्य और अन्त को परिभाषित करें।

   क. शुरुआत निम्नलिखित में से किसी एक से होगी :

      I. नायक के सामने एक समस्या

      II. नायक द्वारा देखी गई एक अजीब प्राकृतिक घटना जिसके बारे में वह सोचने लगता है

   ख. मध्य इनमें से कुछ हो सकता है :

      I. नायक समस्या को सुलझाने का प्रयास कर रहा है

      II. नायक अजीब घटना की व्याख्याओं के बारे में सोच रहा है; इसमें प्रयोग और उभरते विचार भी शामिल हो सकते हैं

   ग. अन्त एक समाधान खोजने के बारे में हो सकता है - यह या तो मूल समस्या के लिए हो सकता है या कुछ बिल्कुल अलग, लेकिन फिर भी नया और रोमांचक।

बेशक, हर उस अवधारणा को प्रस्तुत करने से पहले कहानियाँ बताना व्यावहारिक नहीं है, जो हमें सिखानी होती है। एक सन्तुलन बनाना ज़रूरी है। हम शायद पाठ्यपुस्तक में से एक महत्त्वपूर्ण अध्याय की शुरुआत करने के लिए एक कहानी सुना सकते हैं और एक बार बच्चों का ध्यान आकर्षित करने के बाद, इस गतिशीलता को अगली अवधारणा तक ले जा सकते हैं। कुछ कक्षाओं के बाद, कक्षा को फिर से जोश दिलाने के लिए हम एक और कहानी पेश कर सकते हैं। हम विभिन्न अवधारणाओं के अनुरूप एक ही कहानी को थोड़े अलग कथानकों के साथ भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

संक्षेप में, विज्ञान शिक्षण में कहानी सुनाने का नज़रिया निम्नलिखित तरीक़ों से फ़ायदेमन्द होता है :

- याद करने और याद रखने में मदद करता है
- विद्यार्थियों को तथ्यों को ज़्यादा अर्थपूर्ण ढंग से जोड़ने में मदद करता है
- सिद्धान्त और वास्तविकता के बीच की खाई को पाटता है
- कल्पना को साथ लेकर मौलिक सोच को बढ़ावा देता है
- शायद भविष्य के वैज्ञानिक में चिंगारी भड़का दे!

Endnotes

i These have been explored in *The Spark That Changed Everything* by the author.

वीना प्रसाद क्राउडएनालिटिक्स (CrowdANALYTIX) में विषयवस्तु और संचार निदेशक हैं। वे मुख्य रूप से STEM लेखिका हैं। पर उन्होंने कथा साहित्य, जीवनियाँ और यहाँ तक कि कभी-कभार गीत के बोल लिखने में भी हाथ आज़माया है। उन्हें जटिल विषयों से जूझना और उनके बारे में सरल और स्पष्ट गद्य में लिखना अच्छा लगता है। उनकी किताब, द *स्पार्क दैट चेंज्ड एवरीथिंग,* विज्ञान और इतिहास को जीवन्त बनाने के लिए तथ्य और कल्पना को जोड़ती है। वीना के पास कंप्यूटर साइंस इंजीनियरिंग में स्नातक की डिग्री और अँग्रेज़ी साहित्य में स्नातकोत्तर डिग्री है। उनसे *veena.rp@gmail.com* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : सीमा **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी लर्निंग कर्व के पुराने अँग्रेज़ी अंक
https://azimpremjiuniversity.edu.in/learning-curve से डाउनलोड किए जा सकते हैं।

पत्रिका के हिन्दी और कन्नड़ा अंक या उनके लेख
https://anuvadasampada.azimpremjiuniversity.edu.in/ पर उपलब्ध हैं।

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी लर्निंग कर्व पत्रिका की प्रति सब्सक्राइब/प्राप्त करने के लिए आगे दी गई लिंक पर दिए गए फार्म को भरकर भेजें :
https://bit.ly/3SS3kNG

अपने सुझाव, टिप्पणियाँ,मत और अनुभव हमें इस ईमेल पते पर भेज सकते हैं :
learningcurve@apu.edu.in

मुद्रक तथा प्रकाशक मनोज पी. द्वारा अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन फॉर डेवलपमेंट के लिए
आदर्श प्रा.लि., 4 शिखरवार्ता,प्रेस काम्पलेक्स, जोन-1,एम.पी.नगर, भोपाल 462 011 से मुद्रित

एवं अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, सर्वे नम्बर 66,बुरुगुंटे विलेज,बिक्कनाहल्ली मेन रोड, सरजापुरा,बेंगलूरु,कर्नाटक - 562 125 से प्रकाशित
मुख्य सम्पादक : प्रेमा रघुनाथ

Azim Premji University

Anuvada Sampada

अनुवाद सम्पदा

अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय की अनुवाद रिपॉज़ेटरी

अवधारणाओं तथा विचारों के साथ गहराई से जुड़ने हेतु विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए भारतीय भाषाओं में उच्च गुणवत्ता के 2000 से अधिक शैक्षणिक संसाधनों का भण्डार।

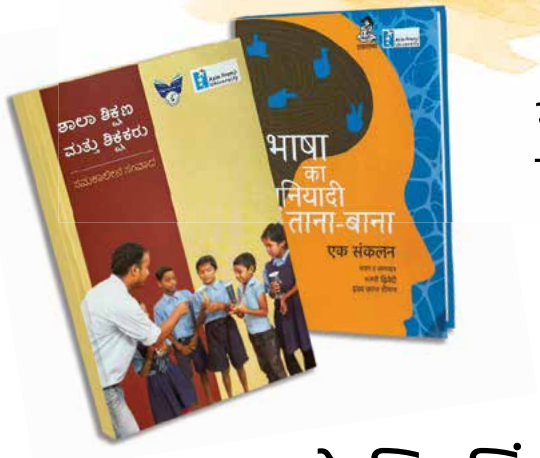

भारतीय भाषाओं में शैक्षणिक संसाधनों के लिए निशुल्क, ओपन-एक्सेस पोर्टल

- पुस्तकें और पुस्तक अंश
- अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के प्रकाशनों से लेख
- विभिन्न संगोष्ठियों और रीडरों से चुनिन्दा लेख

अनुवाद सम्पदा के लिए लिंक :
https://anuvadasampada.azimpremjiuniversity.edu.in/

Faculty Positions

Azim Premji University

Understanding children and their development is critical to Education Practice.

APPLY NOW

We invite applications for faculty positions in **Child Development & Learning** for our **M.A. in Education** programme

Azim Premji University, Bhopal

To know more, visit https://azimpremjiuniversity.edu.in/jobs/faculty-positions-in-education

अगला अंक

सीखने का सुदृढ़ीकरण

Azim Premji University
Survey No. 66, Burugunte Village
Bikkanahalli Main Road, Sarjapura
Bengaluru 562125, Karnataka

080-6614 4900
www.azimpremjiuniversity.edu.in

Facebook: /azimpremjiuniversity
Instagram: @azimpremjiuniv
Twitter: @azimpremjiuniv